पेंटिंग

(माध्यमिक स्तर)

थ्योरी

1

अभिकल्पन एवं निर्माण

संचिता भट्टाचार्जी

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

ए-24-25 इंस्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर-62, नौएडा

© राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

प्रथम प्रकाशन : जनवरी 2010 (5,000 प्रतियाँ)

सचिव, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, ए-24/25, इंस्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर-62, नोएडा द्वारा प्रकाशित तथा मैसर्स नूतन प्रिन्टर्स, F-89/12, ओखला इंड. एरिया फेस-I, नई दिल्ली-110020 द्वारा मुद्रित।

आभार

सलाहकार समिति

- डॉ. सितांशु शेखर जेना
  अध्यक्ष
  रा.मु.वि.शि.सं., नोएडा
- डॉ. अनिता प्रियदर्शिनी
  निदेशक (शैक्षिक)
  रा.मु.वि.शि.सं., नोएडा
- श्रीमती गोपा विश्वास
  उप–निदेशक (शैक्षिक)
  रा.मु.वि.शि.सं., नोएडा

पाठ्यक्रम समिति

- प्रो. के. एम. चौधुरी *(अध्यक्ष)*
  सेवानिव त प्रोफेसर
  कॉलेज ऑफ आर्ट, नई दिल्ली
- श्रीमती बी.एम. चौधुरी
  विजिटिंग लेक्चरार
  मयूर विहार, नई दिल्ली
- श्रीमती सुस्मिता दास पाल
  आर्ट एजुकेशनिष्ट
  नई दिल्ली
- डॉ. सुनील कुमार
  रीडर
  एनसीईआरटी, नई दिल्ली
- श्री विनोद कुमार
  कला शिक्षक
  दिल्ली पब्लिक स्कुल, मथुरा रोड़, नई दिल्ली
- प्रो. चारु गुप्ता
  उप निदेशक
  क्रॉफ्ट म्युजियम, नई दिल्ली
- श्री सुमिताभ पाल
  रीडर
  शांति निकेतन, पश्चिम बंगाल
- श्री के.ए. सुबन्ना
  वरिष्ठ कला शिक्षक
  दिल्ली कन्नड़ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, नई दिल्ली
- श्रीमती संचिता भट्टाचार्य
  पाठ्यक्रम समन्वयक,
  रा.मु.वि.शि.सं.

पाठ लेखक

- श्रीमती बी.एम. चौधुरी
  विजिटिंग लेक्चरार
  मयूर विहार, नई दिल्ली
- श्रीमती सुस्मिता दास पाल
  आर्ट एजुकेशनिष्ट, नई दिल्ली
- डॉ. बिंदुलिका शर्मा
  रीडर
  जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली
- श्रीमती सुमिता चौहान
  आर्ट एजुकेशनिष्ट, नई दिल्ली

सम्पादक

- प्रो. के.एम. चौधुरी
  सेवानिव त प्रोफेसर
  कॉलेज ऑफ आर्ट, नई दिल्ली
- श्रीमती संचिता भट्टाचार्य
  पाठ्यक्रम समन्वयक, रा.मु.वि.शि.सं.
- श्री दिनेश थपलीयाल
  सेवानिव त अधिकारी
  एनसीईआरटी, नई दिल्ली

अनुवाद

- श्री एस.के. गांगल
  सेवानिव त शिक्षा अधिकारी
  सी.बी.एस.ई., नई दिल्ली

अध्यक्ष का संदेश.....

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (एनआईओएस) अपने विद्यार्थियों के लिए अनेक पाठ्यक्रम चलाता है। अब इसने माध्यमिक स्तर पर चित्रकला में एक नया पाठ्यक्रम विकसित करने की पहल की है। चित्रकला एक ऐसी कला है जो दूसरों से जुड़ने के लिए स्वाभाविक रूप से हृदय से प्रकट होती है। मनुष्य अपनी भावनाओं और विचारों को प्रस्तुत करने के लिए एक या दूसरे माध्यमों को अपनाता है। चित्रकला, संगीत, नृत्य, अभिनय सीखने से व्यक्ति का बेहतर समाजीकरण होता है, वह आत्मविश्वासी बनता है।

ऐसा माना जाता है कि कला के ये रूप ज्ञानात्मक एवं संप्रेषणात्मक कौशल बढ़ाने, समन्वय स्थापित करने तथा विद्यार्थी की अभिव्यक्ति, मौलिकता तथा रचनात्मकता को विकसित करने में मदद करते हैं।

चित्रकला के इस पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थी की चित्रकला के दृश्य पक्षों के बारे में सौन्दर्यवादी दृष्टि कौशल, ज्ञान तथा समझ को बढ़ाना तथा उसके व्यक्तित्व को समृद्ध करना है। इस पाठ्यक्रम के माधयम से विद्यार्थी चित्रकला के द्वारा अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए विभिन्न रूपों एवं रंगों का प्रयोग कर पायेंगे।

मैं उन सभी लोगों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस पाठ्यक्रम के निर्माण में सहयोग दिया। इस पुस्तक की उपयोगिता का आकलन मुख्यत: इसका उपयोग करनेवाले एनआईओएस के विद्यार्थी करेंगे। उनके विचार एवं सुझाव एनआईओएस के लिए उपयोगी होंगे और भविष्य में संशोधित रूप में प्रस्तुत करने में सहायक होंगे।

शुभकामनाओं सहित,

डॉ. सितांशु शेखर जेना
अध्यक्ष, एनआईओएस

निदेशक (शैक्षिक) की ओर से.....

प्रिय विद्यार्थी,

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (एनआईओएस) ने माध्यमिक स्तर पर चित्रकला की शुरूआत की है। पाठ्यक्रम के लिए अधययन सामग्री मॉड्यूल रूप में स्व-अध्ययन विधा में तैयार की गई है। आपको मॉड्यूल बहुत रोचक और आकर्षक लगेंगे। आपके ज्ञान को बढ़ाएँगे।

- *भारतीय कला, पाश्चात्य कला और समकालीन कला पर आधाारित मॉड्यूल:-*

भारतीय कला पर आधारित मॉड्यूल में आप प्राय: पूर्व ऐतिहासिक काल से आधुनिक काल तक भारतीय कला और शिल्प के क्रमश विकास के बारे में जानेंगे। इस काल के दौरान नए शिल्प में चित्रकला, भवन निर्माण कला और मूर्तिकला का अत्याधिक विकास हुआ। यह पाठ्यक्रम आपको पाश्चात्य कला से परिचित कराएगा जहाँ चित्रकला में वैज्ञानिकता और अनुभव का प्रयोग किया गया है। समकालीन कला पाश्चात्य तकनीक और भारतीय अध्यात्मवाद के मिश्रण को भारतीय कला के सार तत्व के रूप में प्रस्तुत किया है। आप सशक्त सैद्धांतिक पृष्ठभूमि के साथ-साथ प्रायोगिक कौशल प्राप्त करेंगे और रंगों, ब्रशों और पेंसिलों से खेलने के अवसर का आनंद लेंगे।

प्रयोग से संबंधित मॉड्यूल में आप जीवन के विभिन्न प्राकृतिक वस्तुओं के चित्रांकन और संयोजन के लिए सौंदर्यबोध विकसित करेंगे।

यह पाठ्यक्रम आप जैसे विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी होगा जिन्होंने मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा विधा को चुना है। यह आपके सुविधाजनक समय और स्थान पर चित्रकला सीखने के अवसर प्रदान करेगा। मुझे प्रसन्नता है कि आपने एनआईओएस में प्रवेश लिया और चित्रकला सीखने का निर्णय लिया। हम आशा करते हैं कि यह पाठ्यक्रम आपको सौंदर्य की प्रशंसा करने का भाव उत्पन्न करने में सहायता करेगा।

हम पाठ्यक्रम को और अधिक बेहतर बनाने के लिए सुझाव का स्वागत करते हैं।

शुभकामनाओं के साथ,

अनिता प्रियदर्शिनी
निदेशक (शैक्षिक)

दो शब्द.....

प्रिय विद्यार्थी,

मैं आशा करती हूँ कि आपको अध्ययन में आनंद आ रहा है। सबसे पहले, मैं इस पाठ्यक्रम में आपका स्वागत करती हूँ। चित्रकला एक अत्यंत रोचक माधयम है जिससे व्यक्ति रंगों के माध्यम से खुद को अभिव्यक्त करने में, रेखाओं, बनावट और लय के भाव को समझने में सहायता मिलती है। इस पाठ्यक्रम को पूरा करने पर आप अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए बहुत सी वस्तुएँ बना सकते हैं और विभिन्न रूप देकर डिजाइन बना सकते हैं। यह पाठ्यक्रम आपको चित्रकला के विभिन्न पहलुओं और तकनीकों, जैसे परिप्रेक्ष्य, समानुपात, रंगों, उपयुक्त प्रकाश और छाया के प्रयोग को सीखने का अवसर प्रदान करेगा।

यह पाठ्यक्रम दो भागों में बँटा है– सिद्धांत और प्रयोग। परीक्षा के उद्देश्य से सिद्धांत के लिए 30 अंक हैं, प्रयोग के लिए 70 अंक हैं। हमने विषय अध्ययन सामग्री तैयार की है जो आपको प्रयोग संबंधी दिशा-निर्देश देगी।

मैं आशा करती हूँ कि आपको चित्रकला पढ़ना रोचक लगेगा। यदि आपके पास कोई सुझाव है, तो कृपया मुझे बताएँ क्योंकि आपके विचार हमारे लिए बहुत मूल्यवान हैं और आपके सुझावों पर विचार करते हुए हम इस पाठ्यक्रम को और बेहतर बनाने की कोशिश करेंगे।

शुभकामनाओं सहित,

संचिता भट्टाचार्य
पाठ्यक्रम समन्वयक

अपने पाठ कैसे पढ़ें !

पेंटिंग (थ्योरी) की इस पाठ्य सामग्री को विशेषरूप से आपकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए निर्मित किया गया है। आप स्वतंत्र रूप से स्वयं पढ़ सकें अतः इसे एक प्रारूप में ढाला गया है। निम्नलिखित संकेत आपको सामग्री का सर्वोत्तम उपयोग करने का तरीका बताएंगे। दिए गए पाठों को कैसे पढ़ना है आइए जानें–

पाठ का शीर्षक : इसे पढ़ते ही आप अनुमान लगा सकते है कि पाठ में क्या दिया जा रहा है। इसे पढ़िए।

भूमिका : यह भाग आपको पूर्व जानकारी से जोड़ेगा और दिए गए पाठ की सामग्री से परिचित कराएगा। इसे ध्यानपूर्वक पढ़िए।

उद्देश्य : प्रस्तुत पाठ को पढ़ने के बाद आप इस पाठ के उद्देश्यों को प्राप्त करने में समर्थ हो जाएंगे। इन्हें याद कर लीजिए।

क्रियाकलाप : पाठ में स्थान-स्थान पर कुछ क्रियाकलाप दिए जा रहे हैं जिन्हे आप सरलता से कर पाएँगे। ये आपको बेहतर ढंग से पाठ के बिंदु समझने में मदद करेंगे।

मूल पाठ/विषय सामग्री : पाठ की संपूर्ण सामग्री को कई अंशों में विभाजित किया गया है जिससे कि आप एक-एक कर इन्हें पढ़ें और दक्षता पाते चलें। इन्हें आप ठीक तरह से समझें।

संपूर्ण पाठ्य-सामग्री को ध्यानपूर्वक पढ़ें और जहाँ जरूरत समझें पन्ने के हाशिए में दिए गए स्थान पर टिप्पणियाँ भी लिखते चलें। एक-एक इकाई को पूरा पढ़ और समझ लेने के बाद पाठ के बीच-बीच में दिए गए पाठगत प्रश्नों को हल करने का प्रयास करें।

पाठ में कहीं–कहीं पर आपको चीज़ें ***मोटे*** या ***टेड़े अक्षरों*** में या **डिब्बों** में लिखी मिलेंगी। उन्हें आप अच्छी तरह से अपनी स्मृति में सँजोकर रखिए जिससे उन्हें समय पड़ने पर काम में लाया जा सके।

पाठगत प्रश्न : इसमें एक शब्द अथवा एक वाक्य में पूछे गए प्रश्न हैं तथा कुछ वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं। ये प्रश्न पढ़ी हुई इकाई पर आधारित हैं इनका उत्तर आपको देते चलना है। इसी से आपकी प्रगति की जाँच होगी। ये सवाल हल करते समय आप हाथ में पेंसिल रखिए और जल्दी-जल्दी सवालों के समाधान ढूँढ़ते चलिए और अपने उत्तरों की जाँच पाठ के अंत में दी गई उत्तरमाला से मिलाइए। उत्तर ठीक न होने पर इकाई को पुनः पढ़िए।

आपने क्या सीखा : यह पूरे पाठ का संक्षिप्त रूप है–कहीं यह बिंदुओं के रूप में है, कहीं आरेख के रूप में तो कहीं प्रवाह चार्ट के रूप में। इन मुख्य बिंदुओं का स्मरण कीजिए। यदि आप कुछ अपने मतलब की मिलती-जुलती नई बातें जोड़ना चाहते हैं तो उन्हें भी वहीं बढ़ा सकते हैं।

योग्यता विस्तार : प्रत्येक पाठ का यह अंश उन विद्यार्थियों के लिए है जो पाठ से संबंधित अन्य इतर ज्ञान प्राप्त करने के जिज्ञासु रहते हैं। उनकी प्यास बुझाने के लिए हम कुछ अन्य जानकारियाँ और स्रोत बताते हैं।

पाठांत प्रश्न : पाठ के अंत में दिए गए लघु उत्तरीय तथा विस्तृत उत्तरीय प्रश्न हैं। इन्हें आप अलग पन्नों पर लिख कर अभ्यास कीजिए यदि चाहें तो अध्ययन केंद्र पर अपने शिक्षक या किसी उचित व्यक्ति को दिखा भी सकते हैं और उन पर नए विचार ले सकते हैं।

उत्तरमाला : आपको पहले ही बताया जा चुका है इसमें पाठगत प्रश्नों और क्रियाकलापों के उत्तर दिए जाते हैं। अपने उत्तरों की जाँच इस सूची से कीजिए।

अभ्यास प्रश्न पत्र : यह पुस्तक के अंत में दिया गया नमूने का प्रश्न पत्र है जो पूरी पुस्तक की पाठ्य-सामग्री के आधार पर तैयार किया गया है। इसे हल कर आप अध्ययन केंद्र पर अपने शिक्षक से इसकी जाँच करवाइए और उचित दिशा निर्देश प्राप्त कीजिए।

पाठ्य सामग्री : विहंगम दृष्टि में

1

थ्योरी

मॉड्यूल - 1

भारतीय कला की भूमिका

1. 3000 ई.पू. से 600 ईस्वी तक कला का इतिहास तथा मूल्यांकन
2. सातवीं से बारहवीं शताब्दी तक कला का इतिहास तथा मूल्यांकन
3. 12वीं शती (AD) से 18वीं शती (AD) तक कला का इतिहास तथा मूल्यांकन
4. भारत की लोककला

मॉड्यूल - 2

पाश्चात्य कला की भूमिका

5. पुनर्जागरण (नवजागरण)
6. प्रभाववाद
7. घनवाद, अतियथार्थवाद तथा अमूर्त कला

मॉड्यूल - 3

समकालीन भारतीय कला की भूमिका

8. समकालीन भारतीय कला के पुरोगामी कलाकार
9. समकालीन भारतीय कला

2

प्रयोगात्मक

1. वस्तु–चित्रण
2. प्रकृति चित्रण
3. मानव व पशु आकृतियाँ
4. संयोजन

3

प्रयोगात्मक संदर्शिका

1. उपकरण और सामग्री
2. वस्तु चित्रण
3. प्रकृति चित्रण
4. मानव आकृति
5. पशु और पक्षियों का चित्रण
6. संयोजन

विषय-सूची

क्र.सं.	पाठ का नाम	पेज सं.
1.	3000 ई.पू. से 600 ईस्वी तक कला का इतिहास तथा मूल्यांकन	1
2.	सातवीं से बारहवीं शताब्दी तक कला का इतिहास तथा मूल्यांकन	11
3.	12वीं शती (AD) से 18वीं शती (AD) तक कला का इतिहास तथा मूल्यांकन	21
4.	भारत की लोककला	30
5.	पुनर्जागरण (नवजागरण)	39
6.	प्रभाववाद	49
7.	घनवाद, अतियथार्थवाद तथा अमूर्त कला	62
8.	समकालीन भारतीय कला के पुरोगामी कलाकार	71
9.	समकालीन भारतीय कला	81
10.	पाठ्यक्रम	93
11.	नमूना प्रश्न पत्र	105

टिप्पणी

1

3000 ई.पू. से 600 ईस्वी तक कला का इतिहास तथा मूल्यांकन

2500 ई.पू. से 1750 ई.पू. तक (सिन्धुघाटी सभ्यता से मौर्य वंशावली तक) कला एवं हस्तकला की धीरे–धीरे प्रगति होती रही है। हड़प्पन युग में उच्च कोटि के कलाकार थे। मौर्य युग के कलाकारों ने भारतीय कला के इतिहास में एक नये युग का सूत्रपात किया था। अशोक युग में कला के उच्च स्तरीय नमूने के स्तम्भ भारतीय कला की विशाल धरोहर हैं। उस युग में तकनीकी द ष्टि से उच्च स्तरीय कला के साथ–साथ आम व्यक्ति द्वारा अभिव्यक्ति की प्रथा एवं कला की अभिव्यक्ति के नमूने देवी की विभिन्न मूर्तियों के रूप में उपलब्ध हैं। मौर्य वंशीय राजाओं के उपरान्त जब सांगा वंशियों ने राजकीय शक्ति ग्रहण की तो उसी वास्तुकला के सर्वोत्तम उदाहरण मध्य प्रदेश स्थित **सांची** में देखने को मिलते हैं। देश के बाहर से आए हुए कुषाण शासकों ने कला की प्रगति में बड़ा सहयोग दिया। इसी युग में पहली बार वास्तुकला में प्रतिमाओं के निर्माण कार्य की प्रगति देखी गई। भारतीय कला के इतिहास में गुप्तकालीन युग को **'स्वर्ण युग'** कहा जाता है। इसी युग में मानवीय आकृतियों के प्रस्तुतीकरण में सुधार हुआ। मथुरा, सारनाथ, उज्जैन, अहिछत्र तथा कुछ अन्य नगर इस युग (गुप्तकालीन युग) में कला के मुख्य कला–केन्द्रों के रूप में जाने जाते थे। गुप्तकालीन वास्तुकला के नमूनों में कला, निपुणता, पूर्णता तथा कल्पना की शक्ति का अपूर्व मिश्रण देखने को मिलता है।

धार्मिक कलाओं में दैवीय गुण देखने को मिलते हैं। गुप्तकालीन कला के प्रमुख गुणों में होंठों का थोड़ा–सा टेढ़ापन, मूर्ति की आकृति में गोलाई, लकड़ी पर की गई खुदाई तथा सरलता प्रमुख हैं, जो उस युग की विशेष पहचान बन गईं। धार्मिक मूर्तियों के साथ–साथ धर्मनिरपेक्ष कलाकृतियाँ भी काफी संख्या में बनाई गईं। इसी युग में **अजंता** के प्रसिद्ध चित्र बनाए गए थे। चित्रों तथा मूर्तियों के अतिरिक्त गुफाओं तथा मन्दिर वास्तुकला में काफी उन्नति हुई जो मध्य प्रदेश की उदयगिरि गुफाओं तथा नाचना व भूमरा में देखने को मिलती हैं। वस्तुतः गुफाओं तथा मन्दिर वास्तुकला का प्रारम्भ एवं उत्थान इसी काल में देखने को मिलता है। संक्षेप में, गुप्तकाल भारतीय इतिहास का प्रतिष्ठित युग माना जाता है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद, आप :

- 3000 ई.पू. से 600 ईस्वी के दौरान कला के इतिहास का वर्णन कर सकेंगे;
- इस युग में कला के नमूनों तथा अन्य उदाहरणों का विवरण दे सकेंगे;

न त्य करती हुई लड़की

टिप्पणी

- कलाकारों द्वारा प्रयुक्त सामान, आकार, विभिन्न रंग एवं स्थानों को सम्मिलित करके कलाकृतियों के प्रकारों की सूची बना सकेंगे;
- इस युग में निर्मित कलाकृतियों को स्पष्ट रूप से उनके नाम से पहचान सकेंगे;
- इस युग में बनी कलाकृतियों और उनकी विशेषताओं को पहचान कर उनमें अंतर बता सकेंगे।

1.1 न त्यांगना/न त्य करती हुई लड़की

शीर्षक	:	न त्यांगना
माध्यम	:	मैटल (धातु)
समय (युग)	:	हड़प्पन काल (2500 BC)
स्थान	:	मोहनजो–दाड़ो
आकार	:	लगभग 4 इन्च
कलाकार	:	अज्ञात
संकलन	:	भारतीय संग्रहालय, नई दिल्ली

सामान्य विवरण

यह मूर्ति धातु की बनी है तथा सम्भवतः सिन्धु घाटी के कलाकारों की कलात्मकता और तकनीकी कौशल का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। इस नई आकृति में धातु पर की गई कलाकारी तकनीकी कौशल का विशेष नमूना है। यह मूर्ति देखने में काफी पतली एवं लम्बी है तथा इसमें एक लयात्मकता है। इस वास्तुकला में कुछ दर्शनीय बातें नजर आती हैं। प्रथम, जहां इसे निःवस्त्र दिखाया गया है, वहीं उसके बाएं हाथ में लगभग कन्धों तक चूड़ियाँ पहनी हुई दिखाई गई हैं, ठीक उसी तरह जैसे हम गुजरात और राजस्थान के क्षेत्रों में आजकल के आदिवासी लोगों को देखते हैं। दूसरा महत्वपूर्ण आकर्षण उनका केश विन्यास है। अन्य देवियों की छोटे कद की मूर्तियों में सजाए गए बालों का विन्यास विलक्षण है। ये मूर्तियाँ इसी सभ्यता की देन हैं। इस मूर्ति में **समकालीन** शैली की झलक है। जूड़े के तौर पर उनके बाल बाँधे गए हैं। इसके खड़े होने या बैठने का तरीका दर्शनीय है। यह अपनी कमर पर दायाँ हाथ रखकर तथा बायाँ हाथ अपनी जाँघ पर रखकर लेटे रहने की मुद्रा में है। मूर्ति जिस प्रकार गढ़ी/ढली है, वह अपने आप में पूर्ण है। यह मूर्ति उस युग में कलाकार की धातु पर कलाकृति बनाने के गुण को स्पष्ट करती है। वास्तुकला के क्षेत्र में उच्च स्तरीय कला का प्रदर्शन हुआ है। इसका अर्थ है कि यद्यपि मूर्ति की ऊँचाई लगभग 4 इन्च ही है, तो भी यह देखने में बड़ी लगती है। मूर्ति का यह आकर्षण अपने में विशिष्टता लिए हुए है। इस 'नाचती' लड़की की मूर्ति में कलाकार द्वारा कला की कलात्मक विशेषताओं का मिश्रण बहुत ही कुशलता से किया गया है।

पाठगत प्रश्न 1.1

क) 'नाचती लड़की' की धातु मूर्ति हमें कहाँ से प्राप्त हुई है?
ख) इसकी ऊँचाई क्या है?
ग) 'नाचती लड़की' क्या खड़ी अथवा बैठी हुई है?

रामपुरवा बुल कैपिटल

घ) 'नाचती लड़की' ने क्या परिधान पहन रखा है?
ङ) 'नाचती लड़की' की मूर्ति की सर्वाधिक प्रमुख विशेषता क्या है?
च) 'नाचती लड़की' का केश–विन्यास कैसा है?

1.2 रामपुरवा बुल कैपिटल (RAMPURVA BULL CAPITAL)

शीर्षक	:	रामपुरवा बुल कैपिटल
माध्यम	:	पॉलिश किया हुआ बालुका पत्थर
समय (युग)	:	मौर्यकाल – ईसा पूर्व तीसरी सदी
प्राप्ति स्थान	:	रामपुरवा
आकार	:	लगभग 7 फीट
कलाकार	:	अज्ञात
संकलन	:	भारतीय संग्रहालय, कोलकाता

सामान्य विवरण

सम्राट अशोक ने राजकीय आज्ञाओं (राजाज्ञाओं) तथा भगवान बुद्ध के सद्वचनों को स्तंभों, चट्टानों तथा पत्थरों के टुकड़ों पर खुदवाए थे। अशोक के स्तंभ भारत के प्रत्येक क्षेत्र में, सिवाय सुदूर दक्षिण क्षेत्र में, पाए जाते हैं। उनके स्तंभों के तीन हिस्से थेः पहला तो आधार होता था जो एक बढ़े हुए तीर (दणु) की भाँति हुआ करता था। दूसरा हिस्सा स्तंभ का सजा हुआ शीर्ष स्थान होता था। उस हिस्से को 'शीर्ष' कहा जाता था। शीर्षों में अधिकांशतः एक या अधिक पशुओं की आकृतियाँ उलटे कमल के साथ खुदी होती थीं। ये कमल इन पशुओं की आकृतियों के लिए एक आधार का कार्य करते थे।

पशुओं की आकृति एवं कमल के बीच **शीर्ष फलक** (Abacus) कही जाने वाली काफी मोटी आकृति को घुसा दिया जाता था। अशोक के काल में जितने भी शीर्ष बने हैं, उनमें सांड़ का शीर्ष सबसे प्रसिद्ध है। इसे रामपुरवा बुल कैपिटल (बैल का शीर्ष) के नाम से जाना जाता है। इसका नाम उसके उपलब्ध होने के स्थान के आधार पर प्रचलित हुआ। इस शीर्ष का आधार एक घण्टी के आकार के उलटे कमल से बना है। उसके बाद शीर्षफलक (Abacus) तथा शीर्ष पर राजकीय बैल का सिर रखा होता था। शीर्षफलक के चारों ओर पेड़–पौधों की चित्रकारी होती है। जानकारों के मतानुसार इसकी प्रेरणा मध्य पूर्व या ग्रीक प्रणाली से प्राप्त हुई होगी। यह रूपरेखा बहुत ही सूक्ष्मता तथा विशुद्धता से की गई नक्काशी का उदाहरण है। कमल तथा शीर्षफलक के ऊपर बैल की आकृति हावी होती दिखाई देती है। यद्यपि चार टांगों के बीच के पत्थर के टुकड़े को नहीं खोदा जाता है तथापि बैल की सुन्दरता या शक्ति पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। बैल (पशु) की शक्ति तथा उसके भारी–भरकम होने को अनुभव किया जा सकता है और इसी में कलाकार की सफलता निहित है। वस्तुतः आधार कमल तथा शीर्षफलक की सजावटी विशेषता से बैल की सामान्य प्रस्तुति पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

बैल पर की गई खुदाई स्पष्टतः भारतीय मूर्तिकारों की कला की उत्कृष्टता को दर्शाती है। बैल के शीर्ष की अति–विशेषता उस पर की गई पॉलिश की चमक है। अशोक युग से मौर्य युग के मूर्तिकारों की यही सर्वप्रमुख विशेषता रही है। एक विद्वान के अनुसार अच्छी पॉलिश करने की यह योग्यता मध्य–पूर्व के मूर्तिकारों से सीखी गई है।

अश्वेत राजकुमारी

पाठगत प्रश्न 1.2

क) बैल का शीर्ष कहाँ मिला?
ख) बैल के शीर्ष का आधार कैसा है?
ग) बैल के शीर्ष के शीर्षफलक पर क्या रखा गया है?
घ) अब बैल का शीर्ष कहाँ है?
ङ) बैल के शीर्ष की अति–विशेषता क्या है?

1.3 अश्वेत राजकुमारी (Black Princess)

शीर्षक	:	अश्वेत राजकुमारी
माध्यम	:	भित्ति–चित्र
समय	:	दूसरी शताब्दी (AD) से छठी शताब्दी (AD) (गुप्त–बाकाटक का काल)
उपलब्धि स्थान	:	अजन्ता
आकार	:	20 फीट x 6 फीट (लगभग)
कलाकार	:	अज्ञात

सामान्य विवरण

महाराष्ट्र में औरंगाबाद जिले के निकट अजन्ता गुफाएँ हैं। इन गुफाओं का नामकरण पास ही के गाँव 'अजिन्त' से पड़ा। पूर्ण एवं अपूर्ण गुफाएँ कुल मिलाकर 30 हैं। इन गुफाओं में से कुछ गुफाओं का उपयोग पूजा के स्थान (चैरयों) तथा उनमें से अधिकांश मठों (विहारों) के रूप में होते रहे। अजन्ता की कलाकृतियाँ दो चरणों में पूरी हुईं। प्रथम **हीनयान** चरण में हुई जिसमें भगवान बुद्ध को प्रतीकों के माध्यम से दर्शाया गया है। और दूसरा चरण **महायान** का है, जिसमें भगवान बुद्ध को मानवीय रूप में दिखाया गया है। अधिकांश अजन्ता भित्ति–चित्र वाकाटक काल में बने। भारतीय चित्रकला के इतिहास में अजन्ता चित्रों का एक अभूतपूर्व स्थान है। ये अजन्ता के भित्ति–चित्र **फ्रैस्को पद्धति** से नहीं बनाए गए हैं। फ्रैस्को एक रूसी पद्धति है जिसमें रंगों को पानी के साथ मिश्रित किया जाता है जिससे वे बंध सकें तथा उन रंगों से सूखे या गीले प्लास्टर पर चित्रकारी की जाती है। परन्तु अजन्ता के चित्रकारों (कलाकारों) ने परम्परावादी **टैम्परा पद्धति** का प्रयोग किया है। अजन्ता के भित्ति–चित्रों का विषय मूलरूप से धार्मिक था। इसके साथ–साथ कलाकारों (चित्रकारों) को अपनी रचनात्मक एवं कल्पनात्मक कला के प्रदर्शन की अनुमति भी थी। इसके लिए उन्हें पर्याप्त अवसर प्रदान किए गए। इन भित्ति–चित्रों की विशेषता यह भी है कि धार्मिक विषयों से संबद्ध चित्रों को साधारण जन भी देखकर आनन्दित हो सकता है। अजन्ता चित्रों में अश्वेत राजकुमारी (Black Princess) सर्वोत्तम कृति मानी जाती है। इन चित्रों में स्वतन्त्र रेखाओं का प्रयोग तथा कलाकार की कला के द्वारा प्रदर्शित अंगों का गूढ़ सामन्जस्य, चेहरे का थोड़ा–सा तिरछापन एवं आंखों की नक्काशी—सभी कुछ कलाकारों की सिद्धहस्तता के नमूने हैं तथा अपनी तूलिका पर कलाकार का नियन्त्रण दर्शाते हैं। यहाँ तक कि जो चित्र क्षतिग्रस्त हो गए हैं, वे भी रंगों का सौंदर्य प्रस्तुत करते हैं। चित्रों में संगीत की गीतात्मकता का अनुभव होता है। शरीर

के अंगों की परिरेखाएं तथा उनकी कोमलता, गर्दन का सूक्ष्म झुकाव तथा सरलता चित्रों में एक दिव्य विशेषता झलकाती हैं। जिन रंगों का प्रयोग किया गया है, वे अत्यन्त सहज हैं तथा उनमें चटकीलेपन का अभाव है।

पाठगत प्रश्न 1.3

क) अजन्ता की गुफाएँ कहाँ हैं?

ख) किस चरण में भगवान बुद्ध को प्रतीक रूप में दिखाया गया है?

ग) अश्वेत राजकुमारी में किस प्रकार के रंगों का प्रयोग किया गया है?

घ) अजन्ता चित्रों के किस चरण में अश्वेत राजकुमारी को बनाया गया?

ङ) अश्वेत राजकुमारी किस युग की कृति है?

आपने क्या सीखा

सिन्धु घाटी की सभ्यता का नाम उस स्थान से संबंधित है जहाँ इस सभ्यता के प्राथमिक प्रमाण मिले। इस सभ्यता के मुख्य स्थान मोहनजो–दाड़ो तथा हड़प्पा हैं, जो अब पाकिस्तान में हैं। मूलतः इस सभ्यता को पहले सिन्धु नदी की घाटी तक सीमित रखा गया और इसीलिए इसका यह नाम रखा गया। परन्तु हाल ही की खुदाई से पता चलता है कि यह सभ्यता इस नदी की घाटी के परे तक फैली हुई थी। इस सभ्यता को **हड़प्पन सभ्यता** के नाम से भी जाना जाता है तथा यह माना जाता है कि यह सभ्यता 2500 ई.पू. तथा 1750 ई.पू. के मध्य पनपी। इसी युग (समय) के दौरान बहुत–सी कलाकृतियां तथा पुरातनिक अवशेष पाए गए हैं जिनमें मोहरें (मुद्राएं), चीनी मिट्टी का सामान, जेवर (आभूषण), औज़ार, खिलौने, लघु प्रतिमाएं तथा अन्य उपयोगी वस्तुएं शामिल हैं।

भारतीय इतिहास में मौर्य वंशावली का राज्यकाल काफी महत्वपूर्ण है। इस राजवंश की स्थापना **चन्द्रगुप्त मौर्य** ने की थी। यद्यपि **चन्द्रगुप्त मौर्य** अपने कुशल शासन तथा कौटिल्य उर्फ **चाणक्य** के कारण एक ख्यातिप्राप्त शासक बना, उसके पौत्र **अशोक** महान ने बहुत–से जनहित के कार्य किए तथा कला एवं वास्तुकला के उत्थान के लिए भी बड़ा योगदान दिया। वह बौद्ध धर्म का अनुयायी था और भगवान बुद्ध की शिक्षाओं के प्रचार एवं प्रसार के लिए उसने पूरे साम्राज्य में स्तंभों एवं शिलालेखों को स्थापित किया।

मौर्यकाल के बाद **सांगा, सातवाहनों** तथा **कुषाणों** का शासन प्रारम्भ हुआ। कुषाण भारत के बाहर से आए थे परन्तु उन्होंने भारतीय कला एवं वास्तुकला के उत्थान के लिए प्रयास किए।

टिप्पणी

कुषाणों के बाद **चन्द्रगुप्त प्रथम** के द्वारा स्थापित गुप्त वंशावली के शासक सत्ता में आए। गुप्त वंश के शासक एक अच्छे शासक तथा शौर्य वीर ही नहीं थे, बल्कि विभिन्न कलाओं के संरक्षक भी थे। उन शासकों के शासन के दौरान हर क्षेत्र में प्रगति हुई। इनके शासन युग में विभिन्न प्रकार की कला तथा विज्ञान की बहुत प्रगति हुई। इसी युग में कालिदास जैसे महान शीर्ष स्तर के कवि का आविर्भाव हुआ। इसी युग में **आर्यभट्ट** तथा **वराहमिहिर** जैसे गणितज्ञ और वैज्ञानिक भी हुए। **इसी आधार में गुप्तकाल को भारतीय इतिहास का स्वर्णिम युग कहा जाता है।**

पाठांत अभ्यास

1. सिंधु घाटी सभ्यता के कार्यों को संक्षेप में लिखिए।
2. 'नाचती लड़की' की भाव भंगिमा का वर्णन संक्षेप में कीजिए।
3. मौर्य युगीन कला के विषय में संक्षेप में लिखिए।
4. गुप्त युग को भारतीय इतिहास में स्वर्णिम अथवा प्रतिष्ठित युग क्यों कहा जाता है?
5. मौर्य युगीन मूर्तिकला की क्या विशेषताएं हैं?
6. कुषाणों का क्या योगदान था?
7. गुप्तकालीन चित्रों की क्या विशेषताएं हैं?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

1.1 (क) मोहनजो–दाड़ो

(ख) लगभग 4 इंच

(ग) खड़ी हुई

(घ) वह निःवस्त्र थी

(ङ) कलाकार द्वारा कला की कलात्मक विशेषताओं का मिश्रण कुशलता के साथ हुआ है।

(च) एक जूड़े के रूप में बंधी हुई है।

टिप्पणी

1.2 (क) रामपुरवा में

(ख) घण्टी की आकृति में उल्टा कमल है।

(ग) सिर

(घ) भारतीय संग्रहालय में

(ङ) मूर्तियों पर की गई पॉलिश की चमक।

1.3 (क) महाराष्ट्र में औरंगाबाद के निकट

(ख) हीनयान चरण

(ग) प थ्वी के रंग/(सहज रंग)

(घ) महायान चरण

(ङ) दूसरी शताब्दी से छठी शताब्दी गुप्त–बाकाटक काल

टिप्पणी

2

सातवीं से बारहवीं शताब्दी तक कला का इतिहास तथा मूल्यांकन

गुप्तकाल के बाद का समय भारतीय इतिहास में मन्दिर वास्तुकला तथा मूर्तिकला की प्रगति का युग कहलाता है। **पल्लव, चोल,** दक्षिण में **होयसल** तथा पूर्व में **पाल, सेन** और **गंगेज** वंशों ने इस प्रगति को सहेजा तथा इसे प्रोत्साहन दिया। दक्षिण में **महाबलीपुरम** अथवा **मामल्लपुरम** में **पंचरथ** तथा **मण्डप** ढांचे देखने को मिलते हैं। जहां पल्लव तथा उनके विरोधी पश्चिमी चालुक्य वास्तुकला संबंधी क्रियाओं के लिए याद किए जाते हैं, वहीं चोल तथा होयसल अपने मन्दिर सम्बन्धी शिल्पकला के लिए हमेशा याद किए जाएंगे। चोल कलाकार कांसे की ढलाई द्वारा धातुओं की मूर्तियों में शरीर की लयात्मक गति को दिखलाने की कला में सबसे आगे थे। अपनी कला से उन्होंने कांस्य की मूर्तियाँ और धातु की जटिल मूर्तियाँ बनाई। चोल वंशीय शासकों ने दक्षिण में बहुत–से प्रसिद्ध मन्दिरों का निर्माण कराया। इनमें **गंगकोण्डाचोलापुरम मन्दिर** तथा **ब हदेश्वर मन्दिर** सबसे अधिक महत्वपूर्ण और विशिष्ट हैं। ये मन्दिर अपनी सरलता (अकृत्रिमता), **स्मारकीय विशालता** तथा **राजसी गुणों** के लिए प्रसिद्ध हैं। **होयसल कला** भी बहुत महत्वपूर्ण थी। उसकी शैली अपनी जटिल कलात्मकता तथा विस्तार के लिए जानी जाती है। होयसल राजाओं के शासन के दौरान बहुत सारी **मन्दिर परियोजनाओं** को साकार रूप दिया गया। इस युग में निर्मित मन्दिरों की विशेषता यह है कि **मन्दिर की शिल्पकला एवं वास्तुकला में अच्छा समन्वय** किया गया है।

गंग वंशीय शासकों ने पूर्वी भारत में मन्दिर निर्माण की विभिन्न परियोजनाएं प्रारम्भ की। इन मंदिरों में उड़ीसा के **मुक्तेश्वर मन्दिर, लिंगराज मन्दिर** तथा **राजारानी मन्दिर** विशिष्ट रूप से स्मरण किए जाते हैं। इसी युग में कुछ प्रसिद्ध भारतीय मन्दिरों का निर्माण किया गया। उदाहरणार्थ, **कांचीपुरम, चेन्नाई, भुवनेश्वर, बांकुरा** तथा **बेलूर** एवं **हेलेविड** मन्दिर बहुत प्रसिद्ध हैं। इस युग तक कलाकार खुदाई तथा अन्य कलाओं में बहुत प्रवीण और निपुण हो गए थे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद, आप :

- सातवीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी के बीच की कला का वर्णन कर सकेंगे;
- इस युग के कला बिन्दुओं एवं वस्तुओं को पहचान सकेंगे;

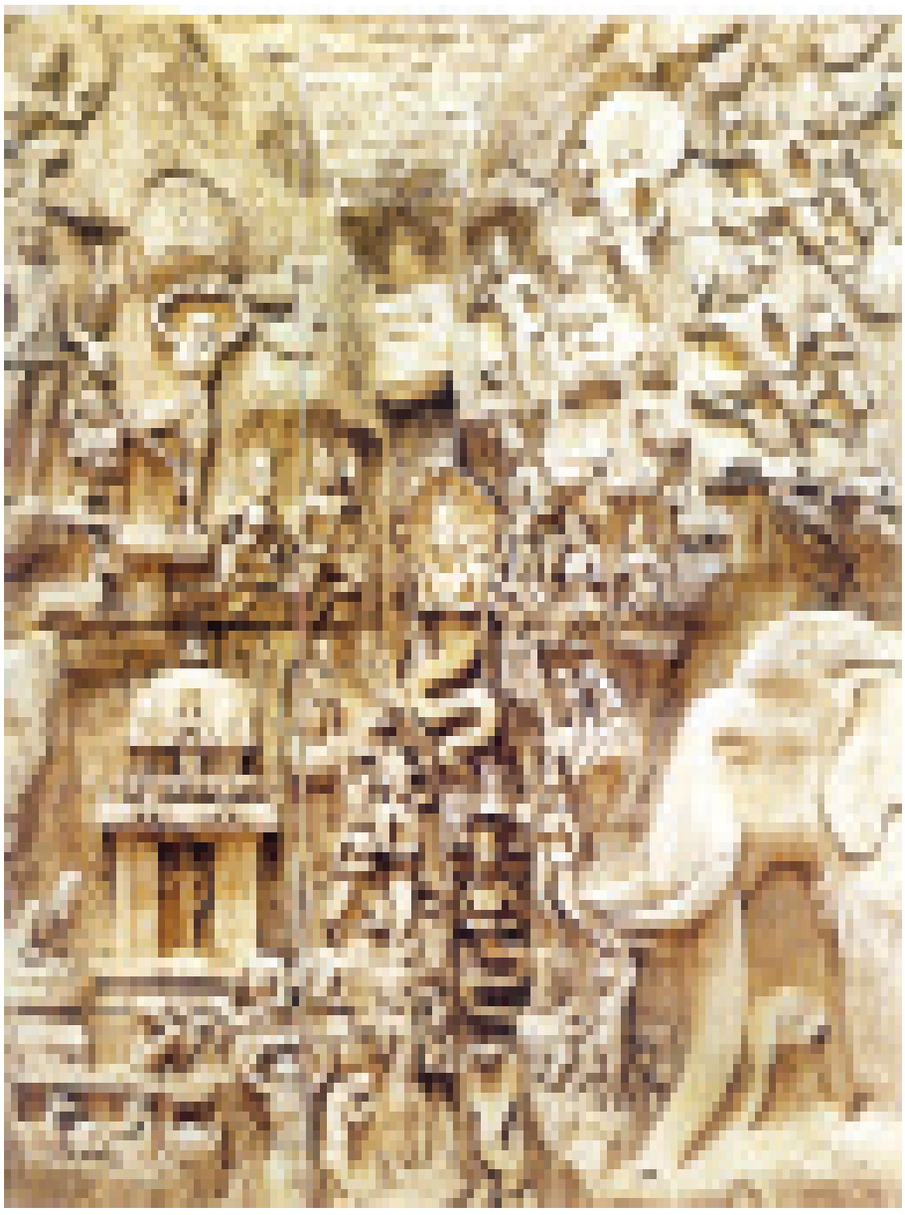

अर्जुन का चिन्तन अथवा गंगावतरण

टिप्पणी

- इस युग की कला के उद्देश्यों तथा वस्तुओं में अन्तर कर सकेंगे;
- इस युग की कला वस्तुओं की विशेषताओं को बता सकेंगे;
- इस युग की कला वस्तुओं के नामों की सुस्पष्ट रूप से पहचान कर सकेंगे।

2.1 अर्जुन का चिन्तन अथवा गंगावतरण

शीर्षक	:	अर्जुन का चिन्तन अथवा गंगावतरण
माध्यम	:	पत्थर
समय	:	पल्लव काल सातवीं शताब्दी (7th Century AD)
उपलब्धि स्थान	:	मामल्लपुरम (चेन्नई)
आकार	:	91फीट x 152 फीट (लगभग)
शिल्पकार (कलाकार)	:	अज्ञात

सामान्य विवरण

पल्लव वंशीय स्मारकों में गुफाओं के मन्दिर, मन्दिरों की इमारतें तथा कुछ एकाश्म ढांचे हैं। मामल्लपुरम में प्राप्त वास्तुकला का एक महत्वपूर्ण नमूना देखने को मिला है। यह भू–आकृति दो शिला–खण्डों पर उभरी हुई है। यह मूर्ति यद्यपि एकरूप (समतल) नहीं है, फिर भी उसकी प्रस्तुति स्पष्ट तथा स्वाभाविक एवं सहज है और सम्पूर्ण प्रस्तुति में एक प्रवाह है। इस मूर्ति में विभिन्न आकार के मनुष्य तथा पशुओं के एक झुंड के रूप में दिखाया गया है। इसमें देवता, अर्ध देव – (अंशावतार) तथा योगी, सभी को उड़ते हुए दिखलाया गया है। दो शिलाखण्डों के बीच एक दरार है। उसमें दिखलाई गई सभी आकृतियाँ इसी दरार की ओर देखते हुए खोदी गई हैं। इस उभरी हुई मूर्तिकला के ऊपरी हिस्से में काफी गति–विधियों तथा शक्ति का प्रदर्शन है परन्तु नीचे के हिस्से में जीवन में सब कुछ शान्त प्रतीत होता है। इसमें दिखाए गए योगियों को ध्यानमग्न अवस्था में दिखाया गया है। कुछ विद्वानों ने इस उभरी हुई मूर्तिकला को **गंगावतरण** का नाम दिया है जिसमें शंकर जी को प थ्वी पर आती गंगा की धारा के प्रवाह को अपनी जटाओं में रोकते हुए दिखाया गया है। उस दरार के दाहिनी ओर एक चतुर्भुजी आकृति दिखाई गई है जो अन्य आकृतियों से बड़ी है। इस आकृति को शंकर जी के कन्धों के ऊपर त्रिशूल के माध्यम से पहचाना जा सकता है। साथ ही उस आकृति के पास उनके शिष्य (अनुयायी) भी दिखाए गए हैं। कुछ अन्य लोगों का मत है कि इस आकृति को **अर्जुन के चिन्तन** के रूप में देखा जाना चाहिए क्योंकि इसमें एक पुरूष की आकृति एक तरफ ध्यानमग्न अवस्था में दिखाई गई है। वे लोग उसे अर्जुन मानते हैं। यह स्पष्ट रूप से पल्लव युगीय कलाकृति है क्योंकि इस मूर्ति में तीव्र गति तथा विशालता है। मूर्ति में पशुओं की विभिन्न विशेषताओं को दर्शाया गया है जो उस युग के कलाकारों की गहन और शोधपरक द ष्टि का परिचायक है। एक सोते हुए हाथी के बच्चे का चित्र, बन्दरों की आकृति, हिरन (म ग) का नाक खुजाना सभी कुछ कलाकार की सूक्ष्म द ष्टि के उदाहरण हैं। आकृतियों की कोमलता तथा उनकी गोलाई कलाकार की कुशलता के उदाहरण हैं। दीर्घ काल से दक्षिण में यह कृति भारतीय वास्तुकला की महान कृति मानी जा रही है।

पाठगत प्रश्न 2.1

(क) **'अर्जुन का चिन्तन'** कहां स्थित है?

(ख) किसके राजवंश में यह उभरी हुई मूर्तिकला बनी?

गोवर्धन पर्वत को उठाते हुए कृष्ण

टिप्पणी

(ग) **'अर्जुन का चिन्तन'** का दूसरा नाम क्या है?

(घ) इस उभरी हुई मूर्तिकला का माप क्या है?

2.2 गोवर्धन पर्वत को उठाते हुए कृष्ण

शीर्षक	:	गोवर्धन पर्वत को उठाते हुए कृष्ण
माध्यम	:	पत्थर
समय	:	होयसल काल
उपलब्धि स्थान	:	बेलूर
आकार	:	3 फीट
कलाकार	:	अज्ञात

सामान्य विवरण

होयसल युग में मन्दिर वास्तुकला बहुत प्रचलित थी। विस्त त मन्दिर वास्तुकला के अतिरिक्त प्रत्येक मन्दिर में मूर्तियों की वास्तुकला में आन्तरिक सजावट की जाती थी। दक्षिण के एक प्रसिद्ध राजवंश के नाम के आधार पर **होयसल शैली** का नाम पड़ा। इस राजवंश का उदय ग्यारहवीं शती के मध्य से हुआ और इसका अन्त चौदहवीं शती के मध्य में माना जाता है। आजकल के **हेलीबिड** नामक शहर को **होयसल वंश** की राजधानी माना जाता है। इस शहर का पहला नाम **द्वार समुद्र** था। होयसल शैली अपने में अपूर्व तथा अति विशिष्ट है। **बेलूर** में होयसल के मुख्य आदिकालीन मन्दिर मिलते हैं। होयसल मूर्तियों में गहरी खुदाई तथा गहरी तराश की कला देखने को मिलती है। साथ ही इन मूर्तियों में कोमलता तथा शरीर के अंगों की लयात्मकता तथा जटिल द श्य देखने को मिलते हैं। पत्थर की कोमलता के कारण गहरी कटाई सफल हो पाती है जिस कारण जटिल द श्यों की कटाई सरल हो जाती है। कृष्ण की मूर्ति **क्लिष्ट** और **सूक्ष्म** होयसल नक्काशी का सर्वोत्तम उदाहरण है। समस्त घटना को अलग–अलग परतों में दिखाया गया है। कृष्ण को मध्य में रखकर मुख्य पात्र दिखाया गया है तथा अन्य विभिन्न परतों पर पशु तथा अन्य मनुष्यों को दिखाकर एक मनोरंजक कथानक जैसा बन गया है। कृष्ण को यद्यपि नायक के रूप में दर्शाया गया है तथापि इस सारे द श्य में उनके खड़े होने की मुद्रा तथा उनके अंगों की **लयात्मकता** से सारे संयोजन में एक कोमलता का आभास होता है। पशुओं का सजीव चित्रण बहुत ही रोचक और आकर्षक लगता है। स्त्रियों के भारी स्तन तथा नितम्ब, गहनों का अलंकरण तथा विशिष्टतापूर्ण भारतीय केश विन्यास के साथ यह संयोजन होयसल शैली का विशिष्ट उदाहरण माना जाता है जिसमें पत्थर की सूक्ष्म रूप से की गई कटाई उस काल के कलाकारों की कुशलता को दर्शाती है।

पाठगत प्रश्न 2.2

(क) होयसल युग के किसी एक मन्दिर के स्थान का नाम बताइए।

(ख) हेलीबिड का पूर्व का नाम क्या था?

कोणार्क की सुरसुन्दरी

टिप्पणी

(ग) होयसल राजा कब शक्तिशाली हुए?

(घ) होयसल राज्य कहाँ था?

(ङ) जिस मूर्ति का जिक्र किया गया है, उसे कहां पाया गया?

2.3 कोणार्क की सुरसुन्दरी

शीर्षक	:	कोणार्क की सुरसुन्दरी
माध्यम	:	पत्थर
समय	:	गंग राजवंश (12वीं शती AD)
उपलब्धि का स्थान	:	कोणार्क, उड़ीसा
आकार	:	प्राकृत आकार से कुछ ज्यादा
कलाकार	:	अज्ञात

सामान्य विवरण

गंग वंश के राजा नरसिंह देव I ने उड़ीसा में पुरी के निकट भारतीय पूर्वी समुद्री तट पर कोणार्क में उड़िया वास्तुशास्त्र का सर्वोत्तम मंदिर **सूर्यमंदिर** बनवाया। इस युग में एक भिन्न प्रकार की वास्तुकला के उत्थान को देखा गया। यह मंदिर अपने विशाल ढांचे तथा प्राकृत आकार (आदमकद) के लिए प्रसिद्ध है। बड़ी मूर्तियां जो प्रायः काले पत्थर से बनी हैं, बंगाल की शैली से कुछ मिलती–जुलती हैं। प्रतिरूपण कुछ कसा हुआ है तथा कुछ चौड़े चेहरे पर मुस्कराहट है। कलाकृतियाँ मज़बूत हैं तथा बंधनमुक्त सौम्यता लिए हुए हैं। मन्दिर की मूर्ति मन्दिर के सौन्दर्य तथा सुरुचिसंपन्नता में व द्धि करती है। सूर्य की बड़ी प्रतिमा तथा नारी संगीतज्ञों की आकृतियां मंदिर की विशेषताओं में व द्धि करती हैं। इन मूर्तियों में एक मूर्ति प्राकृत आकार से कुछ बड़ी नारी की है, जो कि अन्य मूर्तियों की भांति ही है। ये नारी संगीतज्ञ नीचे और मध्य भाग के ऊपर चबूतरे पर बैठी हैं। वे पूर्ण विश्वास तथा प्रसन्नता से खेलती दिखाई देती हैं। इन संगीतज्ञों की आकृतियां बड़ी गहराई से तराशी गई हैं। इन मूर्तियों में गति तथा विशालता का आभास है। प्रत्येक नारी को एक अलग ही वाद्ययंत्र के साथ दिखाया गया है। सुरसुन्दरी के पास ड्रम है। मुस्कराहट भरा बड़ा चेहरा एवं बड़े आकार के बावजूद इस मूर्ति में एक लय है, गति है। अंगों की लयात्मकता के साथ सिर थोड़ा–सा झुका हुआ है। मूर्ति के इन सभी गुणों के कारण ड्रम बजाने वाली स्त्री सौंदर्ययुक्त एवं मोहक लगती हैं। स्त्री के वक्षस्थलों के बीच आभूषणों को कोमलता से गढ़ा गया है, जो उसके सौंदर्य में व द्धि करते हैं। मूर्तियों की वक्रता तथा झुकाव मूर्तियों में एक लयात्मकता प्रस्तुत करता है। इसी प्रकार वेश विन्यास तथा मुद्राएं प्रतिमा को सौन्दर्यपूर्ण तथा लयात्मक बनाती हैं।

पाठगत प्रश्न 2.3

(क) सुरसुन्दरी की प्रतिमा को क्या बजाते हुए दिखाया गया है?

(ख) कोणार्क के सूर्य मन्दिर को किसने बनवाया था?

(ग) कोणार्क का सूर्य मन्दिर कहाँ स्थित है?

(घ) यह प्रतिमा किससे बनी हुई है?

(ङ) कोणार्क का सूर्य मन्दिर किस राजवंश से सम्बन्धित है?

आपने क्या सीखा

गुप्त वंश के स्वर्णिम युग के बाद विभिन्न राजवंशों के शासन काल में कला तथा वास्तुकला की प्रगति होती रही। गुप्त काल के बाद कला सम्बन्धी गतिविधियों के केन्द्र दक्षिण तथा पूर्वी भारत की ओर स्थानांतरित हो गए। सातवीं शती (AD) में पल्लव वंशीय शासक शक्तिशाली हो गए। उनकी राजधानी **मामल्लपुरम** या **महाबलीपुरम** थी।

पल्लव वंशीय युग में **मामल्लपुरम** तथा **कांचीपुरम** कला के मुख्य केन्द्र बन गए। यही कारण है कि कला विषयक सर्वाधिक कार्य इन्हीं केन्द्रों में उपलब्ध हैं। कला के क्षेत्र में पल्लवों के समय की कुछ प्रसिद्ध कलाकृतियाँ महाबलीपुरम में उपलब्ध हैं। पंचरथ, अर्जुन का चिन्तन, मण्डप तथा उभरी हुई मूर्तिकला तथा कुछ और कलाकृतियाँ हैं जो पल्लवों के समय की हैं तथा महाबलीपुरम में उपलब्ध हैं। **पल्लवों** के बाद दक्षिण भारतीय क्षेत्र में जिन राजवंशों ने शासन किया उनमें **चालुक्य, चोल** तथा **होयसल** प्रमुख थे। पल्लव, **चालुक्य** तथा **चोल वंशीय मूर्तियाँ** कोमल एवं सौम्य थीं। मूर्तियों में ये गुण इससे पहले कभी नहीं देखे गए। **चोल युग** के कलाकारों ने कांस्य की मूर्तियों की तकनीक में निपुणता हासिल की। **होयसल काल** को पत्थर की मूर्तियों का युग माना जाता है। पत्थर पर बड़ी जटिल और सूक्ष्म नक्काशी तराशी गई है। ये मूर्तियां निपुणता से प्रदर्शित भाव–भंगिमाओं के लिए प्रसिद्ध हैं। मूर्तियों में लयात्मकता तथा गति इनके विशिष्ट आकर्षण हैं। इसी युग में मन्दिर वास्तुकला के उच्च स्तरीय नमूने देखने को मिलते हैं। मन्दिर वास्तुकला के अद्भुत उदाहरणस्वरूप कुछ मन्दिर इसी युग में देखने को मिलते हैं। इनमें से **हालेबिड** स्थित **होयसलेश्वर मन्दिर, केशव मन्दिर** तथा **सोमनाथ पुर के मंदिर** हैं। **पाल** तथा **सेन** राजवंश के बाद पूर्वी भारत में **गंग राजवंश** प्रमुख और प्रतिष्ठित राजवंश हुए। यह राजवंश अच्छे मन्दिर बनाने के लिए प्रसिद्ध हैं। इस राजवंश के शासकों ने ही उड़ीसा स्थित कोणार्क में शानदार राजसी **कोणार्क सूर्यमन्दिर** का

टिप्पणी

निर्माण कराया। इस मन्दिर में घोड़ों द्वारा खींचते हुए एक रथ बना है। यह मन्दिर उत्कृष्ट वास्तुकला तथा मूर्तियों के लिए विश्व में प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका है। यद्यपि इस मन्दिर की वास्तुकला बुरी तरह से ध्वस्त हो चुकी है परन्तु जो कुछ बचा है, वह उस युग के कलाकारों तथा उनकी कला की महानता को समझने के लिए काफी है।

पाठांत अभ्यास

1. 'अर्जुन का चिन्तन' नामक उभरी हुई मूर्तिकला के बारे में संक्षेप में लिखिए। वह कहाँ स्थित है?
2. कोणार्क का सूर्यमन्दिर कहाँ है? उसके विषय में संक्षेप में लिखिए।
3. कोणार्क मूर्तिकला की क्या विशेषताएं हैं।
4. होयसल युग की कृष्ण गोवर्धन मूर्ति के विषय में विशेष रूप से उल्लेख करने के लिए क्या है?
5. होयसल युग की मूर्तिकला की मुख्य विशेषताएं क्या हैं?
6. महाबलीपुरम में क्या है?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

2.1 (क) महाबलीपुरम या मामल्लपुरम

(ख) पल्लव राजवंश

(ग) गंगावतरण

(घ) लगभग 91 फीट x 152 फीट

2.2 (क) वेलूर

(ख) द्वार समुद्र

(ग) ग्यारहवीं शताब्दी

(घ) दक्षिण

(ङ) वेलूर

टिप्पणी

2.3 (क) ड्रम

(ख) नरसिंह देव–I

(ग) उड़ीसा

(घ) पत्थर

(ङ) गंग राजवंश

टिप्पणी

3

13वीं शती (AD) से 18वीं शती (AD) तक कला का इतिहास तथा मूल्यांकन

12वीं शती ईस्वी (AD) में भारत के विभिन्न भागों में शक्तिशाली वंशों के पतन के बाद कला के संरक्षकों का अभाव हो गया तथा इस युग में बड़े स्तर पर कला की परियोजनाएं प्रारम्भ नहीं हुईं। तथापि राजस्थान, बंगाल तथा उड़ीसा में कुछ मन्दिरों का निर्माण हुआ, जो नगण्य था। इस युग में मुस्लिम शासकों ने निर्माण कार्य को किलों तथा मकबरों तक सीमित रखा। उन्होंने वास्तुकला को प्रोत्साहन नहीं दिया। परन्तु इस काल में सचित्र हस्तलिपियां/पांडुलिपियाँ काफ़ी संख्या में तैयार हुईं जिससे भारतीय कला सम द्ध हुई। ये पाण्डुलिपियाँ विभिन्न भारतीय धर्म तथा सम्प्रदायों से सम्बन्धित थीं। इन धर्मों एवं सम्प्रदायों में मुख्यरूप से हिन्दू, जैन तथा बौद्ध धर्म शामिल हैं। इन सचित्र पाण्डुलिपियों का मुख्य केन्द्र बंगाल, गुजरात तथा बिहार था। बंगाल तथा बिहार में ये पाण्डुलिपियाँ **पाल वंश** के शासकों के संरक्षण में तैयार हुईं जिसमें **पाल शैली** स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। दूसरी ओर, जैन धार्मिक पाण्डुलिपियाँ बिहार में लिखी एवं चित्रों द्वारा सजाई गईं। ये पाण्डुलिपियाँ पाम पत्रों पर लिखी गईं जिसमें सुन्दर लेख के बीच में चित्रों के लिए स्थान छोड़ा गया था।

भारत के कुछ भागों में मन्दिर वास्तुकला को भी इसी काल में बढ़ावा दिया गया। **माउन्ट आबू** के दिलवाड़ा में संगमरमर के मन्दिर समूह तथा बंगाल एवं उड़ीसा में पक्की मिट्टी (टेरीकोटा) के बने मन्दिर बहुत सुन्दर हैं।

16वीं शती ईस्वी से 19वीं शती ईस्वी तक **राजपूत** तथा **मुगल चित्रकारी** काफ़ी फली, फूली और सम द्ध हुई। राजपूत चित्रकला में लोक–चित्रकला तथा अजन्ता चित्रकला शामिल थी जबकि मुगल चित्रकला में फारसी तथा राजपूत चित्रकला का सम्मिश्रण था। 18वीं शताब्दी के बाद भारतीय कला का पतन प्रारम्भ हो गया।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद, आपः

- 12वीं शती ईस्वी से 18 वीं शती ईस्वी तक भारत में कला की स्थिति का वर्णन कर सकेंगे;

शृंगार

टिप्पणी

- भारतीय कला के पतन के कारणों को लिख सकेंगे;
- इस काल में हस्तलिखित पाण्डुलिपि के चित्रों को समझ सकेंगे;
- राजपूत शैली की महत्वपूर्ण कलाकृतियों का वर्णन कर सकेंगे; और
- पक्की मिट्टी (टेराकोटा) के मन्दिरों के बारे में लिख सकेंगे।

3.1 श्रंगार

शीर्षक	:	श्रंगार
शैली	:	गुलेर घराना
समय	:	18वीं शताब्दी ईस्वी
कलाकार	:	अज्ञात
माध्यम	:	टेंपेरा

सामान्य विवरण

कांगड़ा घाटी के निकट **गुलेर** नामक छोटा–सा राज्य था। यह राज्य **पहाड़ी शैली** के चित्रों के लिए बहुत प्रसिद्ध था। 1450 ईस्वी से 1780 ईस्वी के दौरान यह शैली विभिन्न राजाओं के संरक्षण में काफ़ी पल्लवित और सम द्ध हुई। **गुलेर लघु चित्रकला** विकास के विभिन्न चरणों को पार करती हुई पल्लवित हुई है। इस पर लोक–कला तथा मुग़लों की लघुचित्र शैली का प्रभाव पड़ा। 18वीं शताब्दी ईस्वी में गुलेर चित्रकला अपनी परिपक्व अवस्था तक पहुंच चुकी थी। कुछ विद्वानों के मतानुसार पहाड़ी शैली का मूल गुलेर में था जिसने कई अन्य पहाड़ी शैली, जैसे कांगड़ा, को प्रभावित किया। गुलेर चित्रों की प्रामाणिक विशेषता पौराणिक कृष्ण तथा राधा की प्रेम कथा है। यह प्रेम कथा आज तक दिव्य प्रेम के जीवंत प्रतीक के रूप में मानी जाती है। गुलेर चित्रकला में **रामायण** तथा **महाभारत** की कहानियों को दर्शाया गया है। इन कहानियों को शाही चित्रों तथा राज–सभा के द श्यों से सजाया गया है। **'श्रंगार'** विशिष्ट राजपूत चित्रकला का उदाहरण है।

एक दुल्हन को विवाह के लिए सजाया जा रहा है। ये आकृतियाँ वास्तुकला की चौखट में समन्वय और संतुलन के साथ बनाई गई हैं। इस चित्र के अग्रभाग में एक नौकरानी चन्दन का लेप तैयार कर रही है। दूसरी नौकरानी दुल्हन के पैर में पायल पहना रही है। इसी चित्र में दो और आकृतियाँ खड़ी दिखाई गई हैं जिनमें से एक आईना (शीशा) लेकर खड़ी है तथा दूसरी फूलों की माला बना रही है। एक महिला (स्त्री) किसी सहायिका के सहयोग से दुल्हन के बाल संवार रही है तथा एक बुजुर्ग महिला इस सारे क्रियाकलाप का निरीक्षण कर रही है।

कलाकार (चित्रकार) ने दुल्हन के लजाने तथा लालित्वपूर्ण भंगिमा का दर्शनीय चित्रण किया है। उसकी भावभंगिमा का प्रदर्शन ही कलाकार (चित्रकार) की कला का चर्मोत्कर्षीय प्रदर्शन है। संवेदनशील चेहरे, सौम्य व्यवहार तथा रंगों का कोमल मिश्रण गुलेर शैली की विशेषताएं हैं।

जैन लघुचित्र

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 3.1

1. पहाड़ी चित्रों के मूल स्थानों के नाम बताइए।
2. गुलेर चित्रकला की सर्वप्रमुख क्या विशेषता है?
3. श ंगार चित्र के पूर्वभाग में दो आकृतियाँ क्या कर रही हैं?
4. गुलेर शैली की किसी एक विशेषता को लिखिए।

3.2 जैन लघुचित्र

शीर्षक	:	कल्पसूत्र
कलाकार	:	अज्ञात
शैली	:	जैन पाण्डुलिपि चित्र
समय	:	15वीं शती ईस्वी
माध्यम	:	पाम की पत्तियों पर टेंपेरा

सामान्य विवरण

पूरे भारत में 7वीं शती ईस्वी से प्रारम्भ होकर 10वीं तथा 15वीं शती (AD) तक जैन लघु–चित्रों का विकास हुआ। जैन धर्मग्रन्थ जैसे कि **'कालकाचार्य कथा'** तथा **'कल्पसूत्र'** को **पार्श्वनाथ**, **नेमिनाथ, ऋषभनाथ** तथा अन्य तीर्थंकर के चित्रों से सजाया गया है।

अधिकांशतः जैन लघुचित्र 10 वीं शताब्दी (AD) में बने। इन चित्रों के मुख्य केन्द्र पंजाब, बंगाल, उड़ीसा, गुजरात तथा राजस्थान में थे।

ये पाण्डुलिपियाँ प्रमुख रूप से पामपत्रों पर लिखी गई हैं। इसीलिए चित्र भी उन्हीं पाण्डुलिपियों के साथ ही बनाए गए हैं। चित्रों में प्रयुक्त रंग आस–पास में उपलब्ध रंगों से बनाए जाते थे। लाल तथा पीले रंगों का प्रयोग विशेष रूप से किया गया है। इन रंगों के साथ–साथ स्वर्णिम तथा रजत रंगों का प्रयोग भी किया गया है। इन चित्रों में मानवी आकृतियाँ कुछ विशिष्टताओं को दर्शाती हैं। इन व्यक्तियों के चेहरे रूपरेखा के रूप में हैं जिसमें उनकी आँखों का सामने का द श्य दिखाई देता है। इसी कारण उनकी एक आंख चेहरे की रूपरेखा से दूर बाहर की ओर दिखाई देती है। आकृति के मुख्य भाग भी अग्रभाग की ओर ही होते थे। स्त्री आकृतियों ने बहुत गहने जवाहरात पहन रखे हैं। इन चित्रों में रेखाओं को विशेष महत्व दिया गया है।

कल्पसूत्र, जैन धर्म की विधियों की पुस्तक में एक चित्र है। इस चित्र का समस्त स्थान कुछ आयतों तथा चौकोरों में बांट दिया गया है। पुरूषों, स्त्रियों तथा पशुओं का चित्रण लाल रंग की प ष्ठभूमि में किया गया है। पीले रंग से प्रत्येक खण्ड को दिखलाया गया है। प्रत्येक खण्ड में कल्पसूत्र की कहानी का अलग–अलग कथाक्रम वर्णित है। स्वर्ण तथा सामुद्रिक रंग के कीमती पत्थरों का प्रयोग किया गया है। यह शैली पूरी तरह लोक शैली पर केंद्रित है, जहाँ आकार में चपटापन है तथा अभिव्यक्ति रूढ़िवादी है, जिसमें

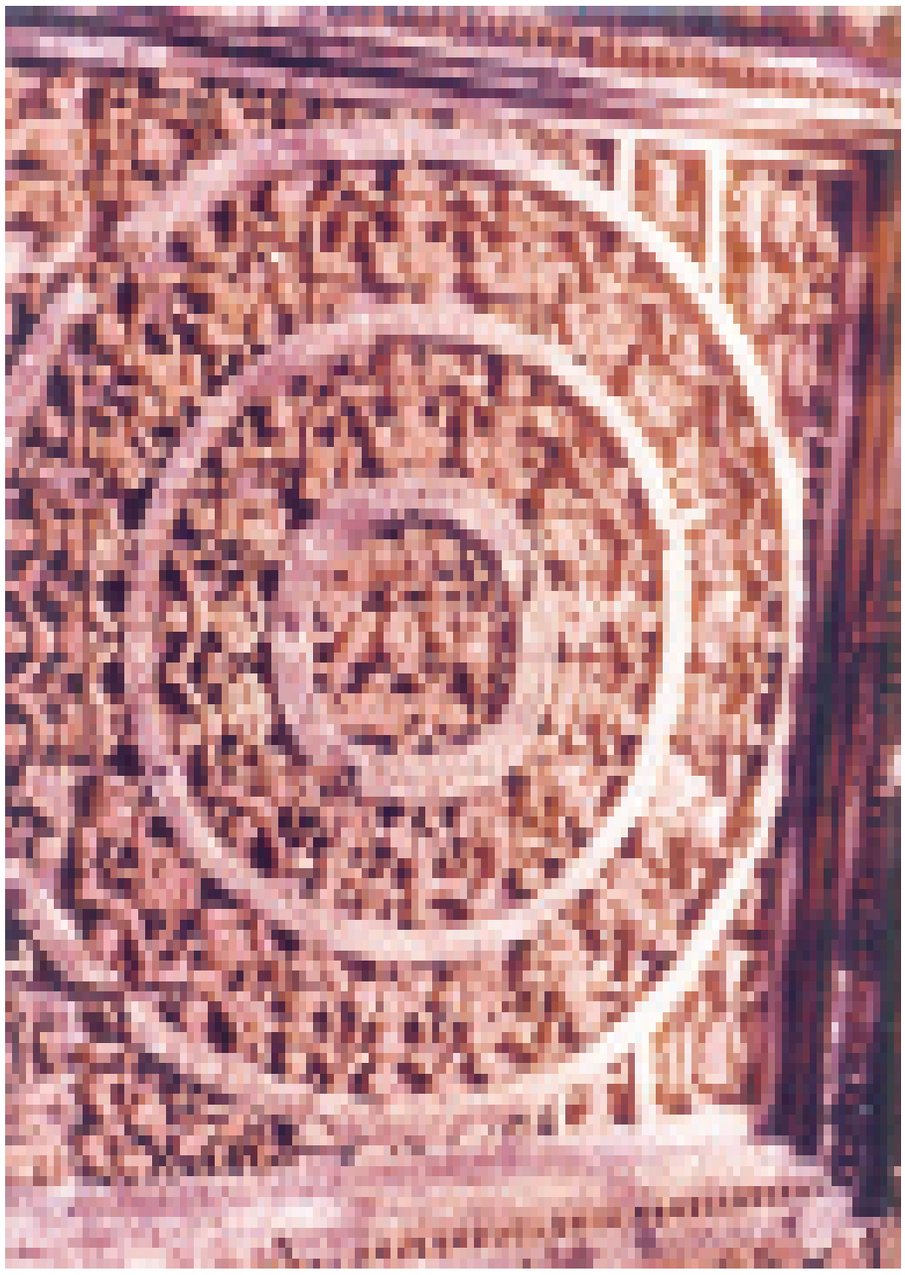

रासलीला

परिद श्य का अभाव है। इसके बावजूद कलाकार की वास्तुकला के प्रतिमानों तथा कपड़ों की अभिकल्पना का आकलन विशेष रूप से दिलचस्प है।

प्रभावकारी रेखाएं तथा शरीर की रेखाओं का बिन्दुओं से प्रयोग इन चित्रों के सौंदर्य को बढ़ाता है।

पाठगत प्रश्न 3.2

1. जैन लघुचित्रों का विकास कब हुआ?
2. जैन लघुचित्रों में कौन–से चित्र चित्रित किए गए?
3. जैन लघुचित्रों में सबसे अधिक किन प्रमुख रंगों का प्रयोग किया गया है?
4. इन चित्रों में मानवी आकृतियों के क्या विशिष्ट गुण हैं?

3.3 रासलीला

शीर्षक	:	विष्णुपुर टेराकोटा
कलाकार	:	अज्ञात
उपलब्धि का स्थान	:	पश्चिम बंगाल के विष्णुपुर में पंचमुरा मन्दिर।
समय	:	17वीं शती AD के आसपास
माध्यम	:	पक्की मिट्टी (टेराकोटा) की टाइल्स

पश्चिमी बंगाल में **विष्णुपुर** नामक एक छोटा–सा शहर (कस्बा) है। किसी समय में यह **बांकुरा जिले** के शासकों की राजधानी थी। यहाँ छोटे–छोटे कई मन्दिर हैं जिनको पक्की मिट्टी (टेराकोटा) की टाइल्स से सजाया गया है। यह (टेराकोटा) कला 18वीं तथा 19वी शती ईस्वी की विभिन्न संस्कृतियों तथा धार्मिक घरानों को प्रतिबिम्बित करती है। अधिकांश मंदिर या तो शिवजी को या विष्णुजी को समर्पित हैं। इन पक्की मिट्टी की टाइल्स पर उभरी हुई विषय–वस्तु विभिन्न धार्मिक प्रथाओं को प्रतिबिंबित करती है। शिव, दुर्गा तथा राधाकृष्ण की आकृतियाँ रामायण तथा महाभारत के पात्रों के साथ दिखाई देती हैं।

कलाकार ने समकालीन सामाजिक जीवन को दर्शाने का पूर्ण प्रयास किया है। मानव, पशु तथा चिड़ियों के जीवन से संबंधित विभिन्न विषयों को चित्रित किया गया है।

मन्दिर वास्तुकला बंगाल की झोंपड़ी प्रकार की एक मंजिली या दो मंजिली डिजाइन पर आधारित है। दीवारों को पक्की मिट्टी की छोटी टाइल्स से सजाया गया है। ये टाइल्स दीवारों पर मिट्टी गारे से चिपका दिए गए हैं। ये चूने की टाइल्स ईंटों जैसे खांचों से बनाई

टिप्पणी

जाती हैं। इनको आग में तपाकर पक्की मिट्टी की तरह ही बनाया जाता है।

'रासलीला' में राधा–कृष्ण के दिव्य प्रेम को उनके साथी गोप तथा गोपियों के सान्निध्य में दर्शाया गया है। इस सुन्दर फलक का एक चौकोर स्थान पर तीन गोलों को केन्द्रित कर संयोजन किया गया है। इन तीन गोलों में से बीच के गोले में एक गोपी के साथ राधाकृष्ण की आकृतियां दिखाई गई हैं। शेष दो गोलों में कुछ आकृतियां एक–दूसरे के हाथ पकड़े दिखाई गई हैं। चौकोर के चारों कोनों को मानव, पशुओं तथा चिड़ियों की आकृतियों से सजाया गया है।

पाठगत प्रश्न 3.3

1. विष्णुपुर कहाँ है?
2. विष्णुपुर के मन्दिर कैसे सजाए गए हैं?
3. पक्की मिट्टी से बने इन मन्दिरों में बनाई गई आकृतियां क्या दिखाती हैं?
4. इस शैली के विकास का क्या समय था? उसका वर्णन कीजिए।

आपने क्या सीखा

संरक्षकों के अभाव में कला का विकास अवश्य प्रभावित होता है परन्तु इससे कलाकार की स जनात्मकता में कमी नहीं आती। 12वीं शती (AD) से 18वीं शती (AD) तक कला की स्थिति यही सिद्ध करती है। इस काल में कला शैली में काफी परिवर्तन हुए। परिणाम स्वरूप इस काल में कलाचित्र का आकार जैन, बौद्ध तथा हिन्दू पाण्डुलिपियों के चित्रों की तरह छोटा हो गया। राजपूत तथा मुगल कलाकृतियाँ भी आकार में छोटी हैं। आकार में छोटे होते हुए भी सौंदर्य एवं तकनीकी द ष्टि से इन चित्रों का स्तर काफी ऊंचा है।

लघु चित्रों के साथ–साथ भारत के पूर्वी भाग में टेराकोटा की बनी उच्चावच कृतियाँ (Relief works) विशेष रूप से पश्चिमी बंगाल में बहुत लोकप्रिय हुईं। बहुत–से मन्दिर इन टाइल्स से सजाए गए हैं।

पाठांत अभ्यास

1. 12वीं शती (AD) के बाद कला के विकास का विवरण दीजिए।
2. टेराकोटा क्या है? उस मन्दिर का वर्णन करें जिसमें टेराकोटा की टाइल्स लगाई गई हैं।

टिप्पणी

3. भारत में किसी प्रचलित शैली के लघुचित्रों पर संक्षिप्त अनुच्छेद लिखिए।

4. जैन लघुचित्रों की क्या विशेषताएं हैं?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

3.1 1. गुलेर

2. राधा–कृष्ण की प्रेमकथा, रामायण और महाभारत की कहानियां

3. पायल पहनाते हुए तथा चन्दन का पेस्ट बनाते हुए

4. अति संवेदनशील, सौम्य व्यवहार

3.2 1. 7वीं शती (AD), 10वीं शती (AD) तथा 15वीं शती (AD) के दौरान

2. तीर्थंकर जैसे पार्श्वनाथ, नेमिनाथ तथा ऋषभनाथ आदि की प्रतिमाएं (मूर्तियां)

3. लाल, पीला, स्वर्णिम तथा रजत रंग

4. आकृतियों के चेहरे पार्श्व रूप से प्रस्तुत हैं तथा आंखों को आगे से दिखाया गया है, एक आंख चेहरे की रेखाओं से बाहर जाती है।

3.3 1. पश्चिम बंगाल

2. मिट्टी (टेराकोटा) पक्की से सजाई हुई

3. शिव, दुर्गा, राधा–कृष्ण तथा रामायण एवं महाभारत के अन्य पात्र।

4. 17वीं तथा 18वीं शती (AD)

टिप्पणी

4

भारत की लोककला

भारत की लोककला में आर्यों से पूर्व की संस्कृति की छाप स्पष्ट दिखाई देती है। समस्त भारत के पारम्परिक जीवन में विभिन्न धर्म, संप्रदाय तथा विश्वास साथ–साथ पनपे हैं। **तन्त्र शक्ति**, **वैष्णव** तथा **बौद्ध** जैसे संप्रदाय लोक कलाकारों के जीवन में महत्वपूर्ण हैं। ग्रामीण समाज की कला तथा शिल्प–कौशल की वस्तुओं की आवश्यकताएं स्थानीय कलाकारों तथा शिल्पकारों द्वारा पूरी होती हैं। ये आवश्यकताएं मुख्य रूप से तीन प्रकार की होती हैं: **(1) कर्मकांडी अथवा आनुष्ठानिक (2) उपयोगितावादी (3) वैयक्तिक**।

कर्मकाण्डी लोककला भी कई प्रकार की है जैसे कि **पटचित्र, पिचआई, अल्पना** तथा **कोलम**, आदि। लकड़ी पर सजावटी खुदाई, सुई–डोरे की कढ़ाई, डलिया बनाना तथा मिट्टी के बर्तन बनाना आदि मूल रूप से उपयोगितावादी लोककलाएं हैं। यह काम किसी औपचारिक प्रशिक्षण के बिना ग्रामीण कलाकारों द्वारा किया जाता है। यह कला पीढ़ी–दर–पीढ़ी दोहराई जाती है। उदाहरण के तौर पर पक्की मिट्टी से बने खिलौनों की परिकल्पना में मुश्किल से कोई परिवर्तन आया है। 5000 वर्ष पूर्व भी **हड़प्पन** संस्कृति के दौरान इसी प्रकार के खिलौने बनते थे। वैसे कुछ लोक कलाकार समय–समय पर कुछ वैयक्तिक तौर पर नए स्वरूप देने का प्रयोग करते रहते हैं जिससे नई लोककला का स जन होता है। ये कलाकार पुरानी शैली में थोड़ा–बहुत परिवर्तन करके नई शैली को जन्म देते हैं। इस प्रकार के नवीन प्रयोग **मधुबनी चित्रकला, कंथा** तथा **कालीघाट** के पटचित्रों में दिखाई देते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद, आपः

- भारत में लोककला की प ष्ठभूमि तथा उसके क्षेत्र का वर्णन कर सकेंगे;
- भारत की विभिन्न क्षेत्रीय लोककला को पहचान सकेंगे;
- इन लोककलाओं के माध्यम, तकनीक तथा शैली को समझ सकेंगे;
- लोककला में नई परिकल्पना तथा उसके अभिप्राय को बता सकेंगे, और
- विभिन्न कर्मकाण्डी लोककलाओं के नाम लिख सकेंगे।

टिप्पणी

कोलम

4.1 कोलम

शीर्षक	:	कलश से फर्श पर की गई चित्रकारी
शैली	:	कोलम
कलाकार	:	कोई अज्ञात घरेलू महिला
माध्यम	:	चावल की पिट्ठी तथा रंग
समय	:	1992
उपलब्धि का स्थान	:	तमिलनाडु में तन्जावुर के पास एक बस्ती

सामान्य विवरण

विश्वभर की सभी संस्कृतियों में फर्श की सजावट करने का बड़ा प्रचलित रूप है। भारत में भी देश के हर एक भाग में अलग–अलग माध्यम में फर्श पर सजावट की जाती है। कहीं पर यह **अल्पना,** कहीं **रंगोली, कोलम** तथा **साँझी** आदि सजावट के लिए विभिन्न माध्यम हैं। दक्षिण भारत में सांस्कृतिक तथा धार्मिक त्यौहारों के अवसर पर **कोलम** बड़ा महत्वपूर्ण हिस्सा है। **पौंगल** तथा अन्य त्यौहारों के अवसर पर प्रत्येक घर के सामने तथा पूजा की वेदी के सामने के स्थान पर फर्श पर सजावट का यह कार्य किया जाता है। फर्श की सजावट के अन्य भारतीय माध्यमों की भांति **कोलम को भाग्य और सम द्धि का प्रतीक माना जाता है।** कोलम द्वारा सजावट करने की परिकल्पना तथा इसका मूल ध्येय पारम्परिक है। यह फूलों से ज्यामितीय रूप में बनाई जाती है। इसके लिए फर्श पर पानी छिड़क कर उसे गीला या सीलनभरा कर देना चाहिए। मोटे चावल को पीस कर उसके पाउडर को अंगूठे तथा आगे की उंगली के बीच पकड़ कर रखते हैं। हाथ घूमता जाता है और चावल के पाउडर को फर्श पर गिरने दिया जाता है। फर्श पर जो आकृति बनाई जाती है, वह पूर्व निर्धारित है। आवश्यक यह है कि चावल का पाउडर लगातार बिना किसी रुकावट के गिरता रहे तथा जो आकृति फर्श पर बनाई गई है, वह उभरती जाए। लगातार अनुभव प्राप्त करते रहने से यह कलाकृति अच्छे तरीके से बन जाती है। युवा लड़कियाँ अपनी माँ, दादी तथा नानी माँ से यह कला सीखती हैं। इस सांकेतिक उद्देश्य के अतिरिक्त यह क्रिया ज़िंदगी का सही अर्थ भी समझा देती है। चावल का पाउडर आसानी से मिल जाता है। उससे यह भी सिद्ध होता है कि कला को जीवन के इस अंश का भी ध्यान रखना चाहिए। कोलम पेंटिंग एक ग हिणी बनाती है। इससे कलाकार स्वतन्त्र रूप से कलाकृति बनाना सीखता है। इस सन्दर्भ में अलग–अलग सांकेतिक आकार जैसे कि घड़े, लैम्प तथा नारियल के पेड़ प्रयोग किए जाते हैं। ये सभी भारतीय ग्रामीण जीवन के अनिवार्य अंग हैं। ये मूलरूप से ज्यामितीय आकार के होते हैं जिसमें लाल, नारंगी, नीले, पीले तथा गुलाबी चटकीले रंग प्रयोग किए जाते हैं।

पाठगत प्रश्न 4.1

1. भारत में फर्श पर बनाई जाने वाली सजावट का वर्णन कीजिए।
2. कोलम पेन्टिंग में प्रयोग की जाने वाली बनावट और आकृति कौन–सी हैं?
3. कोलम पेन्टिंग के तरीके को संक्षेप में लिखिए।
4. कोलम पेन्टिंग में किन वस्तुओं की चर्चा की गई है?

फुलकारी

टिप्पणी

4.2 फुलकारी

शीर्षक	:	चादर
कलाकार	:	अज्ञात
शैली	:	फुलकारी
माध्यम	:	कपड़ों की कढ़ाई (रंगीन धागे से)
समय	:	समकालीन

सामान्य विवरण

फुलकारी का वास्तविक अर्थ फूलों का काम है। यह नाम एक प्रकार की कढ़ाई का है जिसे पंजाब में प्रायः ग्रामीण महिलाएँ करती हैं। यह कढ़ाई का काम छोटे–बड़े कपड़े पर किया जाता है। ये कपड़े अलग–अलग कामों के लिए प्रयोग होते हैं; जैसे घूंघट के लिए (सिर ढंकने के लिए), पहनने वाले कपड़े, चादर तथा विस्तर को ढंकने वाले कपड़े के रूप में प्रयोग किए जाते हैं। यह कढ़ाई का काम मोटे कपड़े पर चमकीले सिल्क के टुकड़ों को मोटे कपड़े के पीछे की ओर से रफू करके सीं दिया जाता है। ये टांके गिने हुए होते हैं।

फुलकारी की परिकल्पना मूल रूप से ज्यामितीय आकार की होती है। कपड़े के चारों ओर चौकोर तथा त्रिकोण आकार की आकृति बनाई जाती है जिसमें खुशनुमा रंग की कढ़ाई की जाती है। प्रायः सरल आकृति बनाई जाती है और फिर बड़ी–बड़ी आकृतियाँ बनाई जाती हैं। इसमें चौकोर, छीटें, त्रिकोण तथा सीधी रेखाएं एवं टेढ़ी–मेढ़ी रेखाएं अलग अलग बदलाव के साथ काढ़ी जाती हैं। इस पूरी योजना में जिस रंग की प्रधानता रहती है वह पंजाब में पके गेहूं का स्वर्णिम रंग होता है।

स्त्रियाँ पहले अलग–अलग हिस्सों की बाहरी रूपरेखा को सुई से उभारती हैं और फिर एक निकटवर्ती दूसरे हिस्से को विरोधी रंगों से भरती हैं। ऊर्ध्वाकार (खड़ा हुआ) तथा क्षैतिज (समतल) धागों के कारण बहुत सुन्दर एवं आकर्षक नमूने बनते हैं।

सर्वमान्य फुलकारी के कार्य की परिकल्पना परम्परावादी ज्यामितीय आकार की होती है। तारों को सुनहरे पीले तथा सफेद रंग मिश्रित रजत (चांदी के रंग से मिलता रंग) रंग के धागों से लाल कपड़े पर काढ़ा जाता है। मुख्य रूप से परिकल्पना में एक बड़े सितारे के चारों ओर छोटे सितारे विभिन्न रूप में काढ़े जाते हैं जिससे कपड़े पर एक हीरे जैसी आकृति उभर आती है। रेशम के धागे की चमक से कपड़े का लाल आधार का प्रभाव बड़ा मनभावन लगता है।

पाठगत प्रश्न 4.2

1. फुलकारी का क्या अर्थ है?
2. फुलकारी में कौन–सी सामग्री का प्रयोग किया जाता है?
3. इस कढ़ाई के काम में किस रंग की प्रधानता रहती है?
4. फुलकारी का नमूना कैसे उभरता है?

कन्था कढ़ाई

टिप्पणी

4.3 कन्था कढ़ाई

शीर्षक	:	बंगाली 'कन्था'
कलाकार	:	अज्ञात
शैली	:	कन्था कढ़ाई
माध्यम	:	रेशमी कपड़े पर रंगीन धागों से कढ़ाई
समय	:	समकालीन

सामान्य विवरण

बंगाल में कढ़ाई और रजाई (लिहाफ़) पर अत्यंत मनमोहक कढ़ाई की लोक प्रथा है। इस प्रथा का नाम **'कन्था'** है। प्रयोग न की जाने वाली पुरानी साड़ियों तथा धोतियों पर कन्था बनाई जाती है। इन्हें मोटा (भारी) बनाने के लिए जोड़कर सीं दिया जाता है। बंगाल में सभी श्रेणी की महिलाएं यह कार्य करती हैं। विशेषतः व द्ध महिलाएं अपने अतिरिक्त समय में यह काम करती हैं। रंगीन धागों से पुरानी साड़ियों के बॉर्डर (किनारों) पर कन्थाओं को साड़ी की सतह से सीं दिया जाता है। साड़ियों की सतह पर अलग–अलग तरह की परिकल्पना की जाती है। रज़ाइयाँ (लिहाफ़), शादी की चटाइयाँ, थैले, शीशे तथा गहने–जवाहरातों को ढकने के लिए कपड़ों पर कढ़ाई की जाती है।

कन्थाओं के मोटिफ और डिजायन ग्रामीण प्राकृतिक द श्यों, कर्मकाण्डीय और धार्मिक क्रियाओं (मंडाला), नित्य प्रयोग में आने वाली वस्तुओं, ग्रामीण त्यौहार, सरकस तथा अन्य मनोरंजन प्रदान करने वाले खेलकूद तथा एतिहासिक हस्तियाँ जैसे कि रानी विक्टोरिया से लेनिन तक के चित्रों से लिए जाते हैं। इन कन्थाओं के मोटिफ यह स्पष्ट करते हैं कि इसके कलाकार यद्यपि प्रायः अनपढ़ होते हैं लेकिन इनमें अपने आसपास की वस्तुओं को गौर से देखने की निरीक्षण शक्ति होती है।

सूचीबद्ध कन्था एक प्रकार की साड़ी है जो एक विशिष्ट पारम्परिक शैली तथा तकनीक से सिली होती है। इनके मोटिफ विभिन्न प्रकार के पशु तथा मानवी आकृति के रूप होते हैं। साड़ी के आधार गुलाबी रंग को विभिन्न रंगों के धागों से चेन स्टिच (श ंखलाबद्ध धागों की कढ़ाई) पद्धति से कढ़ाई की जाती है। इसमें सफ़ेद, हरा, बैंगनी, लाल, भूरा, पीला तथा काले रंग का प्रयोग किया जाता है।

राजा जैसा दिखने वाला व्यक्ति घोड़े पर बैठा है, उसके सिर पर छाता (छत्र) लगा हुआ है और उसके हाथ में विशेष प्रकार की चिड़ियाँ तथा मधुमक्खियाँ मोटिक के तौर पर प्रयोग की गई हैं। इस मोटिफ में कालीघाट पटचित्र का प्रभाव बहुत स्पष्ट है।

पाठगत प्रश्न 4.1

1. कन्था का प्रारूप एवं प्रेरणा का क्या स्रोत है?
2. उन उपयोगी वस्तुओं की सूची बनाइए जिन पर कन्था की कढ़ाई की जाती है।
3. दो पंक्तियों में कन्था साड़ी का वर्णन कीजिए।
4. कन्था को किस लोककला से प्रेरणा मिली है?

टिप्पणी

पाठांत अभ्यास

1. लोककला क्या है? यह कला ग्रामीण समाज को किस प्रकार सहायता पहुंचाती है?
2. किसी एक फर्श पर सजावट करने वाली लोककला शैली का वर्णन कीजिए। यह भी बताइए कि उसकी तैयारी कैसे की जाती है?
3. कन्था कढ़ाई के विषय में संक्षेप में एक अनुच्छेद लिखिए।
4. फुलकारी शैली के विषय में संक्षेप में लिखिए।

आपने क्या सीखा

भारतीय लोक कलाकार अपने प्रयोग के लिए उपयोगी वस्तुओं तथा आस–पास, घर, फर्श, दीवार तथा चौक की सुंदर सजावट करते हैं। भारत में विभिन्न प्रकार की लोककलाएं पाई जाती हैं। उदाहरणार्थ : चित्र, मूर्तिकला, खिलौना, वेशभूषा, बर्तन तथा फर्नीचर बनाना। भारत के हर एक गांव की अपनी लोककला शैली है। इन सब में कुछ शैलियां तो बहुत प्रसिद्ध हैं। जैसे **कलमकारी, कोलम, मधुबनी** एवं **कालीघाट, फुलकारी,** कन्था तथा अन्य बहुत–सी लोक–कलाएं। कोलम फर्श सजाने की कला है जबकि फुलकारी तथा कन्था कपड़ों पर कढ़ाई का काम है। मधुबनी, काली घाट तथा कलमकारी चित्रकारी के लिए प्रसिद्ध हैं। इन लोक कलाओं की प्रस्तुति में कलाकार पीढ़ी–दर–पीढ़ी उन्हीं परिकल्पनाओं तथा प्रेरक प्रसंगों का प्रयोग करते रहते हैं। कोलम कलाकार प्रकृति की विभिन्न वस्तुओं को प्राथमिकता देते हैं तथा बंगाली महिलाएं कन्था में मानवी तथा पशुओं की आकृतियों का प्रयोग करना पसंद करती हैं।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

4.1 1. अल्पना, रंगोली तथा कोलम

2. ज्यामितीय तथा फूल

3. सतह को गीला करना

   मोटे चावल के पाउडर को रंगों के साथ मिश्रण करके प थ्वी पर बनी हुई आकृति को रंगों से भरते रहना।

4. मटके (घड़े) लैम्प तथा नारियल के पेड़

टिप्पणी

4.2 1. फूलों का काम

2. कपड़ा तथा चमकीला रेशम

3. स्वर्णिम (सुनहरा)

4. समतल तथा खड़े हुए टांके (सिलाई, कढ़ाई के)

4.3 1. ग्रामीण प्राकृतिक चित्र, कर्मकाण्डी मंडाला, नित्य के जीवन उपयोग की आसपास की वस्तुएं, ग्रामीण त्यौहार, सरकस तथा ऐतिहासिक ख्याति के व्यक्ति

2. लिहाफ़ (रज़ाई, शादी की चटाई, थैले, शीशों, आभूषणों के आवरण, इत्यादि)

3. श्रंखलाबद्ध टांके तथा सफेद, हरे, बैंगनी, लाल, भूरा, पीला तथा काले आकार के घोड़े, राजा, चिड़िया तथा मधुमक्खियाँ, इत्यादि।

4. काली घाट पटचित्र।

5

पुनर्जागरण (नवजागरण)

रिनैसेंस (Renaissance) का अर्थ पुनर्जीवन या पुनर्जागरण है। यह 14वीं शती से 17वीं शती में कला, वास्तुकला तथा साहित्य के पुनर्जागरण का चित्रण करता है। पुनर्जागरण यूनान (ग्रीस) तथा रोम के प्राचीन/पुरातन प्रतिष्ठित संस्कृति की ओर पुनरुत्थान के साथ शुरू होता है। इस काल को नए प्रयोगों, नए तरीके की विवेचन शक्ति, नए नियम तथा नई खोजों का युग माना जाता है। इसी कारण इस युग को **'जागरण का युग'** माना जाता है। इसी कारण पुनर्जागरण **प्राथमिक** से **उच्च पुनर्जागरण** तथा अन्त में **अति पुनर्जागरण** के रूप में फैला।

यद्यपि 14वीं शती के पुनर्जागरण में **डुच्चो** (Duccio) तथा **मासाच्चीयो** (Masaccio) नामक लब्धप्रतिष्ठित कलाकारों का उदय हुआ जिनके पास शरीर रचना से संबंधित ज्ञान तो कम था, लेकिन 12वीं शती से 16वीं शती के दौरान पश्चिम यूरोपीय वास्तुकला को वर्णन करने की मेघा शक्ति थी। यही कारण है कि उन्होंने अपने पेंटिंग में वैज्ञानिक साम्य और द ष्टिकोण को अच्छी तरह से चित्रित किया। इस युग के कलाकारों में शारीरिक संरचना के ज्ञान का अभाव था, फिर भी उनकी चित्रकला में वैज्ञानिक अनुपात तथा अवलोकन का गुण देखने को मिलता है। 15वीं शती के पुनर्जागरण काल में कला तथा प्रकृति में सन्तुलन एवं समन्वय पर पर्याप्त जोर दिया गया है। प्रकाश एवं छाया, संक्षिप्तिकरण तथा परिद श्य की सम्पूर्णता का पूरा ध्यान रखा गया है। इस युग के बहुत प्रसिद्ध कलाकारों में **लियोनार्डो डा भिन्ची, रैफेल** तथा **माइकिल एन्जलो** का जिक्र किया जाता है। व्यवहारवादी कलाकारों ने उच्च पुनर्जागरण युग के सिद्धान्तों की दीर्घरूपता को असंगत ठहराया। इस स्तर पर मानवीय संवेगों, भाव–भंगिमाओं पर शारीरिक संरचना से अधिक महत्व दिया गया था।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद, आपः

- पुनर्जागरण काल के विकास की प्रक्रिया का वर्णन कर सकेंगे;
- इस युग के विकास का विवरण दे सकेंगे;
- इस युग के कलाकारों तथा उनकी कृतियों के विषय में लिख सकेंगे; और
- सूचीबद्ध कला के कार्यों को पहचान सकेंगे।

वीनस का जन्म

टिप्पणी

5.1 वीनस का जन्म

शीर्षक	:	वीनस का जन्म
कलाकार	:	सैंड्रो बोतिचेल्ली (Sandro Botticelli)
माध्यम	:	केन्वस पर डिस्टैम्पर
काल (समय)	:	1485–1486
शैली	:	पुनर्जागरण काल
संकलन	:	फ्लोरेंस में गैलेरिया देगली उफीज़ी (Galleria degli Uffizi in Florence)

सामान्य विवरण

1486 के आसपास **सैंड्रो बोतिचेल्ली** (Sandro Botticeli) ने **'वीनस का जन्म'** नामक चित्र बनाया। दूसरी शती के महान प्राचीन यूनानी (ग्रीक) कलाकारों की श्रेष्ठतम कृतियों से प्रेरणा पाकर बनाए गए चित्रों में इसकी गणना की जाती है। प्राचीन ग्रीक कलाकारों की प्रेरणा से बनी यह कलाकृति पुनर्जागरण की सबसे बड़ी मिसाल है। इस चित्र में ग्रीस की प्राचीन देवी **'वीनस'** को सीपी में से पैदा होते हुए दिखलाया गया है। निर्वस्त्र देवी सांसारिक प्रेम के स्थान पर आध्यात्मिक प्रेम को निरूपित करती है। सौन्दर्य तथा सत्य के प्रतीक के रूप में वह (वीनस) एक पूरी वयस्क स्त्री के रूप में दिखाई देती है। इसी चित्र में एक ऋतुओं की देवी उपस्थित होती है जो वीनस को फूलों से कढ़ा हुआ (कसीदा किया हुआ) कपड़ा देती है जिससे वह अपना शरीर ढक सके। दूसरी ओर पवन देव जैसे देवदूत वायु को प्रवाहित करते हुए दिखाई देते हैं। वीनस इन दोनों के बीच में विनयशील मुद्रा में खड़ी है जिसको देखकर प्राचीन गोथिक कला तथा मूर्तियों का स्मरण होता है। वीनस की शारीरिक संरचना पूर्णरूप से प्राचीन यथार्थवाद का प्रदर्शन नहीं है, क्योंकि वीनस की गर्दन लम्बी दिखाई गई है तथा बायां कन्धा असामान्य तरीके से किसी कोण पर झुका हुआ है। उसके शरीर के अंग पतले और लम्बे हैं। अप्राकृतिक प्रकाश के प्रयोग से चित्र में कोमल तथा शान्तिमय सौन्दर्य का आभास होता है।

पाठगत प्रश्न 5.1

(क) बोतिचेल्ली के चित्र 'वीनस का जन्म' में क्या दिखाया गया है?
(ख) इस चित्र में वीनस किस प्रतीक के रूप में चित्रित की गई है?
(ग) वीनस की शारीरिक संरचना कैसी है?
(घ) इस चित्र में प्रकाश का क्या रूप है?

5.2 मोनालिसा

शीर्षक	:	मोनालिसा
कलाकार	:	लिओनार्डो डा भिन्ची
माध्यम	:	पहाड़ी लकड़ी पर तैलीय रंग
समय	:	16वीं शताब्दी
शैली	:	पुनर्जागरण कालीन
संकलन	:	लूभ संग्रहालय (पेरिस)

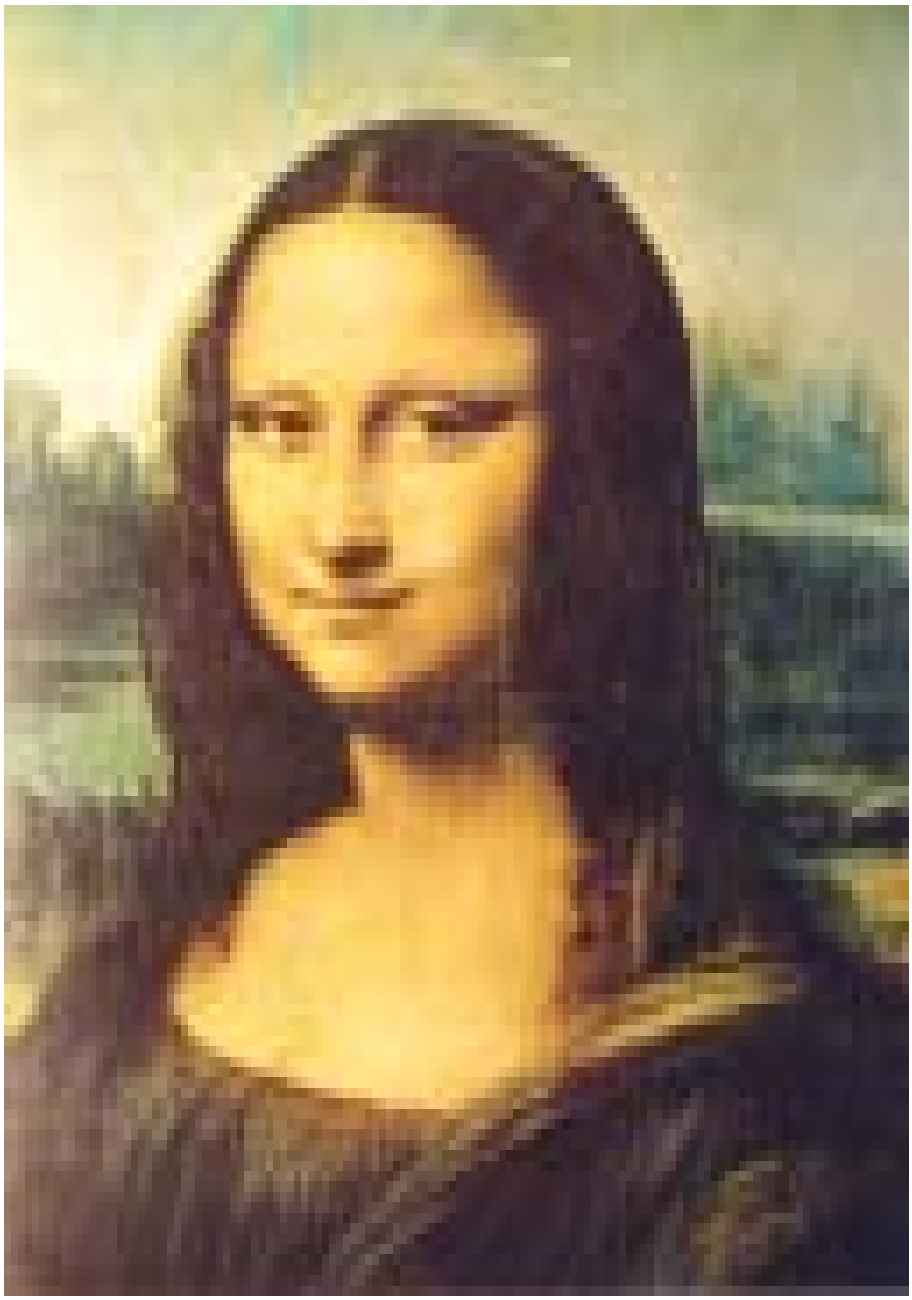

मोनालिसा

टिप्पणी

सामान्य विवरण

लिओनार्डो डा भिन्ची (1452–1519) एक इतालवी (इटालियन) चित्रकार था। उसे एक वैज्ञानिक तथा कलाकार के रूप में जाना जाता है। उसकी विभिन्न प्रसिद्ध कलाकृतियों में, **'लास्ट सपर'**, **'वर्जिन ऑफ रॉक'** और **'मोनालिसा'** विशेष रूप से विश्वव्यापी ख्याति की हैं। मोनालिसा को 16वीं शताब्दी में पहाड़ी लकड़ी पर तैलीय माध्यम में बनाया गया था। यह चित्र एक महिला का है जिसके चेहरे पर एक ऐसी रहस्यात्मक मुस्कराहट है, मानो वह दर्शक का स्वागत कर रही हो। **लियोनार्डो** ने इस चित्र को **पिरामिड डिज़ाइन** (स्तम्भीय डिज़ाइन) में बनाया है जिसमें उसके जुड़े हुए हाथ आधार का काम करते हैं। प्रकाश और छाया के प्रयोग में नाटकीय विषमता है। चेहरा बाल, घूंघट तथा छाया जैसे विभिन्न तथ्यों से उद्दीप्त है। मोनालिसा के चित्र में उसके चेहरे पर बाल कहीं नहीं दिखाई देते हैं। भवें तथा पलकें तक नहीं दिखाई देतीं। फिर भी महिला के चित्र के चेहरे पर मुस्कुराहट उसकी आंखों को देखने से बहुत स्पष्ट दिखाई देती है। उसके मुंह पर देखने से यह मुस्कुराहट इतनी स्पष्ट नहीं दिखाई देती। इस चित्र के पार्श्व में एक विशाल प्राकृतिक द श्य दिखाई देता है जिसमें बर्फ से ढके पहाड़, घाटी तथा तिरछी नदी चित्रित हैं। मोनालिसा के चित्र के निरूपण में **चित्रकार लिओनार्डो** की मनुष्य को प्रकृति से जोड़ने की सूक्ष्म द ष्टि परिलक्षित होती है।

पाठगत प्रश्न 5.2

(क) भिन्ची ने किन विभिन्न कला–क्षेत्रों में अपना योगदान दिया?
(ख) मोनालिसा की इतनी प्रशंसा क्यों की जाती है?
(ग) इस चित्र की प ष्ठभूमि क्या है?
(घ) मोनालिसा को किस माध्यम में बनाया गया है?

5.3 पीएता (PIETA)

शीर्षक	:	पीएता (Pieta)
कलाकार	:	माइकल एन्जेलो (Michael Angelo)
माध्यम	:	संगमरमर मूर्ति
समय	:	1498 से 1499
शैली	:	पुनर्जागरण
संकलन	:	सेंट पीटर (St. Peter), रोम

सामान्य विवरण

माइकल एन्जेलो द्वारा सन् 1498–99 में **पीएटा** की यह मूर्ति निर्मित की गई है। इसे संगमरमर की एक ही शिला से बनाया गया है। इस प्रसिद्ध मूर्ति में **''कुमारी मैरी''** को निर्जीव यीशु के शरीर को गोदी में लिए हुए दिखाया गया है। माँ बैठी है तथा यीशु म तावस्था में माँ की गोद में है। मूर्तिकार की कला में पुनर्जागरण युग के सौंदर्य का प्राचीन आदर्श तथा कलाकार की अपनी अन्तर्द ष्टि एवं अभिव्यक्ति की समन्वयात्मक एवं संतुलित

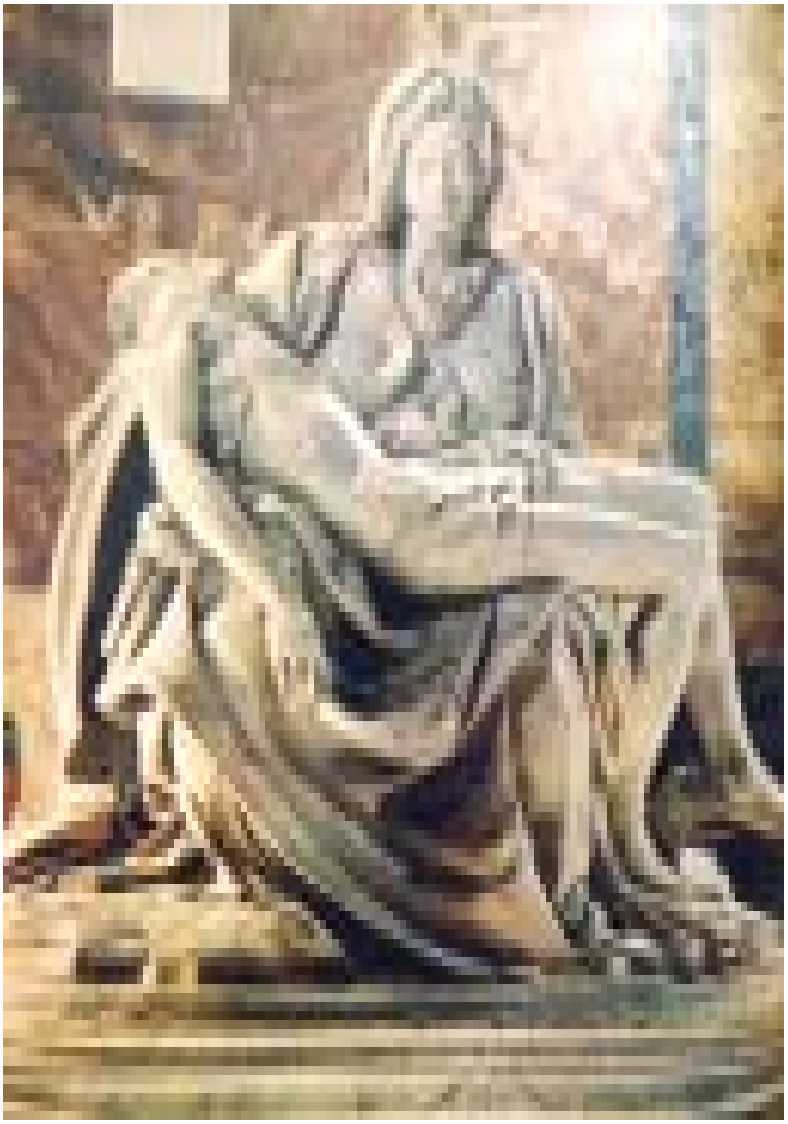

पीएता

टिप्पणी

व्याख्या है। इस वास्तु संरचना (ढांचे) की आकृति स्तम्भीय है। यहाँ पर कलाकार (मूर्तिकार) ने मडोना की शुचिता सिद्ध करने के लिए मडोना को उसके पुत्र (यीशु) से कम उम्र का दिखाया है। **माइकिल एन्जेलो** की यह मूर्ति रचना सबसे उत्कृष्ट और परिष्कृत है। मूर्ति के सजे वस्त्रों में अद्भुत प्रवाह है तथा शारीरिक संरचना अद्भुत है। **माइकल एन्जेलो** द्वारा बनाए गए **डेविड, मोसिस (David Moses)** तथा रोम में स्थित सिस्टाइन (Sistine) चर्च की छतों पर गीले प्लास्टर पर बनाए गए भित्ति–चित्र बहुत मशहूर हैं।

पाठगत प्रश्न 5.3

(क) पीएता (Pieta) की विषय वस्तु क्या है?
(ख) पीएता (Pieta) में कितनी आकृतियाँ प्रयुक्त हुई हैं? उनके नाम लिखिए।
(ग) पीएता (Pieta) का मूल ढांचा क्या है?

5.4 दि नाइट वाच (THE NIGHT WATCH)

शीर्षक	:	दि नाइट वाच (The Night Watch)
कलाकार	:	रेमब्रां (Rembrandt)
माध्यम	:	कैन्वास पर तैलीय रंग
समय	:	1642
शैली	:	पुनर्जागरण (बैरोक)
संकलन	:	हॉलैन्ड, एम्सटरडम (Amsterdam) में रिक्स संग्रहालय।

सामान्य विवरण

रेमब्रां (Rembrandt) एक डच चित्रकार था। वह एक यथार्थवादी था। उसके अधिकांश चित्रों में हम प्रकाश एवं छाया का रहस्यवादी प्रदर्शन देखते हैं। इस प्रकार से उसके चित्रों में चित्र की आत्मा का अधिक प्रदर्शन होता है। 1640–1642 के बीच रिमब्रा ने **'दि नाइट वाच'** का चित्रण किया। काफी समय तक यह चित्र गहरी वारनिश (रोग़न) से पुती हुई पड़ी रही जिससे लोगों को ग़लत संदेश मिला कि चित्र में रात्रि के किसी द श्य का वर्णन किया गया है परन्तु जब 1940 में वारनिश (रोग़न) हटाया गया तो यह पता लगा कि वह चित्र दिन के उजाले जैसा प्रकाशमान था।

यह चित्र एक युवा कप्तान को अपने अधीनस्थ लेफ्टिनेन्ट को अपनी कम्पनी के गैर सैनिकों को वहाँ से चले जाने के आदेश देते हुए दर्शाता है। इस चित्र में प्रकाश तथा छाया का बड़ा प्रभावशाली प्रयोग हुआ है। कप्तान काली वर्दी पर लाल पेटी बांधे हुए है। लेफ्टिनेन्ट तथा एक छोटी लड़की पीली ड्रैस पहने हुई दिखाई गई है। ये रंग भी विजय के प्रतीक हैं। लड़की की पेटी (वेल्ट) से एक सफ़ेद मरा हआ चूजा लटक रहा है जो दुश्मन की पराजय को दर्शाता है। प ष्ठभूमि में एक ड्रम बजाने वाला सिपाही प्रयाण में गति और शक्ति भरने के लिए खड़ा हुआ है। यह चित्र अभिव्यक्ति के साथ पारंपरिक सैन्य चित्रों का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

दि नाइट वाच

पाठगत प्रश्न 5.4

(क) रेमब्रां (Rembrandt) की चित्रकला की मुख्य विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

(ख) रेमब्रां (Rembrandt) के चित्र 'दि नाइट वाच' (The Night Watch) के विषय में एक संक्षिप्त अनुच्छेद लिखिए।

(ग) यह कला चित्र क्या दर्शाता है?

(घ) जब चित्र पर से वारनिश (रोगन) हटाया गया तो क्या देखने को मिला?

आपने क्या सीखा?

पुनर्जागरण का अर्थ है पुनर्जन्म। यह शब्द प्राचीन यूनान (ग्रीस) की प्राचीन सभ्यता के पुनर्जागरण की ओर संकेत करता है। यह युग तीन हिस्सों में बंटा हुआ है – **प्राथमिक पुनर्जागरण, उच्च पुनर्जागरण** तथा **अति पुनर्जागरण** (Baroque)। इस युग की कला में मानवीय शारीरिक संरचना पर सुधार के परिप्रेक्ष्य में काफी जोर दिया गया है। कला में स्तम्भीय आकृति का प्रयोग किया गया है।

कला की संरचना तथा नाटकीय प्रकाश एवं छाया का मिश्रण इस युग की विशेषता है, इस युग के प्रमुख कलाकारों में **मासाच्चीयो, बोतिचेल्ली, लियोनॉर्दो डा-भिन्ची, रैफेल, माइकेल एंजेलो, रेमब्रां, रूबेन्स** आदि हैं।

पाठांत अभ्यास

1. पुनर्जागरण का क्या अर्थ है? इस युग की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
2. वीनस का जन्म में 'वीनस' को किस प्रकार प्रस्तुत किया गया है?
3. मोनालिसा (Monalisa) चित्र का वर्णन कीजिए।
4. पीएता (Pieta) पर एक संक्षिप्त नोट लिखिए।
5. दि नाइट वॉच (The Night Watch) नामक चित्र का वर्णन कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

5.1 (क) पानी में सीपी से वीनस को निकलते हुए।

(ख) वीनस सौन्दर्य तथा सच्चाई की प्रतीक है।

(ग) यह प्राचीन यथार्थवाद का प्रदर्शन नहीं है। यह थोड़ी–सी लम्बी है।

(घ) कोमल और शांतिमय सौंदर्य

5.2 (क) चित्रकार, वैज्ञानिक

(ख) एक रहस्यमय मुस्कान जिससे लगता है कि दर्शक का वह स्वागत कर रही है।

(ग) पहाड़, धारा तथा नदी के साथ प्राकृतिक द श्य

(घ) पहाड़ी लकड़ी पर तैलीय रंग

5.3 (क) कुंआरी मैरी (Mary) म त यीशु को गोद में लिए हुए।

(ख) दो, मैरी तथा यीशु

(ग) सूची स्तम्भीय

5.4 (क) प्रकाश एवं छाया के खेल का रहस्य।

(ख) रात्रि का द श्य न होकर दिन का द श्य।

(ग) युवक कप्तान अपने अधीनस्थ लैफ्टिनैंट को अपनी टुकड़ी को प्रयोग करने का आदेश देते हुए।

(घ) 1940

6
प्रभाववाद

'प्रभाववाद' कला विषयक एक ऐसा आन्दोलन था जिसने प्रतिदिन के जीवन की सादगी और सरलता से प्रेरणा ली। 1874 में इस कला समूह की पहली प्रदर्शिनी के अवसर पर किसी आलोचक ने इस कला को **'प्रभाववाद'** का नाम दिया। प्रभाववाद के कलाकारों ने एक शैली अथवा आन्दोलन को अपनाया जिसमें वस्तुओं पर प्रकाश के प्रभाव का संबंध होता है। ये कलाकार अपने कार्यस्थल (स्टूडियो) से बाहर आए तथा उन्होंने खुले उन्मुक्त वातावरण में चित्रकारी प्रारंभ की। उनका प्रयास था कि शीघ्रता से वे उस प्रभाव का स जन करें जो कुछ उन्होंने द श्य संसार में देखा और महसूस किया। ये कलाकार प्राकृतिक द श्यों को जिसमें प्रकाश तथा रंगों का प्रभाव प्रायः बदलता रहता है, अपनी कल्पना शक्ति से स्वतन्त्रतापूर्वक तथा नैसर्गिक रूप से अपनी कला में समेट लेना चाहते थे। प्रभाववादी कला का आगमन वर्तमान कला तथा प्राचीन कला के बीच एक बड़े विच्छेद के रूप में हुआ। अधिकांश आन्दोलनों की भांति प्रभाववाद पारम्परिक तथा शास्त्रीय मानदण्डों के विरुद्ध एक विद्रोह था। प्रायः ऐसा जनसहयोग के आधार पर होता है। इस युग के कलाकार नदियाँ, तालाब, बन्दरगाह, नगरीय द श्य तथा मानवी स्वरूपों के प्रति बहुत आकर्षित थे। इस आंदोलन के प्रणेता कलाकारों में **क्लॉड मॉने** (Claude Monet), **इदुआर्दो मॉने** (Eduardo Manet), **ऑगस्ट रेनोया** (Auguste Renoir) और **एडगर देगा** (Edgar Degas) थे।

प्रभाववाद के बाद के कलाकारों में उस समय की कला में प्रभाववाद का विस्तार एवं उनकी कमियों का निषेध था। यह बात अलग है कि इस युग में कलाकार ने विविध रंगों के प्रयोगार्थ ब्रश का प्रयोग जारी रखा। इस युग में वास्तविक जीवन से सम्बद्ध विषयों को प्राथमिकता मिली तथापि कलाकारों ने ज्यामितीय आकारों अथवा विकृत आकारों के माध्यम से अपने आन्तरिक भावों को अभिव्यक्ति दी। **जॉर्ज सूरा** (Georges Seurat) तथा उसके अनुयायियों ने बिन्दु चित्रण के प्रति अपना आकर्षण दिखलाया अर्थात छोटे–छोटे रंगों के बिन्दुओं के व्यवस्थित रूप से प्रयोग किए। **पॉल सेजान** (Paul cezanne) ने चित्रकारी में परिमाण तथा आकार की अनुभूति की ओर रूझान दिखलाया। जबकि **गगैं** (Gauguin) तथा **विन्सेंट वॉन गग** (Vincent Van Gogh) ने रंगों तथा ब्रश के कंपन तथा घुमाने से अपनी भावनाओं तथा मानसिकता को सशक्त अभिव्यक्ति दी।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद, आपः

- कला के इन आन्दोलनों के मुख्य लक्षण को पहचान सकेंगे;

वाटर लिलिज

- प्रभाववादी युग में विभिन्न चित्रकारों की कला की पहुंच के प्रयोग के अन्तर को समझ सकेंगे;
- सूचीकृत कलाकारों की शैली का वर्णन कर सकेंगे;
- प्रभाववाद के जन्म का वर्णन कर सकेंगे; और
- इन विभिन्न कला आन्दोलनों के प्रणेता कलाकारों के बारे में बता सकेंगे।

6.1 वाटर लिलिज़ WATER LILIES

शीर्षक : वाटर लिलिज़ (Water Lilies)
कलाकार : क्लॉड मॉने (Claude Monet)
माध्यम : तैलीय रंग
समय : 1899
शैली : प्रभाववाद
संकलन : नेशनल गैलरी, लन्दन

सामान्य विवरण

सभी प्रभाववादी कलाकारों में **क्लॉड मॉने** (Claude Monet) सबसे अधिक प्रतिबद्ध तथा सहज एवं स्वाभाविक कलाकार था जिसने प्रकृति के बदलते मिज़ाज को अपनी कलाकृतियों में उतारा है। उसका जन्म 14 नवम्बर 1840 को पेरिस में हुआ। प्रकृति के विभिन्न प्रभावों से परिचय के लिए और फिर अपनी कला में उतारने के लिए बिना थके वह लगभग सारे जीवन यात्रा ही करता रहा। उसे आकर्षक एवं मुग्धकारी फूलों के प्राकृतिक द श्यों के चित्रण के लिए बड़ी श्रद्धा से याद किया जाता है। इन चित्रों में भूचित्र, नावों के साथ नदियाँ, समुद्रिक द श्य तथा पहाड़ी (पत्थरीला) किनारे दर्शनीय हैं। उसने **पानी के बाग** (Water gardens) के अनगिनत चित्र बनाए जिससे उसकी महान पहचान हुई। **वाटर लिलिज़** (Water Lilies) चित्रों की श ंखला है जो 1899-1900 में बनी तथा जिसमें तालाब के उस पार जापानी पुल का चित्रण है। बाद में उसकी कलाकृतियों में जापानी पुल एक प्रमुख विषय बन गया। उसके लगभग सभी चित्रों में आसमान लगभग नदारद है लेकिन उसने आसमान को चमकीले रंगों में प्रभावी रूप से असाधारण गहराई के साथ प्रतिबिंबित किया है। खिलते हुए विभिन्न आकार के लिली फूलों से चित्र के सौदंर्य में व द्धि हो जाती है।

पाठगत प्रश्न 6.1

1. मॉने (Monet) की शैली को क्या कहा जाता है?
2. वॉटर लिलिज़ (Water Lilies) को किसने बनाया है?
3. मॉने (Monet) की तकनीक की शैली क्या है?
4. मॉने (Monet) अपने चित्रों में क्या दर्शाना चाहते थे?
5. मॉने (Monet) के चित्रों में आसमान की क्या भूमिका है?

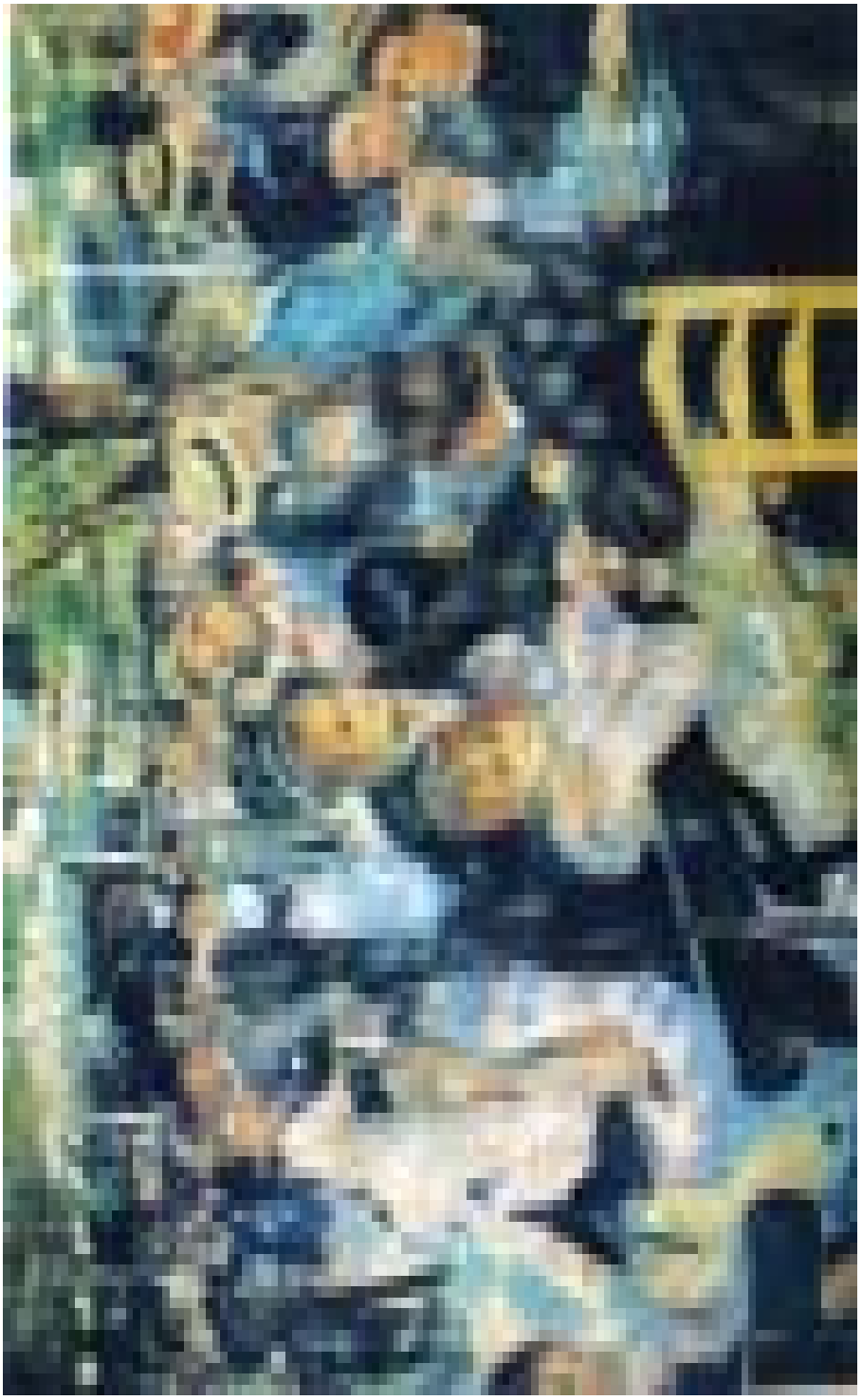

मौलिन दे लॉ गैलेत

6.2 मौलीन दे लॉ गैलेत MOULIN DE LA GALETT

शीर्षक	:	मौलीन दे लॉ गैलेत (Moulin De La Galette)
कलाकार	:	ऑगस्ट रेनोया (August Renoir)
माध्यम	:	कैन्वास पर तैलीय रंग
समय	:	1876
शैली	:	प्रभाववादी
संकलन	:	पेरिस स्थित मसी डे इंप्रेसनिस्मे

सामान्य विवरण

ऑगस्ट रेनोया (Auguste Renoir) (1841-1919) एक फ्रांसीसी कलाकार था। 1876 में उसने **मौलीन दे लॉ गैलेत** (Moulin de la Galette) का चित्रण किया। उस चित्र में युवा लोगों को जिन्दगी का आनन्द लेते हुए दिखलाया गया है। वे लोग पिकनिक मना रहे हैं, न त्य कर रहे हैं तथा पार्टी (प्रीतिभोज) कर रहे हैं। रेनोया (Renoir) की कृतियों में कोमलता, भावात्मकता तथा लुभावनी छवि का चित्रण है। उसने अपनी कृति की संरचना करते समय फारसी समाज की गतिविधियों, वातावरण तथा समाज के प्रतिबिम्ब का सुस्पष्ट चित्र प्रस्तुत किया है। उसने बैंगनी, सफ़ेद तथा नीले रंगों की छाया का ऐसा सामन्जस्य प्रस्तुत किया है जिससे मॉडल की आकृतियां प्रचलित वस्त्रों में सजी लगती हैं। उनके चित्रों में रंगों की ताजगी तथा प्रसन्नता से जीवन की झिलमिलाहट का अहसास होता है। उनके कला–चित्रों में कोमलता, समन्वय तथा संतुलन का सामंजस्य होता है। रेनोया (Renoir) अपने चित्रों में सामूहिक रूपचित्र तथा महिलाओं के मॉडल के गहन अध्ययन दिखलाना चाहता है। वह चित्रों के माध्यम से जीवन के आनन्द के अनभुव की अभिव्यक्ति के संप्रेषण में सिद्धहस्त था।

पाठगत प्रश्न 6.1

1. मौलीन दे लॉ गैलेत (Moulen de la Galette) के चित्रकार का नाम बताइए।
2. मौलीन दे लॉ गैलेत (Moulin de la galette) चित्रकला की शैली क्या है?
3. अपने चित्रों के लिए विषय वस्तु के चयन के पीछे उसकी प्राथमिकता क्या थी?
4. सुखद संयोजन के अलावा उसकी कला में और क्या आकर्षण है?

6.3 डांस क्लास (DANCE CLASS)

शीर्षक	:	डांस क्लास
कलाकार	:	ऐडगर डेगा (Edgar Degas)
माध्यम	:	कैन्वास पर तैलीय रंग
समय	:	1873-1876
शैली	:	प्रभाववाद
संकलन	:	म्यूजियम ऑफ आर्ट, टोलेडो, ओहियो (यू.एस.ए.)

डांस क्लास

टिप्पणी

सामान्य विवरण

पेरिस में जन्मे फ्रान्सीसी कलाकार **ऐडगर डेगा** (Edgar Degas) ने **न त्य कक्षा** (Dance Class) नामक चित्र को 1834 में बनाया था। अन्य प्रभाववादी कलाकारों के विपरीत ऐडगर डेगा (Edgar Degas) ने प्रकृति से अपनी कृतियों के लिए प्रेरणा नहीं ली। उसकी मुख्य रुचि मानवीय उपस्थिति में थी। उसकी मुख्य उपलब्धियों में उसके वे चित्र हैं जिनमें बैले (न त्य नाटकों) की न त्यांगनाएं झालरदार घाघरे (स्कर्ट) में न त्य करने के लिए तैयारी करती दिखाई देती हैं या घूमने वाले स्टेज के चारों ओर घूमती दिखाई देती हैं। मुख्य केन्द्र के बिना उससे हटकर ऐडगर डेगा (Edgar Degas) की कृतियों में बड़ी सहजता की छाप दिखाई देती है। उसका यह प्रयास जिन्दगी का पूरा द श्य प्रस्तुत करता है। कुछ चित्रों में उसने सूर्य प्रकाश के बदले रंगमंच के अप्राकृतिक प्रकाश का प्रयोग किया है।

उसका अत्यन्त प्रिय माध्यम पेस्टल रंग थे। कई बार उसने एक ही चित्र में विभिन्न माध्यम प्रयुक्त किए। कहीं–कहीं वह पेस्टल रंगों की एक परत और चढ़ा देता था जिससे विभिन्न परतों के बीच की पारदर्शिता स्पष्ट रूप से देखी जा सके। डेगा (Degas) ने चित्रकला के अतिरिक्त मूर्तिकला को अपनी लयमयी गति की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया जिससे न त्यांगनाओं की लयात्मक गति को दिखाया जा सके।

पाठगत प्रश्न 6.3

1. डेगा (Degas) दूसरे प्रभाववादी कलाकारों की अपेक्षा भिन्न क्यों है?
2. डेगा (Degas) ने किस माध्यम को अपने चित्रकलाओं में प्राथमिकता दी?
3. डेगा (Degas) ने मूर्ति क्यों बनाई?
4. डेगा (Degas) ने डांस क्लास (Dance Class) को कब चित्रित किया?

6.4 स्टिल लाइफ विद ओनियन्स (Still Life with Onions)

शीर्षक	:	स्टिल लाइफ विद ओनियन्स
कलाकार	:	पॉल सेज़ां (Paul Cezanne)
माध्यम	:	कैन्वास पर तैलीय रंग
समय	:	1895–1900
शैली	:	उत्तर प्रभाववादी
संकलन	:	मसी–द ऑर्से, पेरिस

सामान्य विवरण

पॉल सेजां (Paul Cezanne) (1839-1906) उत्तर प्रभाववादी युग का कलाकार था जिसने अपनी अभिव्यक्ति के लिए नए साधनों की खोज की थी। उसके चित्रों में प्राकृतिक आकारों की सरलता एवं सहजता दिखाई देती है। उसके अनुसार प्रकृति में प्रत्येक वस्तु को ज्यामितीय आकार के ठोस आकार जैसे शंकु, सिलिण्डर तथा घन के रूप में बदले जा सकते हैं। वह सभी पहचाने जाने वाले (परिचित) एवं वास्तविक आकारों को संरचनात्मक ढांचों में बदल देना चाहता था। उसे अमूर्त (निराकार) चित्र कला को प्रारम्भ करने वाले कलाकार के रूप जाना जाता है। इसी कला से बाद में **घनवाद** का

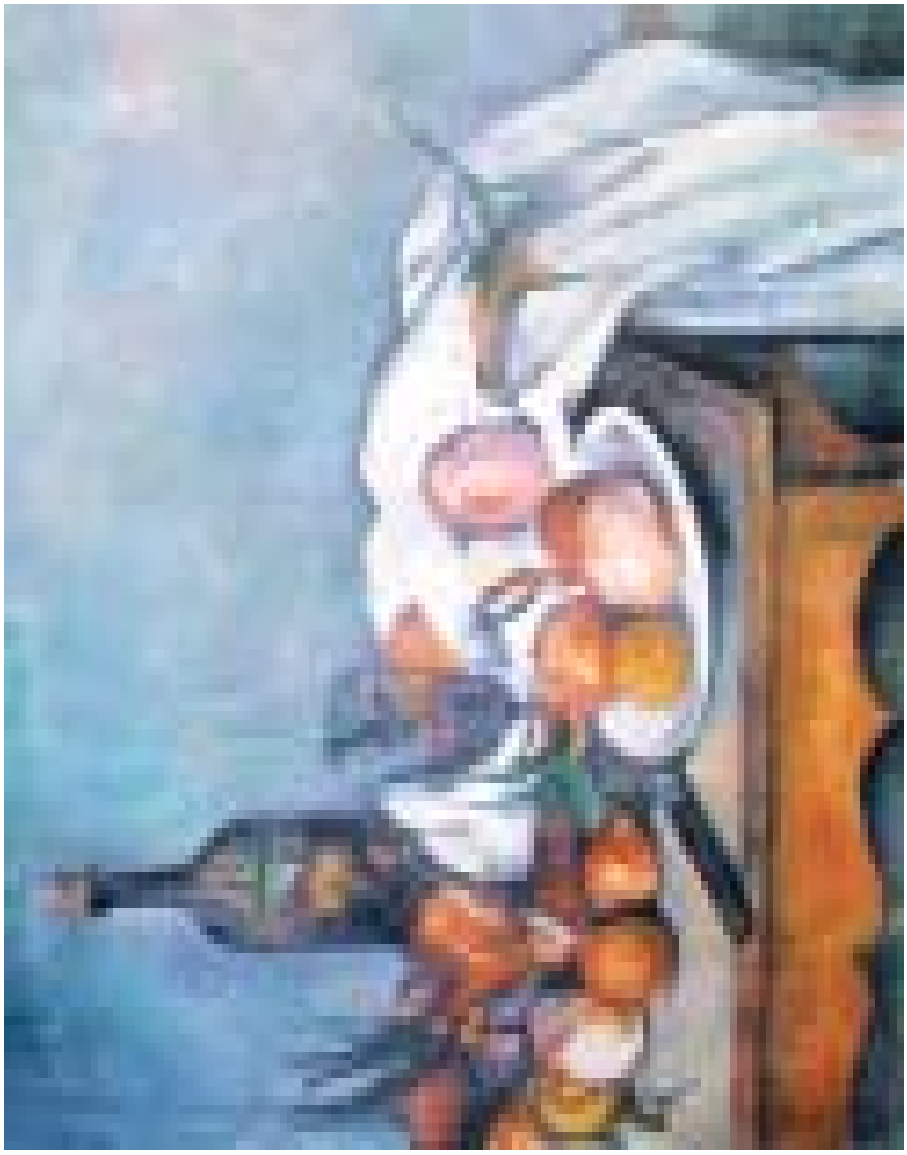

स्टिल लाइफ विद ओनियन्स

टिप्पणी

प्रारम्भ हुआ। इसलिए उसे **''घनवाद का जनक''** कहा जाता है। चाहे उसके चित्रों में जड़ पदार्थों का चित्रण हो या प्राकृतिक का, रूप चित्र हों या साधारण परिचित लोगों के चित्र हों, हर एक चित्र में उसका चुने हुए विषय में गहन अध्ययन का प्रमाण मिलता है। उसके चित्र **'स्टिल लाइफ विद ओनियन्स'** (Still Life with onions) में एक जैसे रंगों के भिन्न–भिन्न रंग सामंजस्य से किसी वस्तु में प्रकाश और छाया को नए अर्थ देकर विभिन्न स्वरूपों को चित्रित किया है। रंगों के आन्तरिक सम्बधों को दर्शाने के लिए उसने साधारण रंगीन स्पर्श का प्रयोग किया है। उसकी कलाकृतियों में सही, सीधे (ऊर्ध्वीकरण) तथा समतल स्तर पर त्रि–विमीय आकारों का सुंदर विन्यास है। लाल और पीले रंगों से प्रकाश में कंपन पैदा की गई है। इसी प्रकार नीले तथा सफेद रंगों के कपड़ों की पर्याप्त संख्या से हवा तथा अन्तरिक्ष का आभास कराया गया है। सेज़ां को हमेशा वर्तमान कला का जनक माना जाएगा क्योंकि इसकी कला शैली 19वीं शती के अंत की प्रभाववादी कला तथा 20वीं शती के प्रारंभ की आधुनिक कला या घनवाद के बीच एक सेतु का काम करती है।

पाठगत प्रश्न 6.4

1. घनवाद (Cubism) के विकास में सेज़ां (Cezanne) का क्या योगदान है?
2. सेज़ां (Cezanne) की कलाकृति स्टिल लाइफ विद ओनियन्स (Still life with Onions) की कोई दो विशेषताएं बताइए।
3. उसकी चित्रकला की शैली क्या है?
4. सेज़ां (Cezanne) को घनवाद (Cubism) का जनक क्यों कहा जाता है?

6.5 स्टारी नाईट (STARRY NIGHT)

शीर्षक	:	स्टारी नाईट (Starry Night)
कलाकार	:	विनसेंट वेन गग (Vincent Van Gogh)
माध्यम	:	तैलीय रंग
समय	:	1889
शैली	:	उत्तर प्रभाववाद
संकलन	:	नेशनल गैलरी, लंदन

सामान्य विवरण

विनसेंट वेन गग (1853-1890) एक **डच कलाकार** (चित्रकार) था। यद्यपि उसके जीवन में परेशानियां, गरीबी तथा उत्साहहीनता ही अधिक थी, लेकिन वह एक अच्छा तथा समर्पित चित्रकार था। उसके तमाम चित्रों में आकार के वर्णन का नहीं बल्कि रंगों को बहुत महत्व दिया गया है। वह प्रकृति के द श्यों को केवल रंगों के माध्यम से ही चित्रित करता था– न कि प्रकाश एवं छाया के द्वारा। उसके चित्र **स्टारी नाईट** में सारा आकाश सितारों (तारों) से भरा हुआ है। उसके चित्रों में सभी रंगों के समन्वय का अच्छा मिश्रण किया गया है। पेन्टिंग (चित्र) में बलखाते हुए बादल, झिलमिलाते सितारे तथा चमकता हुआ चन्द्रमा चित्रित है। पार्श्व में पहाड़ी के नीचे एक छोटा कस्बा है जिसमें गिरजाघर भी है तथा छोटी–छोटी इमारतें भी हैं। चित्र के बायीं ओर अकेले साइप्रस पेड़ के ऊपरी

स्टारी नाईट

भाग को गहरी काली बनावट में दिखलाया गया है। रात्रि में आसमान के तारे अपने ही प्रकाश के क्षेत्र में घिरे दिखाई देते हैं। दर्शक की द ष्टि आकाश में तारों की इस नक्काशी को देखते हुए घूमती रहती है। उसके चित्र **''स्टारी नाईट''** में नीले तथा सफ़ेद रंगों की गहरी पट्टियों द्वारा ऐसा चित्रण किया गया है कि आकाश गंगा के तारे भंवर में घूमते प्रतीत होते हैं। इस चित्र के अध्ययन करने पर कलाकार के आन्तरिक द्वन्द्व तथा निद्राविहीन रात्रि का आभास होता है। **वेन गग** में सरलता तथा संवेदनशीलता की तीक्ष्णता को अभिव्यक्त करने की द ष्टि थी। **वेन गग** को प्रसिद्ध चित्रकार बनाने में उसकी अन्य कृतियाँ जैसे **सूर्यमुखी फूल,** (Sunflower), **पोटेटो ईटर** (Potato Eater), **व्हीट फील्ड** (Wheat Field) तथा **साइप्रेसेस** (Cypresses) ने बड़ा योगदान दिया है। उसके अपने चित्र तथा निजी सोने के कमरे के चित्र का भी उसकी चित्रकला में बड़ा योगदान है।

पाठगत प्रश्न 6.5

1. वेन गग (Van Gogh) के चित्रों में कौन–सी बातें बहुत महत्वपूर्ण हैं?
2. वह किस देश का निवासी था?
3. वेन गग की कुछ प्रसिद्ध कलाकृतियों के नाम गिनाइए।
4. **स्टारी नाईट** चित्र क्या बताता है?

आपने क्या सीखा

'प्रभाववाद' कला के ऐसे आन्दोलन की ओर संकेत करता है जो कलाकार की भावना तथा कल्पना की अभिव्यक्ति कर सकने में सक्षम होता है। प्रभाववादी विचारधारा के कलाकारों ने खुले आसमान के नीचे चित्रकारी करनी शुरू कर दी, जिससे उन्होंने जो देखा या महसूस किया उसकी अभिव्यक्ति कर सकें। इस आन्दोलन के मुख्य कलाकारों में **मॉने, माने, रेनोया** तथा **डेगा** गिने जाते हैं। उत्तर प्रभाववादी कला प्रभाववादी धारा की सीमाओं से मुक्ति का आन्दोलन था। कलाकारों ने अपनी आन्तरिक भावनाओं, ज्ञान और समझ की गहराई तथा रंगों के जोशीले प्रयोग को बहुत महत्व दिया। इस आन्दोलन के अग्रणी कलाकारों में **सूरा, गगैं, सेजां** और **वॉन गग** का नाम उल्लेखनीय है।

पाठांत अभ्यास

1. प्रभाववादी कला का आन्दोलन किस विचारधारा का प्रतीक है?
2. मौलीन दे लॉ गैलेत (Moulin de La Galette) नामक चित्र पर एक लघु टिप्पणी लिखिए।

3. स्टारी नाईट (Starry Night) नामक चित्र में वेन गग (Van Gogh) ने क्या अभिव्यक्ति की है?

4. ''वाटर लिलिज़'' नामक चित्र का वर्णन कीजिए।

5. कुछ शब्दों में स्टारी नाईट नामक चित्र का वर्णन कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

6.1 1. प्रभाववाद

2. मॉने (Monet)

3. प्रकृति में होने वाले परिवर्तन

4. पानी के बाग और जापानी पुल

5. लगभग अविद्यमान

6.2 1. रेनोया (Renoir)

2. प्रभाववाद

3. सामूहिक संरचना, रूपचित्र तथा महिला मॉडल

4. कोमलता, समन्वय एवं सन्तुलन

6.3 1. अन्य प्रभाववादी कलाकारों की भांति उसकी रुचि प्रकृति में नहीं वरन् मानवीय आकारों में थी।

2. पेस्टल (Pastel)

3. लयात्मक गति की अभिव्यक्ति हेतु

4. 1873-1876

6.4 1. प्रकृति के रूप को सरलतापूर्वक शंकु, बेलनाकार तथा घन (cube) जैसी ठोस ज्यामितीय आकृतियों के रूप में प्रस्तुति

2. सरल रंगों के प्रहार (strokes) समतल एवं ऊर्ध्वाधर (सीधा खड़ा हुआ) संरचना में आकाश तथा त्रि–विमीय आकार का चित्रण

3. उत्तर प्रभाववाद

टिप्पणी

4. उसकी शैली उत्तर 19वीं शती तथा प्रारम्भिक 20वीं शती के बीच सेतु का काम करती है।

6.5 1. रंग

2. हॉलैण्ड

3. सन फ्लावर, पोटेटो ईटर

   व्हीट फील्ड, साइप्रेसेस

4. कलाकार का आन्तरिक द्वंद्व तथा निद्राविहीन रात्रि।

टिप्पणी

7

घनवाद, अतियथार्थवाद तथा अमूर्त कला

घनवाद चित्रकला एवं मूर्तिकला की एक शैली है जो लगभग 1907 में पेरिस में प्रारम्भ हुई है। 20वीं शती के प्रारम्भ में यह एक बहुत महत्वपूर्ण प्रव त्ति थी। **सेजां** (Cezanne) घनवाद का पुरोगामी नायक था। उसका कहना था कि प्रकृति में प्रत्येक वस्तु को बेलन या गोला ही समझकर उसके साथ व्यवहार किया जाना चाहिए। इस युग के महत्वपूर्ण कलाकारों में **पिकासो,** (Picasso), **ब्रक** (Braque) तथा **लेजे** (Leger) गिने जाते हैं। उन्होंने विशेष रूप से जड़ पदार्थों, प्राकृतिक द श्य तथा रूपचित्रों को अपने चित्रों का विषय बनाया तथा उन कलाचित्रों के प्रेरक बिन्दु छोटे–छोटे अंशों में विभाजित हो गए। कलाकार का उद्देश्य मुख्य रूप से संरचना पर जोर देना था, भावनाओं पर नहीं। उनका उद्देश्य आकार पर जोर देना था– न कि ज्यामितीय आकारों में प्रयुक्त रंगों की गहराई पर। आकार अत्यधिक अमूर्त तथा सामान्य होते गए। 1920 तक कला का यह आन्दोलन समाप्ति पर आ गया।

अतियथार्थवाद एक दूसरा आंदोलन था, जो 1924 में प्रारम्भ हुआ और 1955 तक चला। अतियथार्थवादी कला के कलाकारों ने अचेतन मन की कल्पना को अपनी कला में प्रयुक्त किया। ये कलाकार अपने को नई विचारधारा के प्रतिनिधि मानने लगे। ये नई विचारधारा को मनोविश्लेषण द्वारा प्रभावित मानते थे। दादवादी (Dadaist) विद्रोह के फलस्वरूप इस क्रान्तिकारी आन्दोलन का जन्म हुआ। **जॉर्जिओ डे चिरिकी** (Giorgio de Chirico) तथा **सल्वादर दाली** (Salvador Dali) इस विचारधारा के बहुत प्रसिद्ध कलाकार माने जाते हैं। अमूर्त कला अभिव्यक्ति विहीन कला के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला शब्द है। यह एक ऐसी कला है जिसके माध्यम से समकालीन संसार को वास्तविक रूप में चित्रित करने के लिए कलाकार तैयार नहीं थे। इसका प्रारम्भ 1910 में हुआ।

अमूर्त कला के पुरोगामी कलाकारों में **कांडिस्की** (Kandinsky), **डेलारूने** (Delarunay) तथा **मॉन्ड्रियन** (Mondrian) को गिना जाता है। इन कलाकारों ने अमूर्त विचारों को मूर्त रूप देने के लिए चित्रों के रूप में स्वरूप देने का प्रयास किया क्योंकि वास्तविक रूप में उन्हें दर्शाना सम्भव नहीं था।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद, आप :

- अमूर्त कला, घनवाद तथा अतियर्थाथवाद के विकास का वर्णन कर सकेंगे;

टिप्पणी

मैन विद वायलिन

- कलाकारों के नाम, कला प्रस्तुति का तरीका तथा प्रयुक्त किया गया सामान, विषय वस्तु तथा सूचीकृत चित्रों के नाम जान सकेंगे;
- सूचीकृत चित्रों के शीर्षक बता सकेंगे;
- अमूर्त कला तथा अन्य कलाओं में भेद कर सकेंगे; और
- अन्य कला आंदोलनों से अमूर्त कला, घनवाद तथा अतियथार्थवाद की कला कृतियों की पहचान कर सकेंगे।

7.1 मैन विद वायलिन (Man With Violin)

शीर्षक	:	मैन विद वायलिन (Man with Violin)
माध्यम	:	कैनवास पर तैलीय रंग
समय	:	1912
आकार	:	100 x 73 सें. मी.
कलाकार	:	पब्लो पिकासो (Pablo Picasso)
संकलन	:	फिलाडेलफिया का कला संग्रहालय

सामान्य विवरण

पब्लो पिकासो (Pablo Picasso) का जन्म 1881 में स्पेन के **मालगा शहर** में हुआ था। वह चित्रकार, मूर्तिकार के साथ–साथ म त्तिका शिल्पी भी था। अपने लम्बे जीवन काल में पिकासो ने अमूर्त संरचना के सिद्धान्तों का अनुसरण किया। वह प्रतीकवाद से बहुत प्रभावित था। **नीली काल अवधि** (Blue Period) 1900-1902 के दौरान पेरिस में उसने अपनी शैली ईजाद की। नीले कैनवास पर नीले तथा हरे रंगों के कारण यह नाम दिया गया। पिकासो ने अपनी **गुलाबी काल अवधि** में (1905-07) काफ़ी प्रगति की। इस समय के दौरान उसने मुख्य रूप से अपने चित्रों में गुलाबी रंग का प्रयोग किया। इसके बाद उस पर अफ्रीकन कला का प्रभाव देखा गया। 1915 से उसने अपने **घनवादी समय** का विकास किया जिससे उसे विश्वस्तर पर ख्याति मिली। घनवाद में मूलरूप से त्रि–विमी आकारों के स्थान पर चौरस नमूनों तथा रंगों के द्वारा चित्र बनाए गए। उन चित्रों में रंग एक–दूसरे रंग को आंशिक रूप से ढंक लेते थे। इस प्रकार के आच्छादन से विभिन्न आकार तथा मानवी शरीर या वस्तुओं को आगे–पीछे से एक ही समय में देखा जा सकता है।

मैन विद वायलिन (Man With Violin) चित्र को 1912 में चित्रित किया गया। यह चित्र घनवाद के विश्लेषणात्मक अध्ययन की अच्छी मिसाल है। वस्तुओं को विभिन्न हिस्सों में बांट दिया गया तथा एक ही समय में चित्र में अन्य विचारों को भी दर्शाया गया है। इस युग के अन्य चित्रों की भांति विभिन्न चित्रित आकारों को पहचाना जा सकता है परन्तु सभी आकार घन के रूप में परिवर्तित हो गए हैं। पिकासो ने आकार को एक नए तरीके से प्रयोग किया है। मानव आकृति जो हाथ में वायलिन पकड़े हुए है, उसे विभिन्न ज्यामितीय आकारों में परिवर्तित कर दिया गया है और फिर टुकड़ों में इकट्ठा किया गया है। इस चित्र में जो रंग प्रयुक्त हुए हैं, वे इस युग के प्रतिनिधि ा रंग हैं। भूरे तथा हरे रंगों का मिश्रण एवं रंगत देखते ही बनता है। इस युग में पिकासो के अधिकांश चित्र इसी प्रकार की तकनीक तथा रंगों से चित्रित किए गए हैं। उसके अनुसार यथार्थ की परिभाषा दूसरी ही थी। उसने यथार्थ को अपने तरीके से परिभाषित किया। उसके अनुसार यथार्थ प्रकृति से भी अधिक यथार्थ है। रंगों तथा अन्य साधनों

टिप्पणी

परसिसटेंस ऑफ मेमोरी

के कुशल और असाधारण प्रयोग ने उसे 20वीं शती का सर्वप्रिय कलाकार बना दिया। उसके सर्वोत्तम चित्रों में **गुयेर्निका** कृति है जो स्पेन के ग हयुद्ध पर आधारित है।

पाठगत प्रश्न 7.1

1. **पिकासो** की दो प्रसिद्ध काल अवधियों को बताइए।
2. **पिकासो** की किस शैली ने उसे प्रसिद्धि दी?
3. **मैन विद वायलिन** (Man with Violin) नामक चित्र कब बनाया गया?
4. गुलाबी काल अवधि में कौन–से वर्ष शामिल हैं?
5. **पिकासो** (Picasso) ने **गुयेर्निका** को किस विषय में चित्रित किया है?

7.2 परसिस्टेंस ऑफ मेमोरी (Persistence of Memory)

शीर्षक	:	परसिसटेंस ऑफ मेमोरी (Persistence of Memory)
माध्यम	:	कैनवास पर तैलीय रंग
समय	:	1931
आकार	:	9½" x 13"
कलाकार	:	सलवादोर डाली (Salvador Dali)
संकलन	:	म्यूजियम ऑफ़ मॉडर्न आर्ट, न्यूयार्क

सामान्य विवरण

सलवादोर डाली (Salvador Dali) अति यथार्थवादी युग का सर्वाधिक प्रसिद्ध कलाकार (चित्रकार) है। वह स्पेन का चित्रकार, लेखक तथा फिल्मकार है। उसने अपने चित्रों में अति यथार्थवादी तकनीक का प्रयोग किया। जिस कला की उसने अपने युवा काल में महारत हासिल की थी, उसी का उसने जीवन के आगामी वर्षो में भी प्रयोग किया। चित्र में आकार का थोड़े समय के लिए प्रयोग करने के बाद उसने अपनी कलाकृतियों में बेतुके, अरीतिक एवं विचित्र विषयों एवं वस्तुओं का चित्रण किया।

परसिसटेंस ऑफ मैमोरी (Persistence of Memory 1931) अति यथार्थवादी आन्दोलन का प्रतिनिधि चित्र है। चित्र में असज्जित (बिना पेड़ों के) प्राकृतिक भू–द श्य तथा शान्ति को चित्रित किया गया है। यह चित्र युद्ध के बाद का द श्य प्रस्तुत करता है जिसमें सारे मनुष्यों के मारे जाने के कारण शून्यता व्याप्त है। इस चित्र में जीवन से संबद्ध यदि कुछ भी वस्तुएं हैं, तो वे विलीन और लुप्त होती घड़ियां हैं। **डाली** के इस चित्र में विलीन होती घड़ियां वास्तविक लगती हैं तथा मानव के अशान्त या विक्षुब्ध मन को दर्शाती हैं। यही सब कुछ उसकी अन्य कलाकृतियों में देखने को मिलता है। **डाली** की अपनी शैली शास्त्रीय तथा सुस्पष्ट है परन्तु उसकी विषय–वस्तु उसके स्वप्नों या दुःस्वप्नों से ली गई है। **डाली** की कृतियों में वस्तुओं का समूहीकरण उन्मुक्त ढंग से किया गया है तथा उनका सांकेतिक अर्थ है। ये कोमल घड़ियाँ नई तथा अप्रिय बिम्ब उभारती हैं। चींटियाँ एक–दूसरे के ऊपर चढ़कर रेंगती हैं मानो सड़े–गले खाने के ऊपर से गुजर रही हों। उनके आकार घड़ी की सतह को पूर्ण रूप से ढंकते हुए हीरे–जवाहरातों के गहनों जैसे

टिप्पणी

ब्लैक लाईन्स

लगते हैं। उसके सारे चित्र एक भिन्न प्रकार की चित्रमय भाषा का स जन करते हैं। डाली का कोई भी चित्र वास्तविकता को प्रस्तुत नहीं करता है। उन चित्रों को देखने से ऐसा लगता है मानो कुछ वस्तुओं को छोड़कर सभी कुछ अस्वाभाविक है।

यद्यपि **डाली** अपनी योग्यता एवं कल्पना के आधार पर एक महान कलाकार माना जाता था तथापि उसका काम करने का तरीका अपना ही था जिससे अरीतिक वस्तुओं का चित्रण ऐसा होता था कि वे वस्तुएं दर्शक को अपनी ओर आकर्षित कर ही लेती थीं। उसका प्रस्तुतीकरण का तरीका ऐसा था कि कभी–कभी वह अपने प्रशंसकों को तथा कला आलोचकों को नाराज़ कर देता था। उसका थियेटर से सम्बन्धित सनकी व्यवहार भी उतना ही विशिष्ट है जितना उसकी चित्रकला विषयक ख्याति; जिससे जनता का ध्यान आकर्षित होता था। उसकी म त्यु 1989 में हुई तथा उसने अपने पीछे **विलावेटिन** (Vilabertin) तथा **लॉर्ज हर्लक्यून** (Large Harlequin) जैसी महान एवं प्रख्यात कलाकृतियाँ विरासत में छोड़ीं। उसी प्रकार **स्माल बॉटल ऑफ रम** (Small Bottle of Rum) तथा **हनी इज स्वीटर दैन ब्लड** (Honey is Sweeter than Blood) उसकी ख्याति प्राप्त कृतियाँ थीं।

पाठगत प्रश्न 7.2

1. **सलवोदार डाली** की शैली क्या थी?
2. उसने क्या तकनीक अपनाई?
3. **डाली** की अति यथार्थवाद की एक कृति का उदाहरण दीजिए।
4. **परसिसटेंस ऑफ मैमोरी** (Persistence of Memory) नामक चित्र में आपको क्या दिखलाई पड़ता है?

7.3 ब्लैक लाइंस (Black Lines)

शीर्षक	:	ब्लैक लाईन्स (Black Lines)
माध्यम	:	कैन्वास पर तैलीय रंग
समय	:	दिसम्बर 1913
आकार	:	4 फीट 3 इन्च X 4फीट 3¼ इंच
कलाकार	:	वैसिली कांडिंस्की (Wassily Kandinsky)
संकलन	:	सोलोमन आर गुगिन्हम म्युजियम, न्यूयोर्क (SolomonR Guggenheim Museium, New York)

सामान्य विवरण

वैसिली कांडिंस्की (Wassily Kandinsky) का जन्म 1866 में रूस में हुआ। वह अपने समय का प्रसिद्ध चित्रकार तथा कला सिद्धान्तवादी माना जाता था। **कांडिंस्की** अमूर्त कला के जन्मदाताओं में से एक है। उसने अ–साद श्यमूलक कला को तीन मुख्य श्रंखलाओं में बाँटा : i) **प्रभाववाद,** ii) **काम चलाऊ प्रबन्ध,** तथा iii) **संयोजन कला**। उसके

चित्र अमूर्तिकरण तथा ज्यामितीय विचारधारा का मिश्रण थे। उसके चित्रों में **अकंपनीड कॉन्ट्रास्ट** (Accompanied Contrast), **येलो अकंपनीमेंट** (Yellow Accompaniment) तथा **एंग्युलर स्ट्रक्चर** (Angular Structure) नामक चित्र बहुत प्रभावशाली हैं। उसके चित्रों का कलाकारों की आगामी पीढ़ी पर बहुत प्रभाव पड़ा।

ब्लैक लाईन्स (Black Lines) नामक चित्र को **कांडिंस्की** (Kandinsky) ने 1913 में बनाया। जैसा चित्र के शीर्षक से संकेत मिलते हैं, ऐसा लगता है कि रेखाएं भारतीय स्याही द्वारा खींची गई हैं। परन्तु वस्तुतः ये रेखाएं काले रंग से खींची गई हैं। इस संयोजन में व्यवस्थानुसार चित्र के एक विशेष कार्नर में खींची गई रेखाओं से एक भिन्न अर्थ निकलता है। इस युग में बने अन्य चित्रों की भांति उसके चित्रों में सरलता तथा शुद्ध रेखा लेख ऐसे चित्रित किए हैं मानो कंकाल (अस्थिपंजर) में मांस हो ही नहीं। रंगीन धब्बे ऐसे प्रतीत होते हैं मानो उन्हें ब्रशों से नहीं वरन विशालकाय हाथों की उंगलियों द्वारा बनाए गए हों। ये धब्बे चित्र में खींची गई रेखाओं तथा उनके प्रभाव से बहुत मेल खाते हैं। **कांडिंस्की** के लिए रेखाएं, आकार तथा रंगों का अपना अलग ही अर्थ है तथा वे अपने क्षेत्रों में स्वतन्त्र रूप से प्रयोग में आते हैं। उसके अधिकांश चित्रों में खींची गई रेखाएं अपूर्ण हैं तथा ऐसा प्रतीत होता है मानो उनकी अपनी ही जिन्दगी है। अपने जीवन के अन्तिम भाग को उसने पेरिस (Paris) में गुजारा तथा 1944 में उसकी म त्यु हो गई।

पाठगत प्रश्न 7.3

1. **कांडिंस्की** का आधुनिक कला में क्या योगदान है?
2. **कांडिंस्की** की तीन प्रमुख चित्र श्र खलाओं के नाम बताइए।
3. **ब्लैक लाइंस** (Black Lines) को उसने कब बनाया?
4. उसकी कला का माध्यम क्या था?

आपने क्या सीखा

अमूर्त कला की बुनियाद के साथ पश्चिमी कला की एक महत्त्वपूर्ण अवस्था का प्रारम्भ माना जाता है। इसके बाद कला के अन्य आन्दोलन प्रारम्भ हुए तथा कला को समझने में लगातार कई परिवर्तन देखे गए। हमें कला में अमूर्त कला का प्रभाव दिखाई देता है परन्तु उसे यथार्थवाद से जोड़ा नहीं जा सकता। कोई भी कला चित्र जो अ–साद श्यमूलक है, उसे अमूर्त कला कहा जाता है। यद्यपि **अमूर्त कला, घनवाद** तथा **अतियथार्थवाद** का जन्म पश्चिम में हुआ तथापि भारतीय कलाकारों पर इसका प्रभाव कई कला चित्रों में देखने को मिलता है।

वैसिली कांडिस्की, सल्वाडोर डाली तथा **पब्लो पिकासो** ने अपनी कला कृतियों के माध्यम से आने वाली सन्तति को प्रेरणा प्रदान की है। इन नए आन्दोलनों में इन

कलाकारों का योगदान कई स्तर पर रहा है। इसके बावजूद वे व्यक्तिपरक रहे। उनकी शैली अपनी ही रही। उनकी कलाकृतियों पर अपने पूर्वकाल की विचारधारा का प्रभाव पड़ा। कला में घनवाद का जन्म एवं पोषण अमूर्तकला के आधार पर हुआ परन्तु **पिकासो** घनवादी कला का प्रतिनिधि कलाकार बना। उसकी चित्रकला एवं मूर्तिकला अपनी इसी शैली के कारण प्रसिद्ध हुई। उसके कला चित्रों में अलग–अलग स्तर पर उस समय का प्रभाव पड़ा तथा इसी कारण से प्रत्येक समय में चित्रित कृतियां एक–दूसरे से भिन्न हैं। **डाली** अतियथार्थवाद के काल में सबसे प्रसिद्ध कलाकार हुए हैं। उनका जीवन बड़ा मनोरंजक तथा विचित्र रहा। अमूर्त कला का प्रारम्भ **वेजिली कांडिस्की** के चित्रों से माना जाता है।

पाठांत अभ्यास

1. घनवाद पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
2. अतियथार्थवाद में **कांडिंस्की** की कलाकृतियों का क्या योगदान है?
3. **कांडिंस्की** की कलाकृति **ब्लैक लाइंस** (Black Lenes) पर एक अनुच्छेद लिखिए।
4. अमूर्तकला पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
5. **पब्लो पिकासो** के बारे में संक्षेप में लिखिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

7.1 1. नीला, घनवाद
2. घनवाद
3. 1912
4. 1905-07
5. स्पेन का ग ह–युद्ध

7.2 1. अतियथार्थवाद
2. अतियथार्थवादी तकनीक
3. परसिसटेंस ऑफ मेमोरी
4. प्राकृतिक द श्य, विलीन होती घड़ियाँ तथा कला

7.3 1. अमूर्त कलाकृतियाँ
2. प्रभाव, तात्कालिक प्रबन्धन तथा संयोजन
3. 1913
4. कैनवास पर तैलीय रंग

टिप्पणी

8

समकालीन भारतीय कला के पुरोगामी कलाकार

19वीं शती के प्रारम्भ में ब्रिटिश राज (शासन) के प्रभाव के कारण भारतीय कला का ह्रास शुरू हो गया जो स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। दस्तकारी तथा भित्ति–चित्रों की तकनीक व लघु–चित्रकला जो कि कला के इतिहास में अद्वितीय मानी जाती थी, उनका लगभग लोप ही हो गया। लघु चित्रों को तो यूरोपियन तैलीय चित्रों ने समाप्त कर दिया। शती के अन्त होते–होते पारम्परिक भारतीय चित्रकला फीकी पड़ने लगी। यही समय था जब भारतीय कलाकारों ने अपनी पैत क कला को सकारात्मक सोच से देखना शुरू किया तथा यूरोपियन पूर्व ब्रिटिश राज के शासन की कला से आगे बढ़ने का प्रयास किया। केरल के **राजा रवि वर्मा** पौराणिक विषयों पर आधारित चित्रकला के लिए प्रसिद्ध थे। उनके तैलीय रंग के चित्रों पर पाश्चात्य कला का प्रभाव दिखाई देता था। दूसरी ओर **अबनींद्रनाथ टैगोर** ने अपनी चित्रकला में एक नई शैली का स जन किया। **नंदलाल बोस, विनोद बिहारी** तथा कुछ अन्य ने उनकी (टैगोर की) नई कला का अनुसरण किया जिसमें नवजाग ति व राष्ट्रीयता की भावना की प्रमुखता थी। इस प्रकार 20वीं शती के पहले आधे भाग में कला के क्षेत्र में बंगाल स्कूल की उत्पत्ति हुई। विषयों के चयन के लिए उन्होंने भारत की प्राचीन तथा पौराणिक कहानियों से प्रेरणा ली। इन कलाकारों ने पाश्चात्य यथार्थवाद को अस्वीकृत कर दिया और भारतीय कला के आदर्शवाद को प्राथमिकता दी। **जामिनी राय** ने अपनी कला में लोक कला को अपनाया। **रबीन्द्रनाथ टैगोर** ने अपनी चित्रकला में अभिव्यक्ति और अभिव्यंजना को प्रस्तुत किया। इन कलाकारों ने भारतीय तथा चीनी शैली का अनुसरण करते हुए पारम्परिक पानी के रंगों तथा तकनीक के साथ प्रयोग किए। उन्होंने अपने प्रयोगों में लघुचित्रों, भित्तिचित्रों तथा लोककला से प्रेरणा ली। बाद में **अम ता शेरगिल** तथा कुछ अन्य कलाकारों ने पाश्चात्य तथा भारतीय परम्पराओं को अपनाया। भारतीय आधुनिक कला के क्षेत्र में **अम ता शेरगिल** का योगदान अद्वितीय है। इस कला क्षेत्र में पहली महिला कलाकार होने का श्रेय **अम ता शेरगिल** को है। समकालीन भारतीय कला के इतिहास में इन सभी कलाकारों ने विशिष्ट कला कृतियाँ बनाईं।

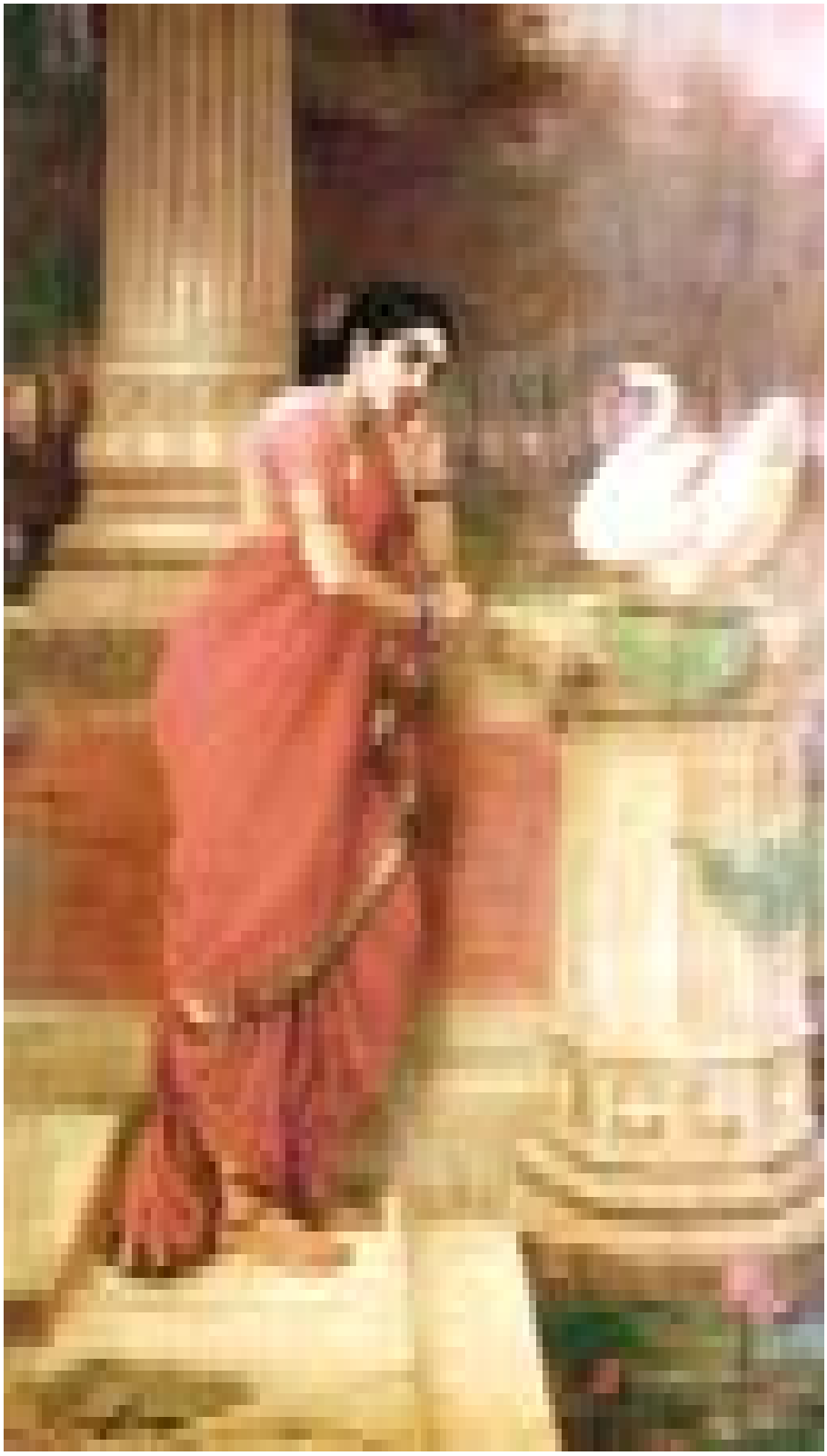

हंस दमयंती

उद्देश्य

इस पाठ के पढ़ने के बाद, आपः

- आधुनिक भारतीय कला के विकास सम्बन्धी आन्दोलनों का वर्णन कर सकेंगे;
- सूचीबद्ध चित्रों की विशेषताओं का वर्णन करके उनकी व्याख्या कर सकेंगे;
- सूचीबद्ध चित्रों के नाम, प्रयुक्त सामान, आकार, विषय–वस्तु तथा सम्बन्धित स्थानों को बता सकेंगे;
- सूचीबद्ध चित्रों के कलाकारों का नाम बता सकेंगे; और
- सूचीबद्ध कलाकारों की कलाकृतियों को पहचान सकेंगे।

हंस दमयंती (Hansa Damyanti)

शीर्षक	:	हंस दमयंती
माध्यम	:	कैनवास पर तैलीय रंग
समय	:	1899
कलाकार	:	राजा रवि वर्मा
संकलन	:	नई दिल्ली स्थित आधुनिक कला का राष्ट्रीय संग्रहालय (National Gallery of Modern Art, New Delhi)

सामान्य विवरण

राजा रवि वर्मा भारत के ख्याति प्राप्त कलाकारों में से एक हैं। केरल के छोटे–से गांव किलिमनूर में उनके जीवन का प्रारम्भ हुआ। एक कलाकार के रूप में **रवि वर्मा** की कल्पना द ष्टि भारतीय कला के इतिहास में एक क्रांतिकारी की थी। **रवि वर्मा** भारतीय कला के क्षेत्र में यूरोपीय विचारधारा वाले कलाकारों के प्रतिनिधि के रूप में उस समय के लोकप्रिय और विशिष्ट कलाकार थे। पानी तथा तैलीय रंगों की अपनी तकनीक के लिए **रवि वर्मा** ने खूब ख्याति अर्जित की। भारतीय पौराणिक कथाओं के विस्त त द श्यपटल पर पौराणिक कहानियों की नायिकाओं को चित्रित किया गया है। **रवि वर्मा** की कृतियों की समस्त श ंखला में पौराणिक नायिकाएँ ही प्रमुख हैं, जो **रवि वर्मा** की कृतियों की विशेषताएँ हैं। **रवि वर्मा** के चित्रों में भारतीय देवी–देवताओं के चित्र विभिन्न घरों तथा तीर्थ मन्दिरों में अभी भी विद्यमान हैं। उनके ये चित्र मुद्रित चित्रों में, कलैन्डरों में, पोस्टरों में तथा अन्य प्रख्यात कलाओं तथा रंगीन शिलामुद्रों पर अंकित/चित्रित हैं। **दुष्यन्त–शकुन्तला**, **नल-दमयन्ती की कथाओं** तथा **महाभारत महाकाव्य** से लिए गए विभिन्न प्रसंग **रवि वर्मा** की कलाकृतियों में विशेष स्थान रखते हैं।

हंस दमयंती (Hansa Damyanti) **राजा रवि वर्मा** की सबसे अधिक प्रसिद्ध कृतियों में से एक है। इसे 1899 में तैलीय रंगों से बनाया गया था और जब इसे मद्रास (आजकल चैन्नई) फाइन आर्ट प्रदर्शनी में पहली बार दिखाया गया तो एक सनसनी फैल गई। इस चित्र में **रवि वर्मा** की पाश्चात्य तकनीक का सफल प्रयोग स्पष्ट दिखाई देता है। यूरोपीय शैली के चित्रों में जो सशक्त अभिव्यक्ति होती थी, उसका आकर्षण ही **रवि वर्मा** की चित्रकला में रूढ़ भारतीय कला के विरोध स्वरूप परिलक्षित होता है।

रवि वर्मा के द्वारा चित्रित सभी आकर्षक और सुडौल स्त्रियों में **दमयंती** को सबसे

ब्रह्मचारीज

टिप्पणी

खूबसूरत स्त्री के रूप में चित्रित किया गया है। चित्र में **दमयंती** लाल रंग की साड़ी पहने हुए है तथा वह अपने प्रेमी **नल** का सन्देश सुन रही है। ये संदेश हंस के माध्यम से सुनाए गए हैं। हंस **नल** के बारे में बताता है तथा **दमयंती** के प्रति उसके प्रेम का बखान करता है। **दमयन्ती** की मौन प्रेम भावना उसकी आंखों की चमक तथा गालों की कांति से अभिव्यक्त हो रही है। उसका रूप कोमल, गरिमापूर्ण तथा सुन्दर है जिसके कारण वह बहुत आकर्षक लग रही है।

रवि वर्मा ने जो विषय चुना है, उसी के अनुरूप **दमयंती** की खड़ी आकृति और उसकी अर्थगर्भित भाव–भंगिमा है। पाश्चात्य कला के प्रभाव में आकर **रवि वर्मा** ने इस चित्र में तैलीय रंगों का प्रयोग किया है। रंगों के मिश्रण की कला की इस तकनीक में **रवि वर्मा** ने अपनी श्रेष्ठता का परिचय दिया है।

रवि वर्मा ने पारंपरिक भारतीय कला और समकालीन तंजावुर विचारधारा तथा पाश्चात्य शास्त्रीय यथार्थवाद के बीच एक कड़ी प्रदान की है। **रवि वर्मा** भारत के केवल एक महान कलाकार ही नहीं हैं, वे एक देशभक्त भी हैं। **राजा रवि वर्मा** का देहावसान 2 अक्टूबर 1906 को हुआ।

पाठगत प्रश्न 8.1

1. **हंस दमयंती** का माध्यम क्या है?
2. चित्र में क्या दर्शाया गया है?
3. **रवि वर्मा** ने कौन–सी कड़ी जोड़ी है?
4. अपनी कला को प्रस्तुत करने में **रवि वर्मा** ने किन तरीकों को अपनाया?

ब्रह्मचारीज (Brahmcharies)

शीर्षक	:	ब्रह्मचारीज (Brahmacharies)
माध्यम	:	कैन्वास पर तैलीय रंग
समय	:	1938
कलाकार	:	अम ता शेरगिल
संकलन	:	नई दिल्ली स्थित आधुनिक कला का राष्ट्रीय संग्रहालय (National Gallery of Modern Art, New Delhi)

सामान्य विवरण

20वीं शती में भारत में समकालीन कला क्षेत्र में **अम ता शेरगिल** की उपस्थिति एक महान घटना मानी जाती है। उनके पिता का नाम सरदार उमराव सिंह शेरगिल था तथा माँ हंगरी की नागरिक लेडी अंतोइनेट थीं। **अम ता** ने अपने जीवन के प्रारम्भिक वर्ष यूरोप में गुजारे तथा पेरिस में उच्च स्तरीय कला की सर्वोत्तम शिक्षा प्राप्त की। उत्तर प्रभाववादी कलाकारों से वह बहुत प्रभावित थीं। उन कलाकारों में **मोदीग्लियानी** (Modigliani) तथा

गौगिन (Gauguin) शामिल थे। वह 1921 में भारत आईं। वह अजन्ता के भित्ति चित्रों तथा कांगड़ा के उत्कृष्ट लघुचित्रों से बहुत प्रभावित हुईं तथा उनसे प्रेरणा प्राप्त की। पात्रों के चेहरे पर जो भाव प्रदर्शित किए वे **अमृता** के अपने निजी अन्वेषण तथा प्रयोग थे। **अमृता** की कलाकृतियाँ आसपास केवल प्रतिरूप ही नहीं है। उन कृतियों में उनका सूक्ष्म दर्शन झलकता है और उनके प्रस्तुतीकरण में रंगों, आकार तथा भावनाओं का अपूर्व संयोजन है। दक्षिण भारत के दौरे से उन्होंने बड़ी प्रेरणा प्राप्त की जिसके फलस्वरूप उन्होंने **'दुल्हन का शृंगार'** (The Bride's Toilette) नामक चित्र बनाया। इसी प्रकार **'ब्रह्मचारी'** (The Brahmcharies) तथा **'बाजार जाते हुए दक्षिण भारतीय ग्रामीण'** (South Indian Villagers going to market) नामक चित्रों की रचना की।

अमृता शेरगिल ने **दि ब्रह्मचारीज** (The Brahmacharies) को 1938 में बनाया। यह चित्र **अमृता** की परंपरावादी दक्षिण भारत में अभी भी प्रचलित हिन्दू प्रथाओं तथा विश्वास/आस्थाओं की समझ का एक सुंदर उदाहरण है। इस चित्र में पांच पुरुष आकृतियाँ दिखाई गई हैं। **अमृता** ने एक आश्रम में कुछ ब्रह्मचारी विद्यार्थियों को देखा। उन्होंने उन ब्राह्मण विद्यार्थियों की सहजता को देखकर अपने चित्र में चित्रित किया जिसके पीछे उन ब्रह्मचारी विद्यार्थियों की हिन्दू आस्थाओं पर पूर्ण विश्वास चित्रित किया गया है। इस चित्र को समतल धरातल पर सीधे खड़े रूप में चित्रित किया गया है। शरीर के विभिन्न रंगों को काफी महत्व दिया गया है। गहरे लाल रंग की पृष्ठभूमि, सफेद धोतियां, हरा और भूरा–सा तटस्थ अग्रभाग इस संपूर्ण संयोजन की प्रशांतता में कोई व्यवधान पैदा नहीं करते हैं।

धोतियों के सफेद रंगों में विविधता है। यद्यपि रंग भिन्न हैं परन्तु इनकी भिन्नता इतनी सूक्ष्म है कि एकरूपता का अहसास होता है। चित्र के मध्य भाग में जो श्वेताभ आकृति है उसके चारों ओर काले और भूरे रंग के शरीर हैं। गहरी लाल पृष्ठभूमि को बड़ी सावधानी से बनाया गया है।

सात वर्षों के अंदर बनाए गए अपने चित्रों के कारण **अमृता** को याद किया जाता है। लेकिन जिस मनोयोग से **अमृता** ने अपनी प्रतिभा, रंग तथा ब्रश का प्रयोग किया, वह प्रशंसनीय है। पश्चिम में अपने प्रशिक्षण तथा पूर्व के विचारों के सामंजस्य ने उन्हें बहुत लोकप्रिय बना दिया। कला के विषयों के प्रति उनकी ईमानदारी तथा रंगों के प्रयोग ने अमृता के चित्रों को शाश्वत बना दिया है। अधिकांश चित्र उनके देश–प्रेम तथा मुख्य रूप से देश के निवासियों की जीवन शैली को प्रदर्शित करते हैं। अपने समकालीन चित्रकारों में **अमृता** सबसे युवा चित्रकार थीं। उनका जीवन भी बहुत अल्पकालीन रहा।

पाठगत प्रश्न 8.2

1. **अमृता** को किस यूरोपीय शैली ने सर्वाधिक प्रभावित किया?
2. **ब्रह्मचारीज** (Brahmacharies) नामक चित्र में कितनी आकृतियाँ हैं?
3. **ब्रह्मचारीज** (Brahmacharies) नामक चित्र की क्या विशेषताएँ हैं?
4. यह चित्र किस वर्ष में चित्रित किया गया?

दि अट्रियम

दि अट्रियम (The Atrium)

शीर्षक	:	दि अट्रियम (The Atrium)
माध्यम	:	कागज पर पानी के रंग
समय	:	1920
आकार	:	12.5 x 9.5 इंच
कलाकार	:	गगनेंद्रनाथ टैगोर
संकलन	:	रवीन्द्र भारती सोसाइटी, जोरासन्को, कोलकाता

सामान्य विवरण

गगनेंद्रनाथ टैगोर का जन्म 1867 में कोलकत्ता के टैगोर परिवार में हुआ। अपने समकालीन भारतीय चित्रकारों के मध्य उनका एक अग्रणी स्थान था। 1910 से 1921 के दौरान **टैगोर** की प्रमुख कृतियों में हिमालय पर्वत श्रंखलाओं के चित्र, कला–क्रम में चैतन्य की जीवनगाथा तथा भारतीय जीवन को दर्शाते हुए चित्र हैं। एक तरफ उन्होंने अपने भाई **अबनींद्रनाथ** (Abanindranath) की कला का समर्थन किया तो दूसरी ओर यूरोप की घनवादी विचारधारा की ओर अपने रूझान को भी प्रदर्शित किया। बाद में अपने जीवन के अंतिम वर्षों में उन्होंने स्पष्ट रूप से अपनी एक स्पष्ट शैली बना ली तथा अपनी छाप के घनवाद को विकसित किया। उसके अनुसार घनवाद का मूल उद्देश्य अभिव्यक्ति को गूढ़ ज्यामितीय आकारों के माध्यम से अभिव्यक्त करना था। काफी लम्बे प्रयोगों के बाद उन्होंने अपनी तकनीक विकसित की। **गगनेंद्रनाथ** ने समतल ज्यामितीय छाया आकारों को रंगों द्वारा आच्छादित करके रहस्यमय बनाया। वह निश्चय ही सुन्दर संयोजन के विशेषज्ञ (गुरु) हैं। अपने कला चित्रों में हलके रंग तथा छाया के माध्यम से ज्यामितीय आकारों तथा सरल आकारों को आकार देना प्रारम्भ किया। उन्होंने कभी भी पाश्चात्य कलाशैली का अन्धानुकरण नहीं किया। वह अपने समय के एक महान कला समीक्षक भी रहे तथा उनके कार्टून (व्यंग्य चित्र) भी बहुत चर्चित थे। अपने व्यंग्य चित्रों के माध्यम से उसने कोलकाता के विभिन्न द श्यों को दिखलाया तथा कोलकातावासियों के मनोरंजन और विनोदी जीवन को भी चित्रित किया। पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित बंगालियों पर किए गए व्यंग्यों के लिए भी उनके व्यंग्यचित्र बहुचर्चित हैं।

गगनेंद्रनाथ टैगोर के चित्रों में से एक चित्र **दि अट्रियम** (The Atrium) असाधारण कला कृति है जो उनकी कृतियों पर घनवाद के प्रभाव का नमूना है। कला के क्षेत्र में घनवाद एक ऐसी शैली है जिसमें वर्णित वस्तुओं को ज्यामितीय आकार में संयोजित कर प्रस्तुत किया जाता है। उन्होंने अपने चित्रों में यही शैली अपनाई। एक घनवादी कलाकार की भांति इन ज्यामितीय आकारों से ही अपनी कृतियां बनाई। इस चित्र में रंगों के माध्यम से प्रकाश एवं छाया के अपूर्व संयोजन के प्रयोग से हुए प्रभाव को दर्शाया है। यद्यपि

टिप्पणी

गगनेंद्रनाथ ने अपनी प्रारम्भिक कृतियों में बहुत–से रंगों का प्रयोग किया परन्तु इस चित्र में विभिन्न छाया तथा रंगों का प्रयोग किया है। यद्यपि ये आकृतियाँ अमूर्त हैं, तथापि चित्र को समझना आसान है। उस समय के किसी भी कलाकार ने इस पाश्चात्य अवधारणा पर प्रयोग नहीं किया।

गगनेन्द्रनाथ टैगोर को आज भी एक ऐसे कलाकार के रूप में जाना जाता है जिन्होंने कई प्रयोग किए। 1938 में उनका देहावसान हुआ। अपने चित्रों तथा व्यंग्य चित्रों के द्वारा वह अभी भी जिन्दा हैं।

पाठगत प्रश्न 8.3

1. 1910 से 1921 तक **गगनेन्द्रनाथ** ने किन विषयों को चुना?
2. उनके चित्र **दि अट्रियम** (The Atrium) में किस यूरोपीय शैली का प्रभाव दिखाई देता है?
3. **गगनेंद्रनाथ** व्यंग्य चित्रों में किस पर व्यंग्य साधा गया है?
4. **दि अट्रियम** (Atrium) बनाने में किस माध्यम को चुना गया है?

आपने क्या सीखा

आधुनिक भारतीय कला देश के इतिहास तथा सामाजिक परिस्थितियों से संबंधित है। कलाकारों ने इन परिस्थितियों में अपनी शैली का विकास किया। ब्रिटिश राज के पतन के बाद विभिन्न विचारधाराओं का विकास हुआ। कंपनी (Company) विचाराधारा के अंतर्गत ब्रिटिश युग में विभिन्न कलाकृतियाँ देखने को मिली। भारतीय कलाकारों (चित्रकारों) ने अपने चित्रों में यूरोपीय तकनीक का प्रयोग किया।

चित्रकार **राजा रवि वर्मा** ने भारतीय विषयों को पुनः क्रियाशील करने के लिए प्रयास किए और इसमें उन्होंने पाश्चात्य शैली का अनुसरण किया। बाद में शान्तिनिकेतन में बंगाल विचार मंच की स्थापना हुई जो कला के विकास का केन्द्र बना। भारतीय कला को एक नई दिशा देने के उद्देश्य से विभिन्न प ष्ठभूमि के कलाकार एकत्रित हुए। उन कलाकारों ने या तो पाश्चात्य शैली का अनुसरण किया या फिर पूर्वी तकनीक का प्रयोग किया, परन्तु वे सब लोग अपनी निजी शैली को प्रक्षेपित करने में सफल हुए।

अबनीन्द्रनाथ टैगोर तथा उसके अनुयायियों का योगदान बड़े पैमाने पर देखने को मिलता है। भारतीय कला के इतिहास में **नन्दलाल बोस, जामिनी राय, डी.पी. रॉय चौधरी** तथा कुछ अन्य कलाकारों ने अपनी कला की छाप छोड़ी। बंगाल परंपरा (Bengal School) ने समकालीन कला में गति देने में प्रारम्भिक योगदान दिया। सम्भवतः **अमृता शेरगिल** इस युग में सर्वोत्तम कलाकार थीं। यद्यपि वह किसी विशेष भारतीय विचारधारा से सम्बद्ध नहीं थी, फिर भी उन्होंने सात वर्ष के छोटे–से समय में काफी अधिक असाधारण चित्र बनाए। तकनीक तथा विषयों का चयन एवं अपने चित्रों के

माध्यम से भारतीय जीवन की वास्तविक तस्वीर प्रस्तुत करने की उनकी तीव्र इच्छा आने वाली पीढ़ी ने समझी और उसका स्वागत किया।

पाठांत अभ्यास

1. भारत में कंपनी कला (Company Art) के पतन के बाद किस प्रकार की कला पनपी? संक्षेप में लिखिए।
2. **राजा रवि वर्मा** के चित्रों के विषयों का वर्णन कीजिए।
3. **ब्रह्मचारीज** नामक चित्र के संयोजन का वर्णन कीजिए।
4. **गगनेन्द्रनाथ टैगोर** की चित्रकला शैली के विषय में एक अनुच्छेद लिखिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

8.1

1. कैनवास पर तैलीय चित्र
2. नल द्वारा दिया गया सन्देश दमयंती सुन रही है।
3. पारम्परिक भारतीय कला तथा पाश्चात्य यथार्थवाद के बीच।
4. रंगीन शिलामुद्रा (Oleograph)

8.2

1. उत्तर प्रभाववादी
2. पांच
3. समतल तथा ऊर्ध्वाधर परिस्थितियों में उभरते आकार
4. 1938

8.3

1. हिमालय के रेखा चित्र तथा चैतन्य का जीवन
2. घनवाद
3. कोलकाता के द श्य तथा वहाँ के निवासियों के व्यंग्यात्मक चित्र
4. पानी के रंग या कागज

9

समकालीन भारतीय कला

मुगल साम्राज्य के पतन तथा प्राचीन एवं मध्ययुगीन कला की समाप्ति के बाद भारत में ब्रिटिश राज के साथ समकालीन भारतीय कला प्रारम्भ हुई। **राजा रवि वर्मा, अबनीन्द्रनाथ टैगोर, अम ता शेरगिल, रबीन्द्रनाथ टैगोर** तथा **जैमिनी राय** समकालीन भारतीय कला के पुरोगामी कलाकार हैं। ये युवा कलाकार पाश्चात्य कला के आन्दोलनों से बखूबी परिचित थे। जर्मन अभिव्यक्तिवाद, घनवाद तथा अतियथार्थवाद ने इन युवा कलाकारों की कला पर बहुत प्रभाव छोड़ा। परन्तु साथ ही अपनी भारतीय पहचान बनाए रखने का उनका प्रयास चलता रहा। इस स्तर पर पाश्चात्य तकनीक तथा भारतीय आध्यात्मवाद का मिलन भारतीय कला का मूल भाव रहा। पाश्चात्य विधियाँ तथा सामग्री के प्रयोग के साथ–साथ उन्होंने भारतीय (पूर्वी) तरीकों के प्रयोग का प्रयास जारी रखा। लकड़ी पर कारीगरी, अश्वमुद्र तथा अम्ललेखन पर काफी प्रयोग किए गए। कोलकाता ग्रुप के कलाकार जैसे कि **प्रदोषदास गुप्त, प्राणकिशनपाल, निरोद मजूमदार, परितोषसैन** तथा कुछ अन्य कलाकारों ने 1943 में अपनी पहली प्रदर्शनी लगाई। तदोपरान्त 1947 में बम्बई (अब मुंबई) के प्रगतिशील कलाकार जैसे कि **एफ.एन.सौजा, रज़ा, एम.एफ. हुसैन, के.एच. अरा** आदि ने अपनी कलाकृतियों की प्रदर्शनी लगाई। एक तरफ कुछ कलाकार पाश्चात्य शैली के साथ कुछ प्रयोग कर रहे थे और दूसरी ओर कुछ कलाकार जैसे कि **बिनोद बिहारी मुखर्जी, राम किन्कर वैज, सैलोज मुखर्जी** जापानी कला तथा लोक कला की ओर अपना रुझान दिखला रहे थे। बंगाल विचारधारा के दो कलाकारों– **देवी प्रसाद राय चौधरी** तथा **सरोदा उकिल** ने भारत के उत्तर तथा दक्षिणी भागों में आधुनिक कला आंदोलन को शुरु करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। **डी.पी. राय चौधरी** के शिष्य **के.सी.एस. पनिकर** तथा **श्रीनिवासलु** ने समकालीन कला में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद, आप :

- भारत के प्रमुख कला आन्दोलनों के योगदान के बारे में वर्णन कर सकेंगे;
- समकालीन कला के विकास में प्रमुख योगदान करने वाले कलाकारों का नाम गिना सकेंगे;

वःर्लपूल

टिप्पणी

- समकालीन कलाकारों द्वारा प्रयुक्त सामान तथा तरीकों के विषय में बता सकेंगे;
- समकालीन कलाकारों में कुछ प्रमुख कलाकारों को पहचान सकेंगे; और
- सूचीकृत समकालीन कलाकारों के बारे में संक्षेप में लिख सकेंगे।

9.1 वःर्लपूल (Whirlpool)

शीर्षक	:	वःर्लपूल (Whirlpool)
कलाकार	:	कृष्णा रेड्डी
समय	:	1962
आकार	:	37.5 से.मी. x 49.5 से.मी.
माध्यम	:	कागज पर उत्कीर्ण आकृति (Intaglio on paper)

सामान्य विवरण

चित्र मुद्रण (Print making) बहुत लोकप्रिय कला है जिसे पाश्चात्य कलाकार कई शताब्दियों से प्रयोग करते रहे हैं। भारतीय कलाकारों ने चित्र मुद्रण में 19वीं शती के अन्त से ध्यान देना तथा रुचि दिखलाना शुरू किया। बहुत–से भारतीय कलाकारों ने अम्ल लेखन (Etching) ड्राइ प्वाइंट, ताम्रपत्र उत्कीर्णन, कागजपर उत्कीर्ण आकृति, लीथोग्राफी, लीओग्राफी dry point, aquatint, intaglio, lethography, liography का प्रयोग अपने चित्रों में किया है। मुद्रण (Print making) का मुख्य लाभ यह है कि किसी भी चित्र की कितनी भी प्रतिलिपियां उपलब्ध हो सकती हैं। **राजा रवि वर्मा** के चित्रों की लोकप्रियता का कारण यही था कि उन्होंने रंगीन शिलामुद्र (Oliography) तकनीक से अपने चित्रों की बहुत–सी प्रतियाँ उपलब्ध कर ली।

कृष्णा रेड्डी अपने समय के सबसे अधिक प्रसिद्ध चित्र मुद्रक (print maker) माने जाते हैं। वह कलाभवन, विश्वभारती तथा शान्तिनिकेतन के विद्यार्थी रहे थे।

वःर्लपूल (भंवर) कृष्णा रेड्डी की सबसे प्रसिद्ध कृति है। इसे उत्कीर्ण (intaglio) पद्धति से बनाया गया है। यह उभार पद्धति के एकदम विपरीत है क्योंकि प्लेट का धरातल स्वयं प्रिंट नहीं करता क्योंकि खुदे हुए हिस्सों में स्याही भर जाती है। चित्र की रूपरेखा तांबे या जस्ता (zink) की प्लेट पर रेखाओं के रूप में उभारी जाती है। इस पर स्याही का प्रयोग होता है और उसके बाद उसे किसी कठोर पदार्थ से खुरच दिया जाता है। एक गीले कागज को उस प्लेट पर डालकर मशीन से दबाया जाता है जिससे उसकी आकृति उभर आती है। **वःर्लपूल** (Whirlpool) नामक चित्र में चित्रकार ने परिचित वस्तुओं के नए आकार बनाए हैं, जो बाद में अमूर्त रूप में परिवर्तित हो जाते हैं। इस चित्र में कलाकार का मुख्य उद्देश्य प्रकृति के प्रभाव को चित्रित करना था। चित्र के अनुसार सभी कुछ अन्तरिक्षीय भंवर में खो जाते हैं। इस चित्र में वस्तुओं का प्रतिबिम्ब साद श्यमूलक नहीं है यद्यपि कुछ प्रतिबिम्बों जैसे सितारे, फूल तथा बादलों को स्पष्ट रूप से पहचाना जाना मुश्किल है। **कृष्ण रेड्डी** के मूर्तिकला के क्षेत्र के पूर्व अनुभव से उभार किस्म उत्कीर्ण की आकृति के अर्थ एवं प्रभाव को समझने में सहायता मिली है, जो उनकी कलाकृति का सौन्दर्य है।

पाठगत प्रश्न 9.1

1. कलाकारों द्वारा प्रयुक्त मुद्रण तकनीक के बारे में लिखिए।

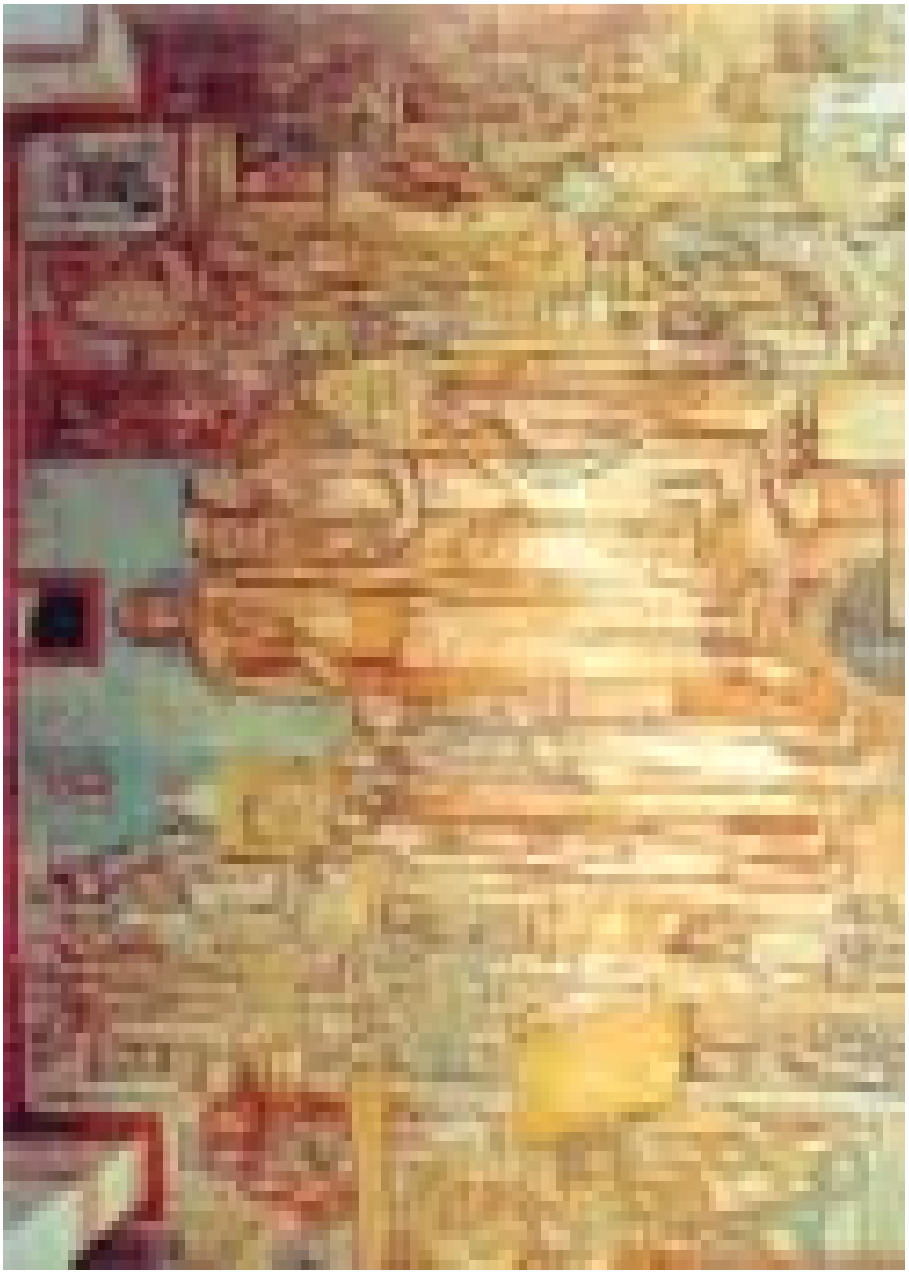

मैडीवल सेन्ट्स

टिप्पणी

2. **कृष्णा रेड्डी** ने **वःर्लपूल** (Whirlpool) नामक चित्र में किस मुद्रण तकनीक को अपनाया है?

3. **कृष्णा रेड्डी** के चित्र **वःर्लपूल** (Whirlpool) के बारे में क्या जानते हैं? दो लाइन में लिखिए।

9.2 मैडीवल सेन्टस् (Medieval saints)

शीर्षक : मैडीवल सेन्ट्स
कलाकार : विनोद बिहारी मुखर्जी (1904–1980)
समय : 1947
संकलन : शान्तिनिकेतन विश्व भारती के हिन्दी भवन की दीवार पर बना भित्तिचित्र।
माध्यम : ''भित्तिचित्र

सामान्य विवरण

विनोद बिहारी मुखर्जी प्रसिद्ध बंगाल स्कूल के चित्रकार **नन्दलाल बोस** के शिष्य थे। वह प्रकृति के सौन्दर्य को बहुत प्यार करते थे और उन्होंने अपने चित्रों को उसी सौन्दर्य पर आधारित किया। उन्होंने प्राकृतिक द श्यों को चित्रित करना जापान से सीखा। उन्होंने जापानी कलाकारों की भांति सरल तथा विवेकपूर्ण तरीके से रेखाएं खींची हैं। इन रेखाओं में सुलेख के गुण मौजूद हैं। **बिनोद बिहारी** की आँखें बचपन से ही कमजोर थीं और जीवन के अन्तिम चरण में वह अन्धे हो गए थे परन्तु न तो युवाकाल में आँखों की कमजोरी और न ही जीवन के अन्तिम चरण में हुआ अन्धापन उनकी सर्जनात्मक शक्ति को प्रभावित कर सका।

सारे जीवन वह विभिन्न माध्यमों के साथ प्रयोग करते रहे। अपने अन्धेपन के बावजूद उन्होंने शान्तिनिकेतन के कला भवन की दीवार पर भित्तिचित्र बनाया।

दि मैडीवल सेन्ट्स (The Medieval Saints) नामक भित्तिचित्र विनोद बिहारी मुखर्जी के द्वारा हिन्दी भवन की दीवार पर बनाया गया है जिसमें **भित्तिचित्र** (Fresco Buono) तकनीक का प्रयोग किया गया। यह दीवार पर बनाए जाने वाले (भित्तिचित्रों) को बनाने की एक पद्धति है जिसमें रंगों की पिगमैन्ट्स को पानी में मिलाया जाता है, ताकि चूने के प्लास्टर के आधार को गीला किया जा सके। इस पद्धति में रंग दीवार का एक अंश बन जाता है जिस कारण उस रंग का स्थायित्व बढ़ जाता है।

दि मैडीवल सेन्ट्स (The Medieval Saints) एक भित्तिचित्र है जिसमें भारत के विभिन्न धर्मों के सन्तों को दिखलाया (चित्रित किया) गया है। दीवार के आकार के अनुसार ही इस भित्तिचित्र को बनाया गया है। चित्र का संयोजन दीवार के आकार एवं आकृति के अनुसार ही किया गया है। लंबी होती मानवीय आकृतियाँ एक बहती नदी की गति की तरह लय और ताल में दिखाई देती हैं। इन मानवीय विशेषताओं वाली आकृतियों को देखकर **ग्रोथिक चर्च** की दीवार पर बनी हुई मूर्तिकला की याद आती है। चित्र में लम्बी आकृतियों की ऊर्ध्वता को प्रभावी तरीके से दिखाया गया है। छोटी आकृतियों को समतल स्तर पर दिखाकर इन आकृतियों का संतुलन दिखाया गया है। आकृतियों की लम्बाई उनकी आध्यात्मिक महानता की द्योतक है। इसी प्रकार छोटी आकृतियाँ प्रतिदिन के

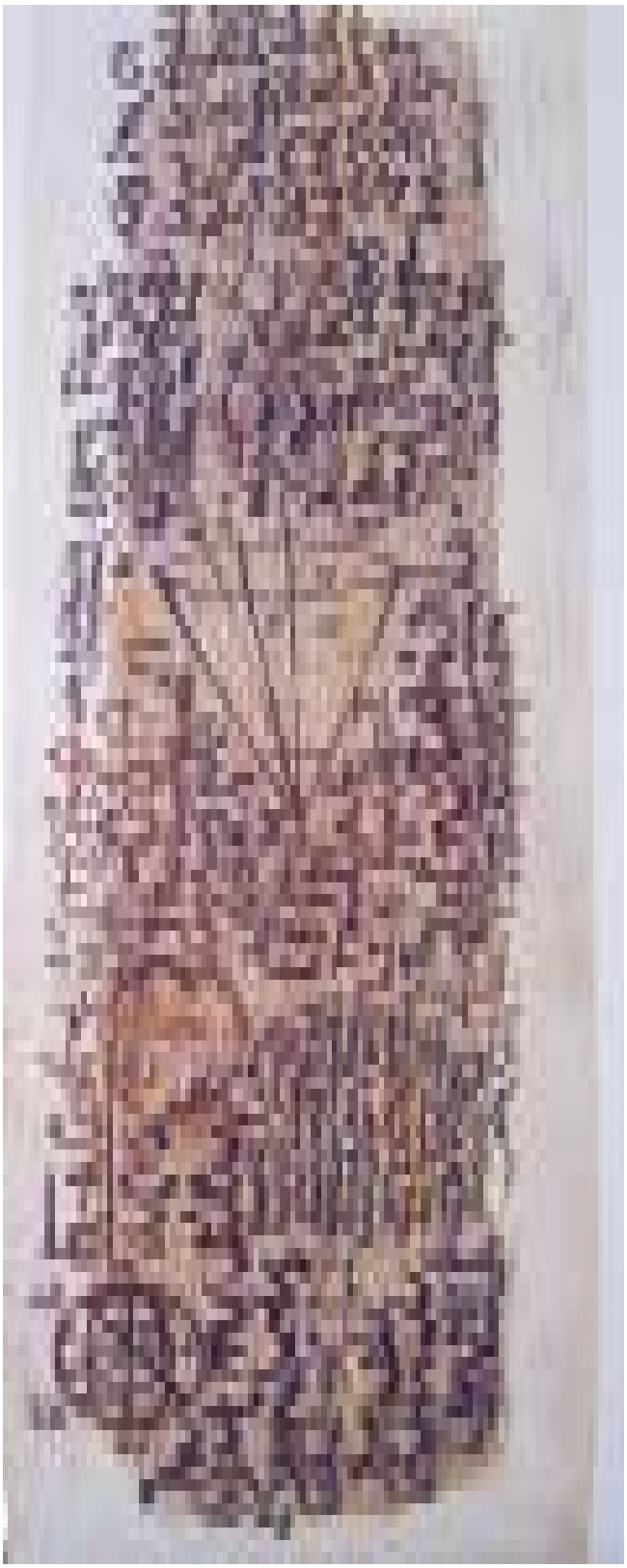

वर्ड्स एंड सिंबल्स

क्रिया–कलापों में व्यस्त आमलोगों का प्रतिनिधित्व करती हैं। इस चित्र में रेखाएं प्रभावशाली प्रतीत होती हैं परन्तु रंगों का प्रयोग सीमित रूप में किया गया है। मुख्यतः भूरे, पीले, गेरुए तथा मिट्टी के रंगों को प्रयोग में लाया गया है।

पाठगत प्रश्न 9.2

1. **विनोद बिहारी** के अध्यापक तथा उनके शिक्षा के स्थानों के बारे में लिखिए।
2. **भित्तिचित्र** (Fresco Buono) तकनीक के बारे में दो पंक्तियाँ लिखिए।
3. **मैडीवल सेन्ट्स** (Medieval Saints) नामक भित्तिचित्र में किन रंगों का प्रयोग किया गया है?
4. **विनोद बिहारी** की शारीरिक समस्याएँ क्या थीं?

9.3 वर्ड्स एंड सिंबल्स (Words and symbols)

शीर्षक	:	वर्ड्स एंड सिंबल्स
कलाकार	:	के.सी.एस. पनिकर (1911 - 1977)
माध्यम	:	लकड़ी के बोर्ड पर तैलीय रंग
आकार	:	43 से.मी. x 124 से.मी.
समय	:	1965

सामान्य विवरण

दक्षिण भारत में समकालीन कला के आन्दोलन के प्रणेता के रूप में **के.सी.एस. पनिकर** को जाना जाता है। वे मद्रास स्कूल ऑफ आर्ट में बंगाल विचारधारा के गुरु **डी.पी. राय चौधरी** के शिष्य थे।

उन्हें अपने जीवन यापन के लिए बहुत–से विषम कार्य करने पड़े। उन्होंने एक कलाकार के रूप में स्थापित होने से पूर्व टैलीग्राफ ऑपरेटर तथा बीमा के एजेन्ट के रूप में काम किया। उनकी शैली में काफी परिवर्तन देखे गए। वे यथार्थवाद से प्रारम्भ करके ज्यामितीय शैली तक पहुंचे। उन्होंने एक अध्यापक के रूप में बहुत–से दक्षिण के कलाकारों को प्रशिक्षित एवं प्रोत्साहित किया। उन्होंने चेन्नई के पास 'चोला मण्डलम' नामक भारत के प्रथम कला–ग्राम की स्थापना की।

प्रस्तुत चित्र उनकी चित्र श्रंखला **'शब्द और प्रतीक'** से लिया गया एक प्रसिद्ध चित्र है। यह अपने में बिल्कुल भिन्न प्रकार का प्रयोगात्मक कार्य है, जिसमें सुलेख से स्थान को भरा गया है। **पनिकर** ने गणित के चिह्नों, अरबी आकृतियों तथा रोमन एवं मलयालम लिपि के प्रयोग से ऐसी आकृति पैदा की है जो देखने में जन्म पत्रिका जैसी लगती है। तान्त्रिक प्रतीकात्मक रेखा–लेखों का प्रयोग भी किया गया है। इन चित्रों में रंगों का प्रयोग नाम मात्र के लिए है।

लेंडस्केप इन रेड

पाठगत प्रश्न 9.3

1. दक्षिण भारत कला क्षेत्र में **के.सी.एस. पनिकर** का क्या योगदान है?
2. **'चोला मण्डलम'** क्या है? उसका पनिकर के साथ क्या सम्बन्ध है?
3. **पनिकर** के सूचीकृत चित्रों पर दो पंक्तियाँ लिखिए।

9.4 लैंडस्केप इन रेड Landscape in Red

शीर्षक	:	लेंडस्केप इन रेड
कलाकार	:	फ्रेंसिस न्यूटन सौज़ा (1924-2002)
समय	:	1961
आकार	:	78.7 से.मी. x 132.1 से.मी.
माध्यम	:	तैलीय रंग
संकलन	:	जहांगीर निकलसन संग्रहालय

सामान्य विवरण

एफ.एन. सौज़ा का जन्म गोवा में हुआ था तथा उनका लालन–पालन मुम्बई में हुआ। उन्हें स्कूल से निष्कासित कर दिया गया था। तब उन्होंने जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स में प्रवेश लिया। उन्हें 1945 में वहाँ से भी निष्कासित कर दिया गया। 1947 में प्रगतिशील कलाकारों के एक ग्रुप की स्थापना करने वाले वह सबसे युवा चित्रकार थे। बाद में उन्होंने भारत छोड़ दिया तथा लंदन में रहने लगे। बाद में वह अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधित्व करने के लिए चुने जाने वाले पांच कलाकारों में से एक थे। उनके निम्न मध यवर्गीय प ष्ठभूमि के कारण तथा आर्थिक समस्याओं के कारण वह समाज के प्रति बागी हो गए। अपने चित्रों के माध्यम से उन्होंने धार्मिक तथा सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया। अपने अन्य समकालीन कलाकारों की भांति उन पर उत्तर प्रभाववादी तथा जर्मन अभिव्यक्तिवादी चित्रकारों का प्रभाव पड़ा और वह उन विचारधाराओं से प्रभावित एवं प्रोत्साहित हुए। विशेष रूप से वह **पिकासो** तथा **मतीसे** से अत्यधिक प्रभावित हुए। उन्होंने अपनी निजी शैली की खोज की जिसमें भारतीय मंदिर मूर्तिकला और पाश्चात्य शैली का मिश्रण था। सुज़ा कला के सभी स्वरूपों पर अनवरत रूप से प्रयोगात्मक कार्य करने वाले चित्रकार थे।

सौज़ा का विशेष प्रेम प्राकृतिक के द श्यों के चित्रण में था। उन्होंने धार्मिक तथा सामाजिक विचारों को भी अपने चित्रों में स्थान दिया। **लेंडस्केप इन रेड** (Landscape in Red) का उनकी प्राकृतिक चित्रण वाली कृतियों में विशेष स्थान है। यह एक प्रयोगात्मक शहरी द श्य का चित्र है। चित्रकार ने शहर जैसा रूप दिखाने की कोशिश की है जो सिवाय जंगल के कुछ भी नहीं है। उनके शहरी प्रकृति चित्रों में शहरों की

रहस्यमय प्रकृति का चित्रण होता है। सुलेखीय रूप में रेखाओं को रंगों के साथ बड़े अच्छे तरीके से संयोजित किया गया है। इस संयोजन में रंग तथा आकार अलग से उभरते हैं। इस चित्र में मुख्य रूप से लाल रंग का प्रयोग किया गया है तथापि इधर–उधर हरे रंग के छींटे भी डाले गए हैं। किसी भी परिद श्य का नियम नहीं माना गया है तथापि स्थान की गहराई चित्र में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

सुज़ा ने अपने कार्यकाल में विभिन्न प्रकार के चित्र बनाए। एक यूरोपीय कला समीक्षक ने उनकी तुलना पिकासो से की है।

पाठगत प्रश्न 9.4

1. 'प्रगतिशील कलाकारों के ग्रुप' के प्रर्वतकों में किसी एक का नाम बताइए।
2. **सौज़ा** के **'द लेंडस्कप इन रेड'** की कुछ मुख्य विशेषताएं बताइए।
3. **सौज़ा** की कला को किसने प्रेरणा दी?
4. **सौज़ा** विदेश में किन शहरों में रहे?

आपने क्या सीखा

भारत के कई महानगरों में भारत की समकालीन कला का प्रारम्भ **राजा रवि वर्मा** तथा बंगाल स्कूल के साथ हुआ। यद्यपि बंगाल स्कूल ने भारत की प्राचीन परम्परावादी कला को जीवित करने का पूर्ण प्रयास किया तथापि पाश्चात्य कला का प्रभाव युवा कलाकारों पर स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। भारतीय कला को एक अर्थ देने के उद्देश्य से 30–40 वर्षीय इन युवा कलाकारों ने या तो पश्चिम से प्रेरणा ली या सुदूर पूर्व से। इनमें से कुछ कलाकार पश्चिमी देशों में चले गए और अन्त में वहीं रहने लगे। जो कलाकार यहाँ भारत में ही रह गए, वे अपनी पहचान खोजने में ही संघर्ष करते रहे। यह संतोष का विषय है कि कुछ कलाकारों को अपनी उचित पहचान मिल गई तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने को सफल कलाकारों के रूप में प्रस्थापित कर सके।

पाठांत अभ्यास

1. भारत की समकालीन कला के विकास में सहायक प्रभावी तत्वों का विवरण दीजिए।
2. उन दो भारतीय चित्रकारों के बारे में लिखिए जो विदेश गए तथा वहीं रहने लगे और जिन्होंने प्रसिद्धि भी प्राप्त की।

टिप्पणी

3. उस भारतीय कलाकार के बारे में लिखिए जो अन्धा हो गया था?

4. सौज़ा चित्रकार के विषय में संक्षेप में लिखिए।

5. पनिकर के एक प्रसिद्ध चित्र का वर्णन संक्षेप में कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

9.2

1. बंगाल स्कूल के कलाकार **नन्दलाल बोस** उनके अध्यापक थे।

2. यह एक तरीका है जिसमें रंगों के पाउडर के रूप में पिगमैन्ट्स को पानी में मिलाया जाता है और उसे ताज़ा चूने के प्लास्टर पर लगाया जाता है।

3. भूरा, पीला, गेरुआ तथा प थ्वी का रंग

4. उनकी आंखें बहुत कमजोर थीं तथा बाद में वह अन्धे हो गए।

9.3

1. वह दक्षिण में समकालीन कला के विकास में अग्रणी तथा प्रभावशाली कलाकार थे।

2. उन्होंने चेन्नई के निकट **'चोला मण्डलम'** नामक भारत के प्रथम कला–ग्राम की स्थापना।

3. **वर्ड्स एंड सिम्बल्स** एक ऐसा प्रयोग है जिसमें सुलेख द्वारा स्थान को भरा गया।

9.4

1. **एफ.एन. सौज़ा**

2. प्रयोगात्मक शहरी प्रकृति चित्र जो संसार का रहस्यात्मक पक्ष प्रस्तुत करता है तथा जिसमें सुलेख तथा कोई परम्परावादी परिद श्य नहीं है।

3. **पिकासो** तथा **मतीसे**

4. लन्दन तथा न्यूयोर्क

टिप्पणी

1

वस्तु-चित्रण (Object Study)

ईश्वर द्वारा बनाई इस प्रक ति में मनुष्य ने अपनी आवश्यकतानुसार बहुत-सी वस्तुएं बनाई हैं जिनका हम दैनिक जीवन में उपयोग करते हैं। इनमें से कुछ वस्तुएं हमें आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं, जैसे किताब, बॉक्स, घर के बर्तन व अन्य सामान आदि।

इन वस्तुओं को देखकर उनका चित्र बनाना, इस क्रिया को वस्तु-चित्रण कहते हैं। विद्यार्थी को शुरू में बहुत ही सरल चित्र, जो उसे रूचिकर लगे, बार–बार अभ्यास करना चाहिए।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने एवं अभ्यास करने के बाद, आप–

- परिद ष्टि (Perspective) के बारे में जान सकेंगे;
- छाया व प्रकाश को सही रूप में पहचान पायेंगे;
- वस्तुओं के आकार का नाप व अनुपात दर्शाने में सक्षम हो सकेंगे; और
- रंगों को सही तरीके से उपयोग करना सीख सकेंगे।

आवश्यक सामग्री

वस्तु-चित्रण करने के लिए विद्यार्थी के पास निम्नलिखित सामान होना चाहिए:

1. ड्रांइग बोर्ड या मोटा गत्ता
2. ड्राईंग पेपर (कार्ट्रिज या चार्ट पेपर)
3. ड्राईंग पिन
4. पैंसिल (HB, 2B, 4B, 6B)
5. रबड़

टिप्पणी

6. रंग
7. ब्रुश
8. कलर मिक्सिंग पैलेट आदि

मॉडल बनाने के लिए विभिन्न प्रकार की वस्तुएं जैसे पुस्तक, बॉक्स, बर्तन, फल, घर का सामान इत्यादि। इन वस्तुओं का आकार चौकोर या गोलाकार हो।

परिद ष्टि (Perspective)

वस्तु-चित्रण में परिद ष्टि (Perspective) का महत्वपूर्ण स्थान है। अतः इसकी जानकारी होना बहुत ही आवश्यक है जिससे विद्यार्थी प्रत्येक वस्तु को जिस रूप में देखता है उसे वास्तविक रूप में कागज़ पर चित्रित कर सके।

परिद ष्टि (Perspective) क्या है ? देखने वाले व्यक्ति को पास की वस्तु से दूर जाती हुई क्रमानुसार हर वस्तु छोटी से छोटी होती दिखाई देती है। जैसा कि **चित्र संख्या 1** में दिखाया गया है कि जब हम एक ही आकार की वस्तुएं (जैसे लाईन में रखी बोतलें या लाईन में रखे बॉक्स) दूर की ओर जाते हुए दिखाई देती हैं, तो हमें यह सभी वस्तुएँ एक ही बिंदु पर जाकर मिलती हुई प्रतीत होती हैं।

इसी प्रकार परिद ष्टि (Perspective) का नियम हर उस वस्तु पर लागू होता है जिसे हम चित्रित कर रहे हैं, चाहे वह वस्तु गोलाकार, चौकोर या अन्य किसी आकार की हो।

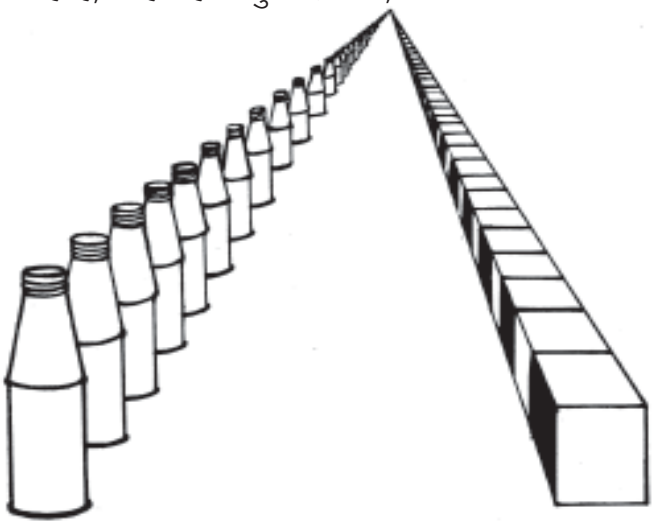

चित्र सं. 1

छाया और प्रकाश

किसी भी वस्तु पर जब प्रकाश पड़ता है तो उस वस्तु पर छाया और प्रकाश बन जाता है। वस्तु के जिस भाग पर प्रकाश पड़ रहा है, वह भाग उजला तथा उसके ठीक विपरीत भाग पर छाया दिखाई देती है। इसके लिए हम अपनी आँख को आधी या मध्यम बंद करके आसानी से देख सकते हैं।

यह छाया और प्रकाश विभिन्न प्रकार के रंगसंगति अथवा टोन (Tone) द्वारा बनता है। मुख्य रूप से तीन प्रकार के टोन (Tone) होते हैं। 1. प्रकाश-सा उजला भाग, 2. मध्यम प्रकाश, 3. गहरी छाया।

टिप्पणी

चौकोर या गोलाकार वस्तुओं पर छाया और प्रकाश अलग–अलग प्रकार से दिखाई देता है। चौकोर वस्तुओं में सपाट या समतल सतह होने के कारण हर सतह पर समतल प्रकाश या समतल छाया दिखाई देती है। जबकि गोलाकार वस्तुओं में एक ही गोलाई लेती हुई सतह होती है, इसी कारण प्रकाश से छाया तक सभी (Tone) टोन मिलती हुई प्रतीत होती है, जैसा कि चित्र संख्या 2 में दिखाया गया है।

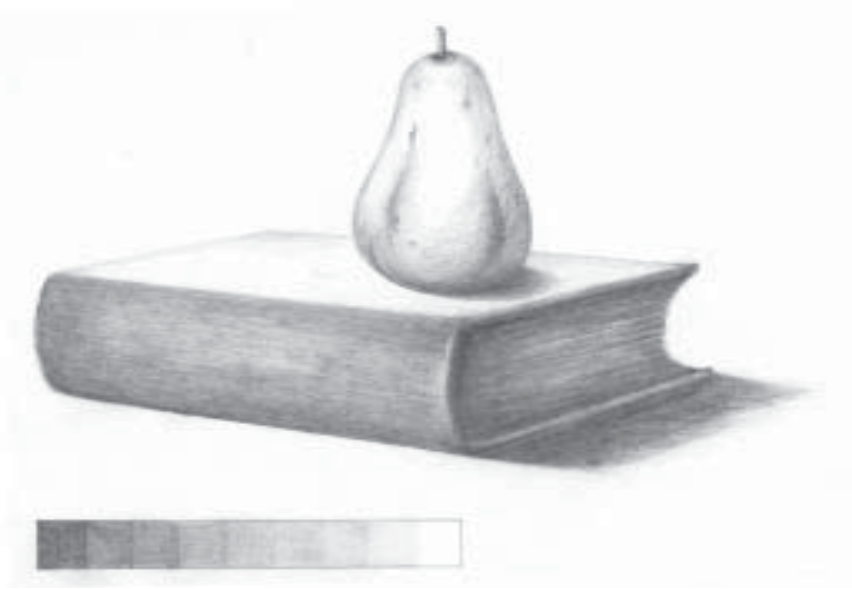

चित्र सं. 2

अतः हम वस्तु को वास्तविक आकार व स्वरूप में देखकर भली प्रकार चित्रण कर सकते हैं।

पैंसिल द्वारा छाया और प्रकाश विभिन्न टोन (Tone) के द्वारा दिखाया जा सकता है, जिसके लिए HB, 2B, 4B, 6B पैंसिल का इस्तेमाल करें। पैंसिल पर हल्का या ज्यादा दबाव डालते हुए छाया (shade) दें जिससे विभिन्न प्रकार की टोन (Tone) बन सकती है।

नाप व अनुपात

वस्तु-चित्रण करते समय विद्यार्थी को सामने रखी वस्तुओं के सही नाप व अनुपात की जानकारी होनी चाहिए। प्रत्येक वस्तु में लंबाई–चौड़ाई व ऊँचाई होती है। अनुपात द्वारा हम यह जान सकते हैं कि प्रत्येक वस्तु आपस में कितनी छोटी–बड़ी या बराबर आकार की है। किसी भी वस्तु को बिना नाप के या नापकर बनाया जा सकता है।

नापकर चित्र बनाने के लिए सीधा बैठें, एक आंख बंद करें, हाथ को कंधे की सीध में रखकर पैंसिल द्वारा नाप लें। पैंसिल को इस प्रकार पकड़ें कि अंगूठा दायें–बायें या ऊपर–नीचे आसानी से घूम सके। लंबाई या चौड़ाई नापने के लिए पैंसिल को लेटी हुई सीधी अवस्था में रखकर वस्तु के बायीं ओर के किनारे पर लाएं तथा अंगूठे को दायीं ओर खिसकाते हुए वस्तु के दायें किनारे तक लाएं। अब ऊँचाई नापने के लिए पैंसिल को वस्तु के ऊपरी किनारे पर रखें तथा अंगूठे को नीचे किनारे तक लाएं। इसी तरह पैंसिल द्वारा

टिप्पणी

नाप को अपने पेपर पर अंकित करें। अब लंबाई–चौड़ाई व ऊँचाई के नाप को दुगुना, तीनगुणा या और ज्यादा गुणा नाप अपने पेपर के अनुसार अंकित करें और उसी नाप के अंदर चित्र पूरा करें। चित्र–संख्या 3 देखें।

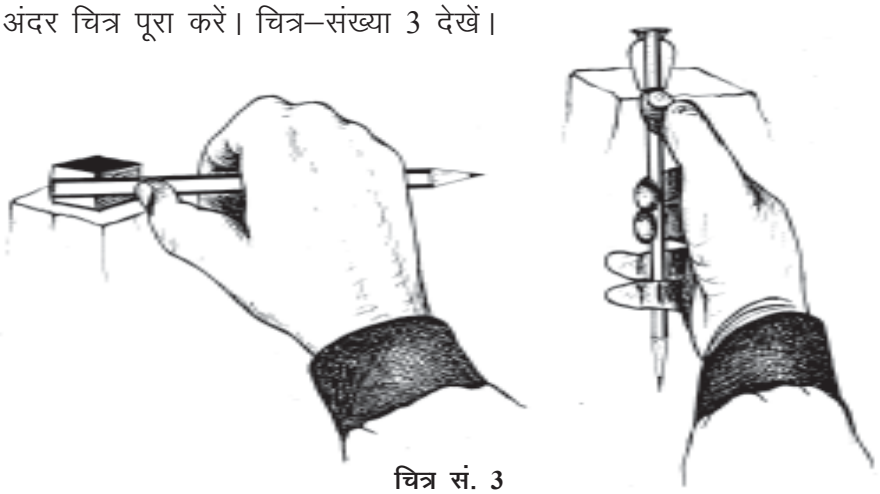

चित्र सं. 3

रंग योजना व रंग भरना

शुरू में विद्यार्थी को जल-रंगों का उपयोग करना चाहिए। रंग भरने से चित्र सजीव लगता है और वास्तविकता का आभास होता है। जब वस्तु पर प्रकाश व छाया पड़ती है तो एक ही रंग में हमें विभिन्न प्रकार की टोन नजर आती है। प्रकाश वाले भाग पर उजला रंग तथा छाया वाले भाग पर गहरा रंग दिखाई देता है, जैसे लाल रंग के पास ही संतरी रंग, गहरा लाल रंग, भूरा–रंग, आदि, नीले रंग के पास आसमानी रंग, गहरा नीला रंग आदि, और हरे रंग के पास तोतिया रंग या गहरा हरा रंग देख सकते हैं। इन्हीं रंगों को आपस में मिलाकर विभिन्न रंगसंगतियां (टोन) या विभिन्न रंग बनाये जा सकते हैं। अतः आप रंग योजना इस प्रकार करें कि अपने चित्रों में रंगों की वास्तविकता को दिखा सकें।

वस्तु को नजदीक व उजली दिखाने के लिए उजले रंगों का प्रयोग करें। दूरी व छाया दिखाने के लिए गहरे व धुंधले रंगों का इस्तेमाल करें जैसा कि चित्र संख्या 4 में दिखाया गया है।

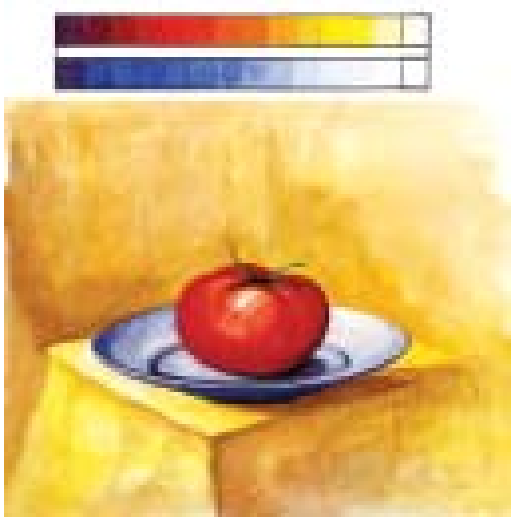

चित्र सं. 4

टिप्पणी

चित्र बनाने का तरीका

शुरू में विद्यार्थी को चौकोर वस्तु जैसे पुस्तक या डिब्बा और गोल वस्तु जैसे गिलास या फल–सब्जी आदि बनाना चाहिए। जिस वस्तु (मॉडल) का चित्र बनाना है उस वस्तु को आंख की सतह से नीचे की ओर कुछ दूरी पर किसी सतह पर रखें। मॉडल के पीछे की ओर कोई कपड़ा जिसका रंग मॉडल के रंग से अलग हो, लटका दें।

अब ड्राइंग बोर्ड पर ड्राइंग पेपर को ड्राइंग पिनों या क्लिपों के द्वारा लगाएं। सामने रखे मॉडल को अच्छी तरह देखें। मॉडल की लंबाई–चौड़ाई व ऊँचाई के अनुसार सुनिश्चित करें कि ड्राइंग बोर्ड, जिस पर आप चित्र बना रहे हैं, उसे क्षैतिज (Horizontal) या ऊर्ध्वाधर (Vertical) किस प्रकार रखा जाये।

वस्तु-चित्रण करते समय बिल्कुल सीधे बैठें। चित्र पूरा होने तक अपने बैठने में कोई परिवर्तन न करें।

उदाहरण के लिए आप **डिब्बा व उसके ऊपर रखा गिलास** का चित्र बना रहे हैं। चित्र संख्या 5 में देखें। सबसे पहले डिब्बे की निचली सतह का नजदीक का कोना बिंदु (ख) ड्राइंग पेपर पर सही स्थान पर अंकित करें और उस पर आधार रेखा खींचें। इस बिंदु (ख) से दायीं व बायीं तरफ जाती रेखाएं जो भी कोण बना रही हैं, वहीं कोण बनाती हुई रेखाएँ खींचें तथा लंबाई व चौड़ाई काट लें, जो बिंदु (क) और (ग) हैं। अब बिंदु (ख) से सीधी खड़ी (लम्ब) रेखा खींचें और ऊँचाई काट लें, जो बिंदु (ब) है। बिंदु (ब) से दायीं ओर की रेखा (ख) (ग) के समानांतर व बायीं तरफ की रेखा (क) (ख) के समानांतर खींचें। बिंदु (क) और (ग) से लम्ब रेखा खींचें जो बिंदु (अ) और (स) पर मिलेंगी। इस प्रकार हमें डिब्बे की लंबाई व चौड़ाई वाली सतह मिल जाती है। अब ऊपरी सतह बनाने

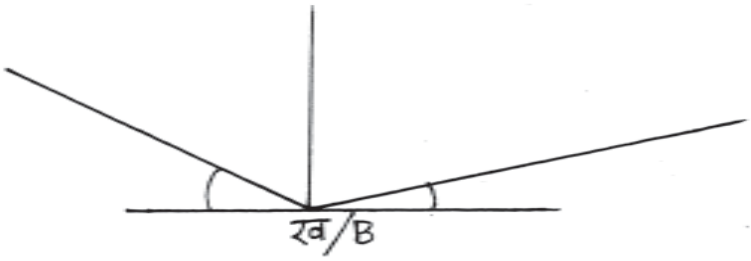

चित्र सं. 5

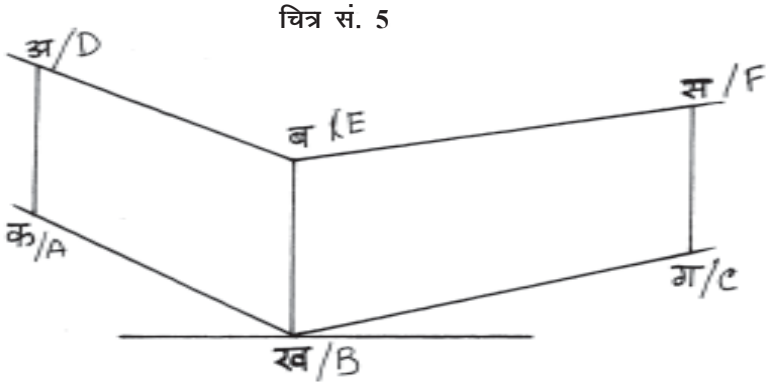

चित्र सं. 5.1

टिप्पणी

के लिए बिंदु (अ) से (ब) और (स) के समानांतर तथा बिंदु (स) से (अ) और (ब) के समानांतर रेखा खींचें। दोनों रेखाएं जब आपस में मिलेंगी तो डिब्बे की ऊपरी सतह बन जायेगी। इस तरह विद्यार्थी डिब्बे का चित्र बना सकते हैं। चित्र संख्या 5.1 एवं 5.2 देखें।

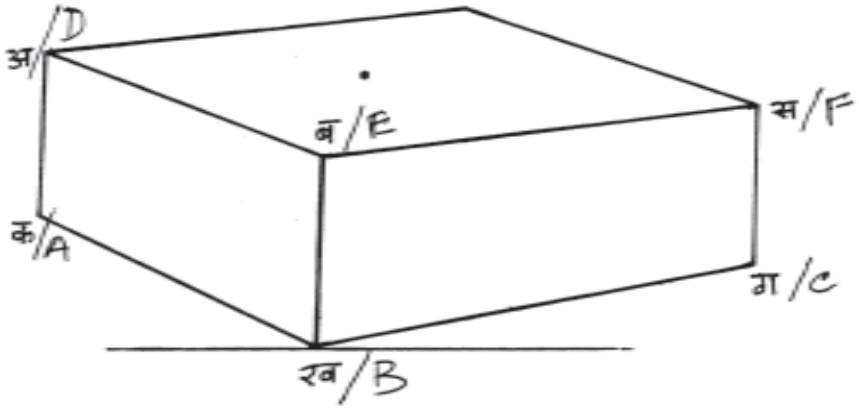

चित्र सं. 5.2

अब डिब्बे की ऊपरी सतह पर रखे गिलास का चित्र बनाएं। गिलास का चित्र बनाने का तरीका चित्र संख्या 5.3 में दिया गया है।

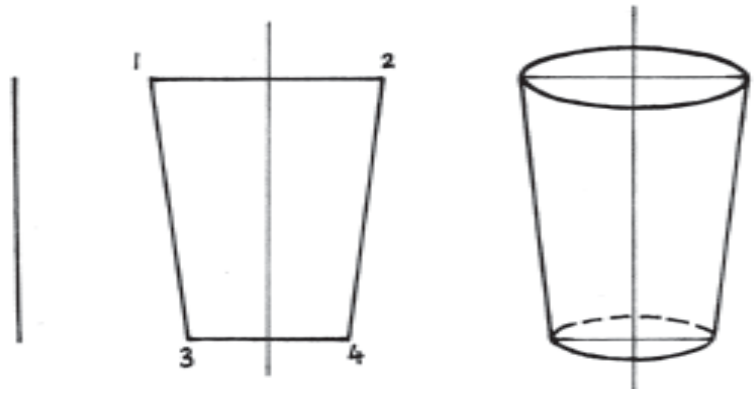

चित्र सं. 5.3

डिब्बे की ऊपरी सतह पर गिलास की निचली सतह का केंद्र बिंदु लें। इस बिंदु से खड़ी सीधी रेखा खींच कर गिलास की ऊँचाई काट लें। इन दोनों बिंदुओं से लेते हुए समानांतर रेखा खींचें। गिलास के मुंह व तल के घेरे के अनुसार नीचे व ऊपर की चौड़ाई बिंदु (1) व (2) और (3) व (4) काटें। इसके बाद बिंदु (1) और (3) तथा (2)

टिप्पणी

और (4) को आपस में मिलाएं। इस तरह गिलास का साधारण सरल रेखा-चित्र दिखाई देगा।

गिलास का मुंह व तल बनाने के लिए अंडाकार गोलाई का प्रयोग करें। अतः गिलास का जितना मुंह खुला दिखाई दे रहा है, उसी के अनुसार केंद्र रेखा पर दो बिंदु (5) और (6) लें तथा इन बिंदुओं को आपस में अंडाकार गोलाई देते हुए मिलाएं। इसी तरह गिलास का तल भी बनाएं। पेंसिल शेड या रंगों द्वारा चित्र पूरा करें। चित्र संख्या 5.4 में देखें।

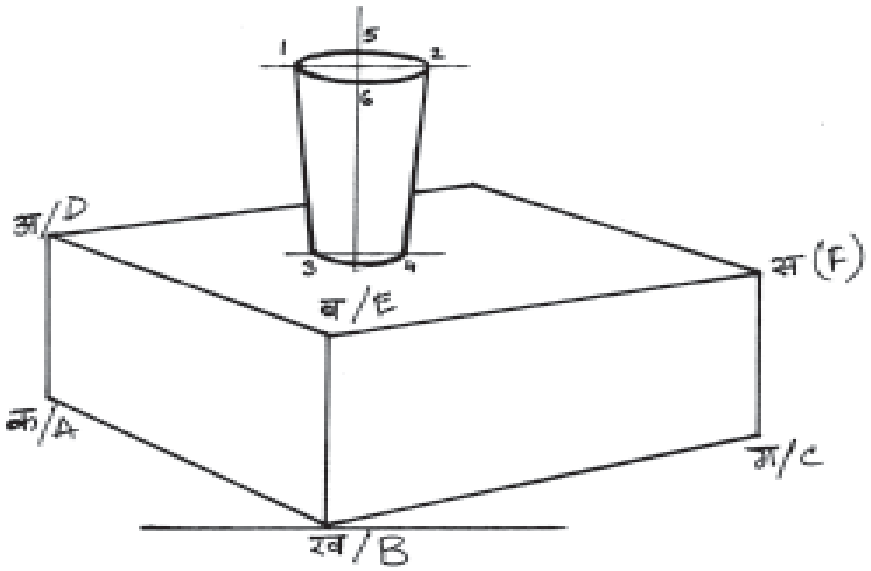

चित्र सं. 5.4

सारांश

वस्तु-चित्रण के अभ्यास द्वारा विद्यार्थी एक अच्छा चित्रकार बन सकता है। इससे विद्यार्थी में आत्मविश्वास तथा परिपक्वता का निर्माण होता है।

छाया व प्रकाश द्वारा वह चौकोर व गोलाकार वस्तुओं का अंतर भी स्पष्ट कर सकेगा तथा रंग संयोजन के द्वारा चित्रों को सुंदर व सजीव रूप देने में सक्षम होगा।

मॉडल प्रश्न

(क) अपने सामने एक पुस्तक रखकर उसका चित्र बनाएं।

(ख) ईंट व मटका सामने रखें तथा चित्र बनाकर पैंसिल शेड द्वारा छाया व प्रकाश दिखाएं।

(ग) प्लेट में कोई दो फल व चाकू रखें तथा चित्र बनाकर रंगों द्वारा पूरा करें।

(घ) किसी सतह पर दो या तीन डबलरोटी और बिस्कुट एक साथ आड़े–तिरछे रखें तथा उनका चित्र बनाएं।

(ड.) एक मर्तबान लिटाएं, उसके साथ कनस्टर रखें। चित्र बनाकर रंगों द्वारा पूरा करें।

टिप्पणी

शब्दार्थ - (शब्दकोश)

प्रतीत – महसूस करना।
क्षैतिज (Horizontal) – लेटी हुई अवस्था
ऊर्ध्वाधर (Vertical) – खड़ी हुई अवस्था
परिपक्वता – अच्छी तरह जानकारी

स्टिल लाईफ
चित्रकार–आरा

स्टिल लाईफ फूलों के साथ
चित्रकार–वैन गौग

टिप्पणी

2

प्रकृति-चित्रण (Nature Study)

अनादिकाल से प्रकृति और मानव का संबंध अटूट रहा है। प्रकृति ही मानव को जीने की प्रेरणा देती रही है और उसके साथ–साथ मानव को प्रकृति की सुन्दरता की अनुभूति कराती रही है। मानव ही एक ऐसा प्राणी है, जिसमें सुन्दरता का बोध है और इसलिए इस सुन्दरता को चिरंतन बनाने के लिए वह इसे चित्रकला तथा मूर्तिकला का रूप देने का प्रयास करता रहा है। इनमें प्रकृति के अनेक रूप जैसे पहाड़, नदियाँ, सागर, पेड़-पौधे, फूल के अनेकों रूप तथा रंग भी मानव को सबसे अधिक आकर्षित करते हैं।

प्रकृति के हर तत्व में जीवन का रूप स्पष्ट है। प्राकृतिक वस्तु गतिशील है। हर वस्तु अलग–अलग भाव को प्रकट करती है। यह भाव प्राकृतिक वस्तु के रंग, आकार तथा बनावट (Texture) द्वारा अभिव्यक्त होता है। इन सबको ध्यान में रखते हुए आप एक सुन्दर चित्र का निर्माण कर सकते हैं।

प्रकृति-चित्रण में निम्नलिखित तत्वों का ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यक है जैसेः इन तत्वों का उपयोग बहुत सावधानी से चित्रों की आवश्यकता के अनुसार करना चाहिए। इन सारे तत्त्वों का सही उपयोग केवल मात्र अभ्यास द्वारा ही संभव है।

परिदि ष्टि (Perspective)
संतुलन (Balance)
संयोजन (Composition)
समन्वय (Harmony)
रंग (colour)

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने एवं अभ्यास करने के बाद, आप–

- विभिन्न प्राकृतिक वस्तुओं की आकृति बना सकेंगे;
- संयोजन के साथ चित्र बना सकेंगे;
- चित्रों में समन्वय (Harmony) के साथ जल रंगों का सही प्रयोग कर सकेंगे; और
- चित्र बनाते समय संतुलन (Balance) को ध्यान में रख कर चित्र बना सकेंगे।

टिप्पणी

प्रकृति-चित्रण में परिद ष्टि (Perspective)

प्रकृति-चित्रण करते समय हमें परिद ष्टि का विशेष ध्यान रखना चाहिए। परिद ष्टि (Perspective) में नियमों के अंतर्गत संतुलन (Balance), वैनिशिंग पॉइंट आदि का आभास होना बहुत आवश्यक है। यह तभी संभव है जब हम पास की वस्तु को बड़ा व उसके चित्रण को विस्तार से अंकित करें या टोन (Tone) को दिखायें जहां पीछे की वस्तु को हल्का और छोटा दिखायें। उदाहरण स्वरूप चित्र में पास का पेड़ घना तथा बड़ा दिखाया गया है। इसी तरह पास का रास्ता और झोपड़ी की छत भी उसी अनुपात से बनायी गयी है। इसमें छत के सामने का भाग बड़ा व दूर का छोटा दिखाया गया है। पीछे की पहाड़ियां छोटी–छोटी नजर आती हैं। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि प्रकृति-चित्रण में उन आवश्यक तत्वों में से यदि किसी की भी कमी रहे तो वह चित्र संपूर्ण नहीं कहलाया जाता है।

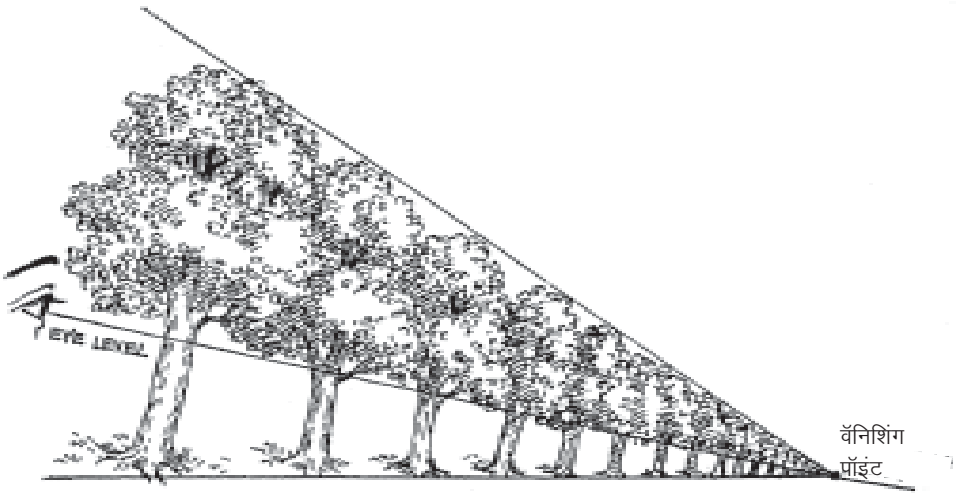

चित्र सं. 1

संतुलन (Balance)

चित्र-रचना में संतुलन की भूमिका महत्वपूर्ण है। चित्र बनाते समय कागज की स्पेस को इस तरह सजाना चाहिए, ताकि चित्र के हर अंश का भार समान हो। जैसे किसी चित्र

टिप्पणी

में यदि एक तरफ विशाल पेड़ है तो दूसरी तरफ झाड़ी या कोठी का चित्र बनाएं तो चित्र सही संतुलन में नहीं कहा जाता (चित्र सं. 2 और चित्र सं. 3 देखें)। कागज का स्पेस संतुलन में होना चाहिए।

चित्र सं. 2

चित्र सं. 3

संयोजन (Composition)

चित्र में संयोजन की अहम भूमिका होती है। प्रकृति-चित्रण में द श्य को चित्रित करते समय परिद ष्टि, संतुलन, समन्वय (Harmony) आदि बातों को ध्यान में रखते हुए, वस्तु या तत्वों को सुंदर रूप में व्यवस्थित करना ही संयोजन है। चित्र 4 और 5 देखें।

टिप्पणी

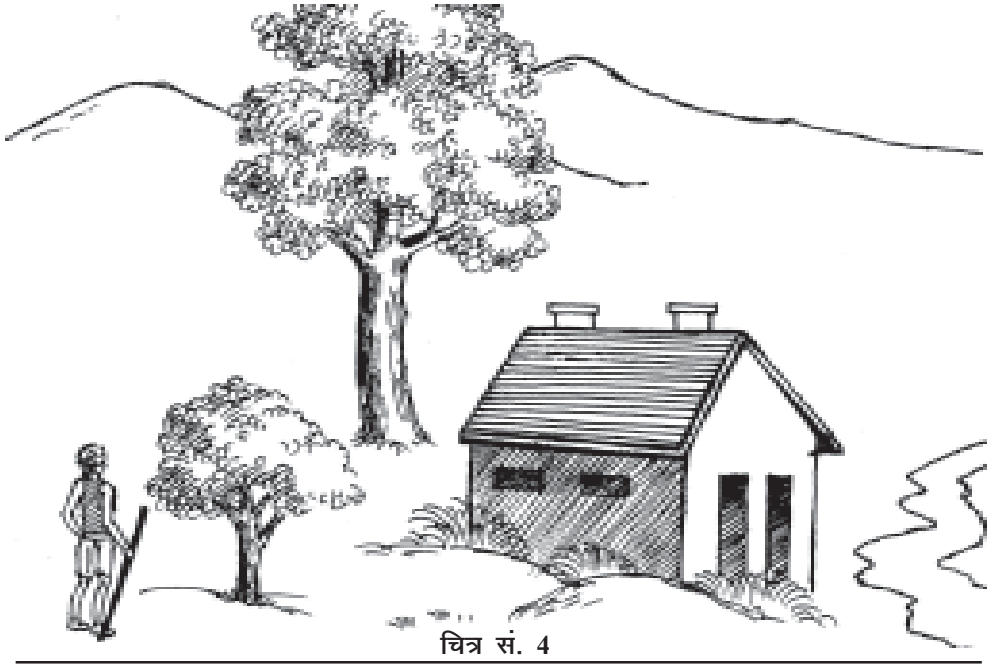

चित्र सं. 4

चित्र सं. 5

समन्वय (Harmony)

आप अपने चित्र में समन्वय दिखाने के लिए हर वस्तु या फॉर्म को इस तरह संयोजित कीजिए जिससे चित्र में फॉर्म या वस्तु के रूपों का गहरा संबंध स्थापित हो जाए, और चित्र अपना सही रूप प्राप्त कर ले। चित्र में समन्वय (Harmony) प्राप्त करने के लिए रंगों की अहम् भूमिका होती है। रंगों की सही समानता से वस्तु में बहुत ही सरलता व सहजता के साथ लय (Rhythm) और समन्वय को प्राप्त किया जा सकता है। चित्र 6 देखें।

टिप्पणी

चित्र सं. 6

रंग (Colour)

प्रकृति-चित्रों में जल-रंगों का प्रयोग बहुत ही ध्यान पूर्वक करना चाहिए। पहले विद्यार्थी को हल्के रंगों का प्रयोग करना चाहिए, फिर मध्यम गहरे रंग और बाद में गहरे रंग। चित्रों में पास की वस्तु में साफ और उजला रंग भरें जैसे लाल, पीला, नारंगी और दूर की वस्तु के लिए कुछ घुंधले रंगों का प्रयोग करें जैसेः– नीला, बैंगनी, भूरा (Brown) इत्यादि। चित्र संख्या 7 में फूलों की और चित्र संख्या 8 में भूद श्य के रंगों के प्रयोग विभिन्न स्तरों को देखें।

स्तर-1 स्तर-2

चित्र सं. 7

टिप्पणी

स्तर-3

स्तर-4

चित्र सं. 7

स्तर-1

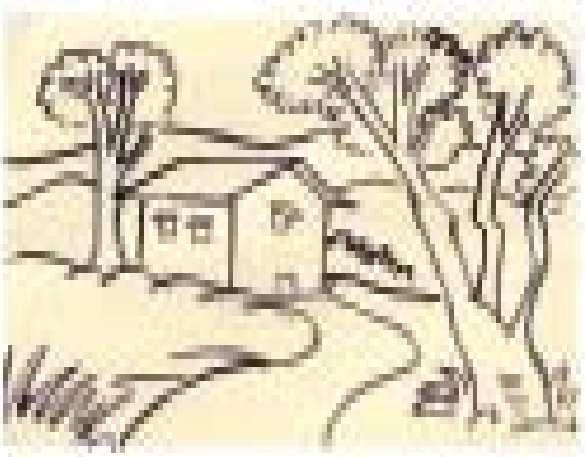

स्तर-2

चित्र 8

टिप्पणी

स्तर-3

स्तर-4

चित्र सं. 8

सारांश

प्रकृति चित्रण में रेखाचित्र की अहम भूमिका है, इसलिए परिद ष्टि और अनुपात के साथ चित्र बनाना आवश्यक होता है। परिद ष्टि (Perspective), चित्र के स्पेस में गहरापन लाने में सहायक होता है। परिद ष्टि के नियमानुसार सामने की वस्तु बड़ी और पीछे के वस्तु छोटी दिखाई देती है। पीछे जाने वाली सामान्तर रेखाएं अपना रूप बदलकर धीरे–धीरे एक दूसरे से मिलती हैं। रेखांकन का गहराई तथा हल्केपन द्वारा भी सामने की वस्तु के साथ दूर की वस्तु का अंतर दिखाया जा सकता है। संयोजन के लिए संतुलन तथा समन्वय का ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक है।

प्राकृतिक चित्रण में जब रंगों का प्रयोग होता है तब प्राकृतिक वस्तुओं में स्वाभाविक रंगों का प्रयोग करना चाहिए। पर कभी–कभी चित्र की सुंदरता के लिए इन रंगों को थोड़ा बहुत बदला जा सकता है, अर्थात आवश्यकतानुसार रंगों के उजलेपन को कम या अधिक कर सकते हैं।

पाठान्त प्रश्न

1. रेखाओं द्वारा पेड़ या पौधे का संतुलित चित्र बनाएं।
2. जल-रंग द्वारा पेड़ और झोपड़ी के साथ प्रकृति के द श्य का संतुलित चित्र बनाएं।
3. फल–फूल और फूलदान का स्केच बनाइए और उसके बाद जल-रंगों का प्रयोग करें।

टिप्पणी

4. पहाड़, नारियल के पेड़, पत्थर तथा सागर का पहले अलग–अलग जगह पर स्केच बनाइए। इन स्केचों के आधार पर दो विभिन्न संयोजन में चित्र बनाइए। इन चित्रों में पोस्टर रंग द्वारा रंग भरें।
5. अपने शहर के किसी नजदीक बगीचे में जाइए तथा विभिन्न प्रकार के फूलों का स्केच बनाइए।
6. परिद ष्टि का ध्यान रखते हुए बगीचे के पेड़ों की पंक्तियों का चित्रांकन कीजिए। जलरंगों द्वारा इनमें रंग भरिए।

मालार्ड एट द एड्ज
चित्रकार–आरकीबल्ड थोर बार्न
(जल रंग)

ड्राइंग
चित्रकार–गोपाल घोष
(जल रंग + ब्रश)

3

मानव व पशु आकृतियाँ (Human and Animal Figures)

जल, स्थल व आकाश में हम असंख्य प्राणियों को विचरण करते व उनके कार्यकलापों को देखते हैं। संसार भर में इन सभी जीवों की विभिन्न जातियां, स्त्री वर्ग व पुरुष वर्ग के रूप में दिखाई देती हैं जिसके कारण इनका स्वरूप और शरीर की बनावट भिन्न–भिन्न प्रकार की होती है।

यदि हम उन्हें ध्यान से देखें तो इन सभी के शरीर की बनावट में सुन्दरता, कोमलता, सुडोलता व लचीलापन दिखाई देता है। ईश्वर ने इन सभी के शरीर की बनावट को सही अनुपात में बनाया है, जिसके कारण वे अपने कार्य आसानी से कर लेते हैं।

इन सभी प्राणियों में मनुष्य सबसे श्रेष्ठ प्राणी है। इसीलिए मनुष्य में श्रेष्ठ भावनायें पाई जाती हैं। इन्हीं भावनाओं के प्रभाव से चित्रकार भी अपनी चित्रकला के माध्यम से वही भाव अपने चित्रों में प्रकट करता है।

कला के विद्यार्थी को चाहिए कि इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए इनकी आक तियाँ बनाने का अभ्यास करें।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने एवं अभ्यास करने के बाद, आप –

- शरीर की बनावट, नाप व अनुपात के बारे में जानकारी ले पायेंगे;
- सरल रेखा-चित्रण को बनाना सीख सकेंगे;
- स्केच बनाना सीख सकेंगे; और
- रेखाओं में गतिशीलता लाने में सक्षम हो सकेंगे।

आवश्यक सामग्री

मोटा गत्ता या ड्राइंग बोर्ड, ड्राइंग पेपर (काटरेज या चार्ट पेपर), पैंसिल HB, 2B, 4B, 6B, रबर, रंग, ब्रुश इत्यादि।

टिप्पणी

शरीर की रचना, नाप व अनुपात

मानव और पशु का शरीर हड्डियों मांसपेशियों व त्वचा द्वारा बना होता है। यह शरीर बाल रूप से लेकर व द्धावस्था तक परिवर्तित होता रहता है। अतः इनके सभी अंगों की बनावट के बारे में जानकारी होना आवश्यक है।

साधारणतया मानव के शरीर (सिर से पांव तक) को साढ़े सात (7½) भागों में विभाजित किया गया है। शरीर के सबसे ऊपरी भाग चेहरे (सिर से ठोढ़ी तक) को एक भाग कहते हैं। इसी एक भाग के नाप के अनुसार पूरा शरीर नापा जाता है।

पूरे शरीर को इस प्रकार बांटा गया है– सिर से नाभि तक तीन भाग, नाभि से घुटने तक दो भाग, घुटने से पैर तक दो भाग, पैर का पंजा आधा भाग। इस तरह साढ़े सात (7½) भाग विभाजित करें।

इसके अतिरिक्त चेहरे को भी चार भागों में बांटा गया है– पहला भागः सिर व सिर के बाल, दूसरा भागः माथा, तीसरा भागः नाक, चौथा भागः नाक से नीचे ठोढ़ी तक।

पूरे हाथ की लंबाईः साढ़े तीन भाग।

मानव शरीर को बनाते समय चेहरे (सिर से ढोड़ी तक) के एक भाग को आधार बनाया जाता है। पूर्ण मानव शरीर को बनाते समय शिक्षार्थी को निम्न प्रकार के नाम/अनुपात को ध्यान में रखना चाहिएः

- कंधे से कोहनी तक : 1½ भाग
- कोहनी से पंजे तक : 1½ भाग
- पंजा : ½ भाग

दोनों कंधों की चौड़ाई : 2 भाग होनी चाहिए।

पैर (एड़ी से पंजे तक) की लंबाई 1 भाग होनी चाहिए। (चित्र संख्या 1 देखें।)

टिप्पणी

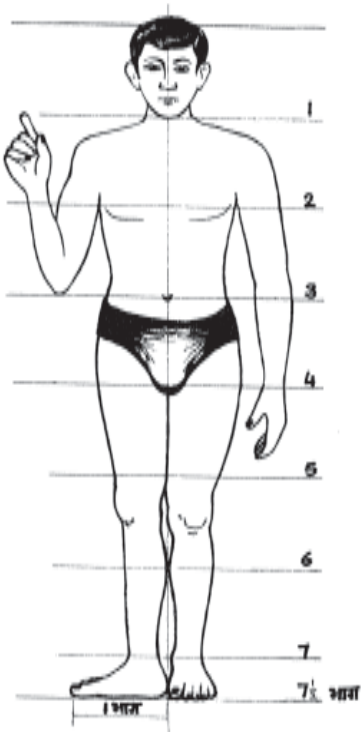

चित्र सं. 1

सरल रेखा-चित्रण

केवल सीधी रेखाओं द्वारा चित्रण करने की क्रिया को सरल-रेखा चित्रण कहते हैं। जिस प्रकार शरीर में हड्डियों के ढांचे का महत्वपूर्ण स्थान है जिससे शरीर खड़ा होता है, बैठता है, या अन्य कार्य करता है, उसी प्रकार मानव आक ति व पशु आक ति बनाने के लिए सरल रेखा चित्र स्केच (Skeleton) जैसा ही कार्य करता है।

विद्यार्थी सरल रेखाओं द्वारा मानव व पशु-आक ति को जितना भी छोटा या बड़ा बनाना चाहे, तुरंत बनाकर देख सकता है और अपने ड्राइंग पेपर के अनुसार आकार दे सकता है। जैसा कि चित्र संख्या 2 में दिखाया गया है।

स्कैच बनाना

सामने से देखकर व मन से रेखांकन करने की क्रिया को स्कैच कहते हैं। स्कैच बनाने की क्रिया धीमे व तेजी से की जा सकती है। इसके लिए गहरी काली पैंसिल (*4* बी, *6* बी) का प्रयोग करना चाहिए।

शुरू में विद्यार्थी साधारण सफेद कागज पर सामने वाली निर्जीव व सजीव वस्तु के अनुसार आड़ी–तिरछी, सीधी व गोलाकार रेखाओं को खींचने का निरंतर अभ्यास करें। इसमें अंगुलियों व कलाई का उपयोग विशेष महत्व रखता है। अतः इसका प्रयोग करते हुए अपनी रेखाओं की गति को बढ़ायें।

टिप्पणी

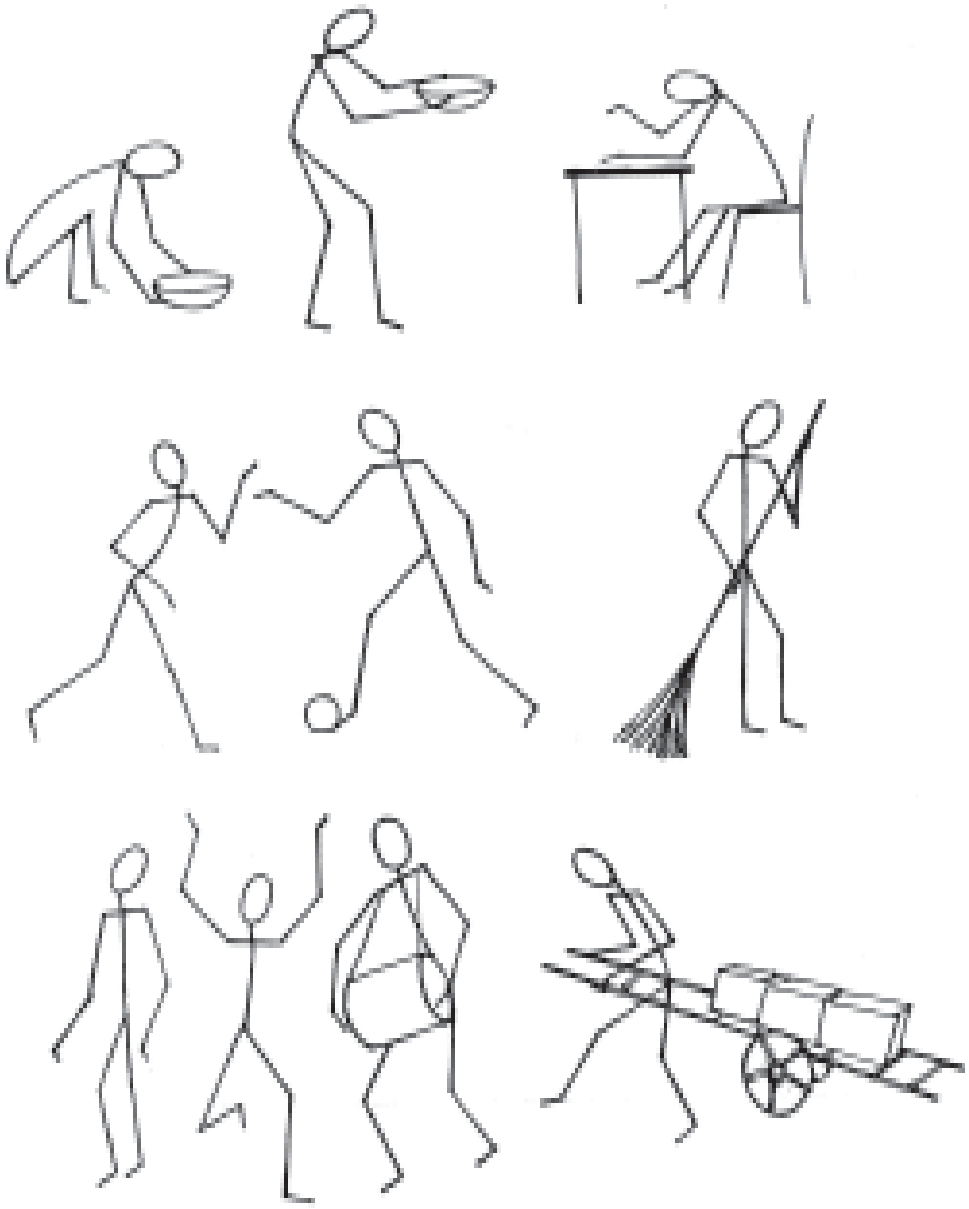

चित्र सं. 2

टिप्पणी

मनुष्यों व पशुओं में स्थिरता नहीं पाई जाती। अतः इनकी सभी क्रियाओं का गहन अध्ययन व निरीक्षण करना आवश्यक है। विद्यार्थी को चलते–फिरते व बैठकर इनकी सभी क्रियाओं का स्कैच बनाना चाहिए। स्कैच बनाते समय शरीर के हिलने–डुलने वाले भाग को पहले बनाएं और बाकी भागों को बाद में या स्म ति द्वारा पूरा करें। चूंकि स्कैच बनाते समय रबड़ का प्रयोग नहीं होता अतः रेखाओं की गति व नियंत्रण पर ध्यान दें।

मानव व पशु आक तियाँ

मानव व पशु आक तियां बनाने के लिए सरल रेखाचित्र व स्केचिंग का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। इनके निरंतर अभ्यास द्वारा विद्यार्थी इन आक तियों की ड्राइंग करने में सक्षम हो जायेगा।

चित्र संख्या 3 में घोड़े का चित्र बनाने का तरीका दिया गया है। प्रथम अवस्था में सरल रेखा चित्र है जिसमें कुछ रेखाओं व व त के द्वारा घोड़े को कंकाल (skeleton) जैसा आकार दिया गया है। दूसरी अवस्था में घोड़े के शरीर की बनावट तथा मुँह व पैर आदि को एक आकार दिया गया है। अंत में चित्र को पूरा करते हुए मांसपेशियां व शरीर के सभी अंग बारीकी से बनाये गये हैं। इस तरह घोड़े के चित्र को पैंसिल शेड (shade) या रंगों द्वारा पूरा किया जा सकता है। चित्र संख्या 4 और 5 देखें।

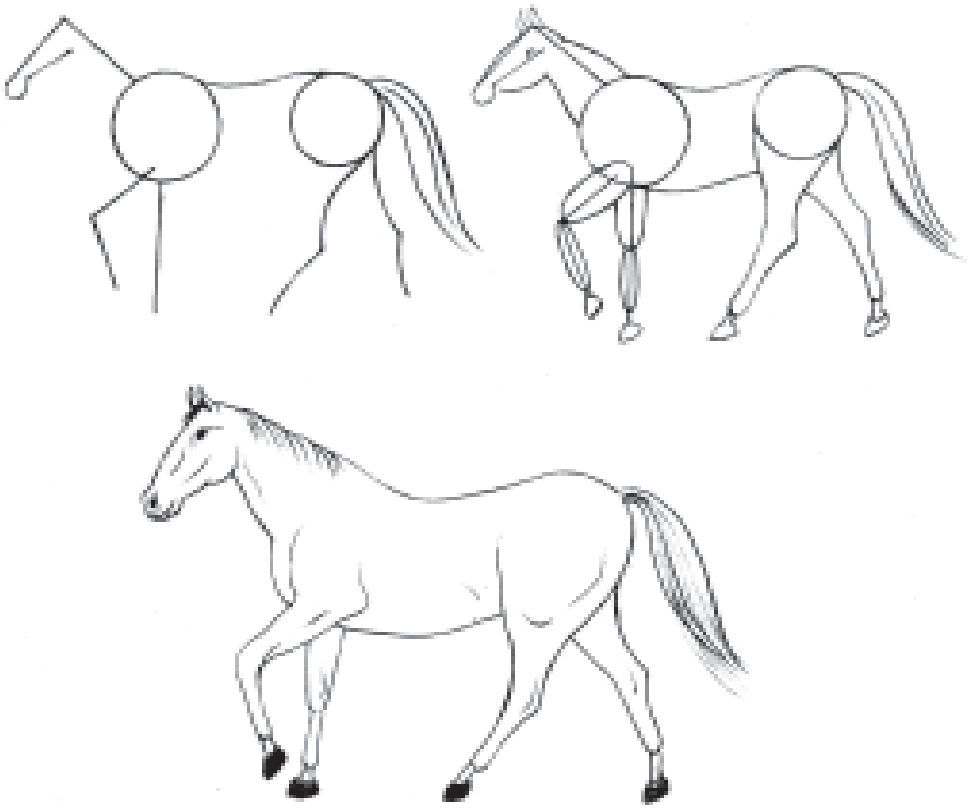

चित्र सं. 3

टिप्पणी

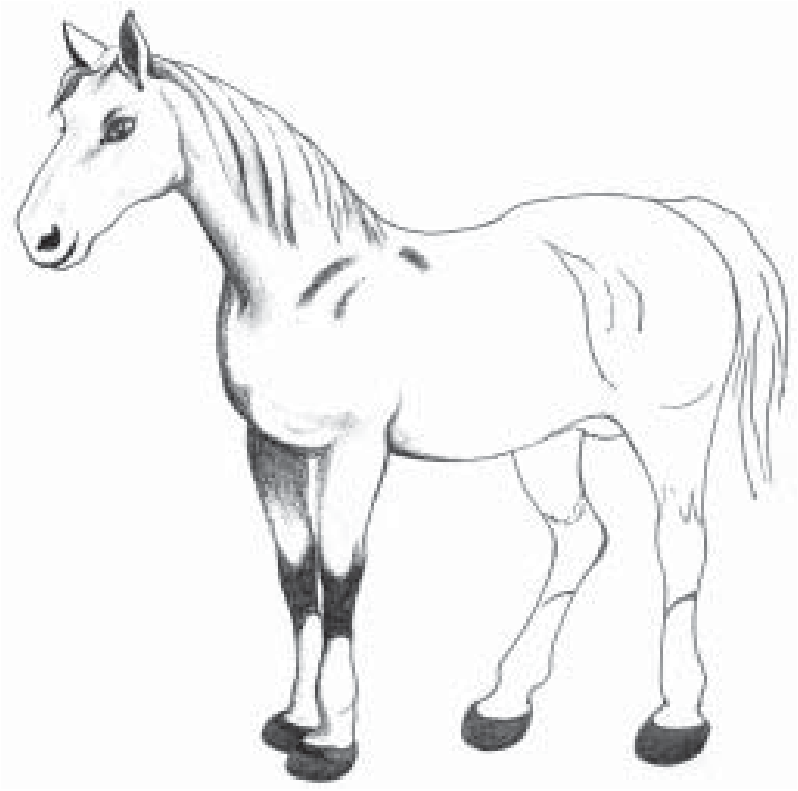

चित्र सं. 4

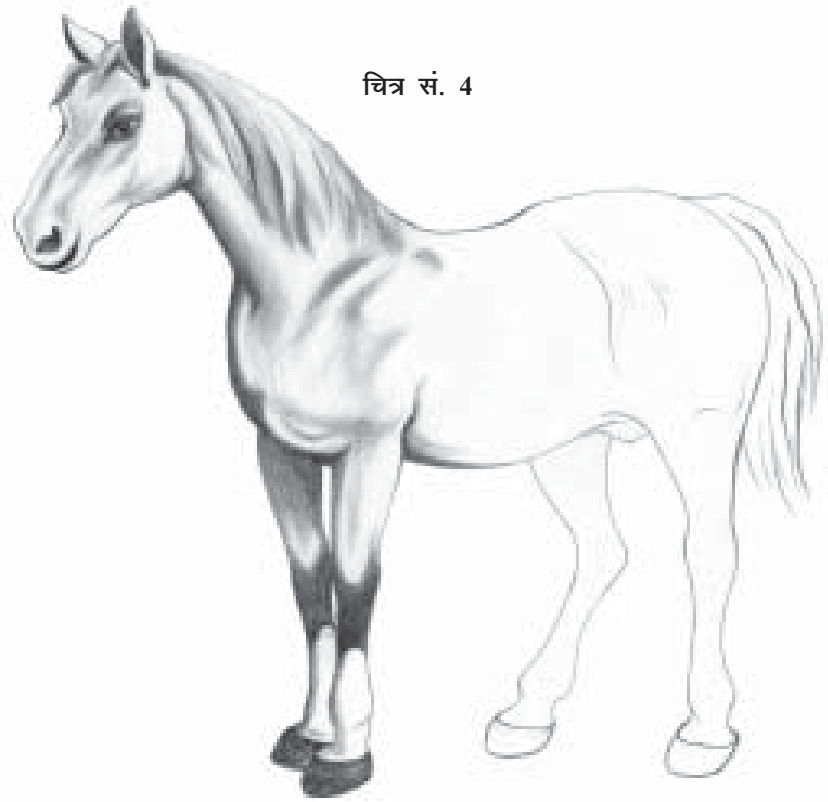

चित्र सं. 5

टिप्पणी

मानव-आक ति बनाते समय भी इन्हीं बातों का ध्यान रखना आवश्यक है। केवल स्केचिंग द्वारा भी किसी आक ति को बनाया जा सकता है। चित्र संख्या 6 देखें।

चित्र सं. 6

विद्यार्थी किसी मानव (मॉडल) को अपने सामने अपने अनुसार बैठा सकता है। चित्र बनाना शुरू करने से पहले मॉडल की स्थिति को ध्यानपूर्वक देखें तथा शरीर के नाप का ध्यान रखते हुए चेहरे (Head) वाले भाग के नाप को उतना ले जिससे पूरा शरीर ठीक अनुपात में आपकी ड्राइंग शीट के अनुसार बन सके।

दो या तीन मानव आक तियों को एक साथ रख कर विद्यार्थी विषयानुसार कोई संयोजन (composition) भी बना सकते हैं। चित्र संख्या 7 देखें।

टिप्पणी

चित्र सं. 7

सारांश

चित्रकार अपने चित्रों को सुन्दर व श्रेष्ठ बनाने के लिए मानव की विभिन्न भावनाओं जैसे हर्ष, क्रोध, विरह, शांत, माधुर्य आदि भावों और अभिव्यक्तियों को दिखाता है। विद्यार्थी को चाहिए कि वह भी अपनी आक तियों में यह सब दिखाने का प्रयास और अभ्यास करें जिससे वह भी सुन्दर चित्र बना सकें।

पशुओं के शरीरों की बनावट विभिन्न प्रकार की होती है। अतः अपने चित्रों में वही आकार देते हुए उनकी आक ति बनाने का प्रयास करें। निरंतर अभ्यास द्वारा आप अच्छे चित्रकार बन सकते हैं।

मॉडल प्रश्न

(क) घोड़े का चित्र बनाकर पैंसिल शेड द्वारा पूरा करें।

(ख) पालतू जानवर का चित्र बनाएं।

(ग) अपने घर के सदस्यों या मित्रों की आक ति बनाएं।

(घ) मनुष्य के शरीर का नाप द्वारा चित्र बनाएं।

शब्दकोश

सुडोलता – गठीलापन

श्रेष्ठ – बहुत अच्छा

टिप्पणी

गति	–	तेज़
सक्षम	–	समर्थ होना
व द्धावस्था	–	बुढ़ापा
विभाजित	–	बांटना
स्केलिटन (skeleton)	–	हड्डियों का ढांचा अथवा कंकाल
निर्जीव	–	प्राणरहित, बेजान
सजीव	–	जिसमें प्राण हो, जो सांस लेता हो
माधुर्य	–	सुन्दरता
विरह	–	बिछुड़ना
संयोजन	–	एक ही स्थान पर कुछ वस्तुओं को सही तरीके से रखना।

इंडियन डांसर
चित्रकार–के के हव्वार

टिप्पणी

कैट
चित्रकार–राम गोपाल

4

संयोजन (Composition)

संयोजन अंतर—आत्मा से निकला हुआ वह भाव है, जिसको कलाकार रंग, रेखा, आकार इत्यादि किसी भी सतह पर इस प्रकार उन्हें सुसज्जित करता है, जिससे एक अच्छे संयोजन का निर्माण हो सके। संयोजन में जितने भी आकारों का प्रयोग किया जाता है उन सबमें संतुलन, समन्वय, लय होना चाहिए। अगर संयोजन में से कोई भी आकार हटा लिया जाए तो संयोजन असंतुलित हो जाता है। इस तरह आकारों का तालमेल दूसरे आकारों के साथ होना चाहिए जिससे संतुलन बना रहे। संयोजन में जब सारे तत्वों का सही प्रयोग होगा तब जाकर एक अच्छा संयोजन तैयार होगा। चित्र बनाने की प्रक्रिया और उनमें प्रयोग किए गए सभी तत्वों को हम संयोजन कहते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने एवं अभ्यास करने के बाद, आपः

- किसी कागज़ पर 2–3 वस्तुओं या उससे ज्यादा आकारों को व्यवस्थित ढंग से रखना सीख सकेंगे;
- संयोजन के निर्माण के लिए आकारों का प्रभावी रूप से निर्माण कर सकेंगे;
- पैंसिल से छाया और प्रकाश दर्शाने में सक्षम हो सकेंगे;
- कल्पना के आधार पर संयोजन के लिए रेखा-चित्र बना सकेंगे;
- विषय-वस्तु का प्रभावी ढंग से चुनाव कर सकेंगे; और
- रंगों का सही प्रकार से प्रयोग कर सकेंगे।

संयोजन में ज्यामितीय आकृतियाँ (Geometrical Forms of Composition)

जिस संयोजन में ज्यामितीय आकृतियों का प्रयोग होता है उसे ज्यामितीय संयोजन कहते हैं। संयोजन बनाने के लिए एक सादा कागज लीजिए जिसे 10"x10" या 10"x15"

के आकार में काट लें अथवा अपनी कल्पना में संयोजन के अनुसार स्केल और पैंसिल की मदद से पेपर पर आकार बना लीजिए। उसके अंदर गोलाकार, चौकोर, त्रिकोणाकार आदि बनावट पैंसिल और स्केल की सहायता से अंकित करें एवं उनमें रंग भरकर संयोजन बनाएं। या फिर उन्हीं आकारों को काले या विभिन्न रंगों के कागज को काट कर एक कागज पर विभिन्न प्रकार से सजाएँ। इस प्रकार बुनियादी संयोजन का आप को ज्ञान होगा और इस तरह संयोजन बनाने में आसानी होगी।

चित्र चाहे किसी माध्यम में बनाना हो यानि जल रंग, पोस्टर रंग, आदि में, लेकिन ध्यान रहे कि उसके संयोजन में संतुलन होना आवश्यक है। चित्र 1,2,3 तथा 4 देखें।

चित्र सं. 1

चित्र सं. 2

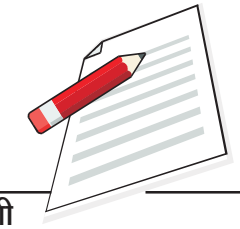

टिप्पणी

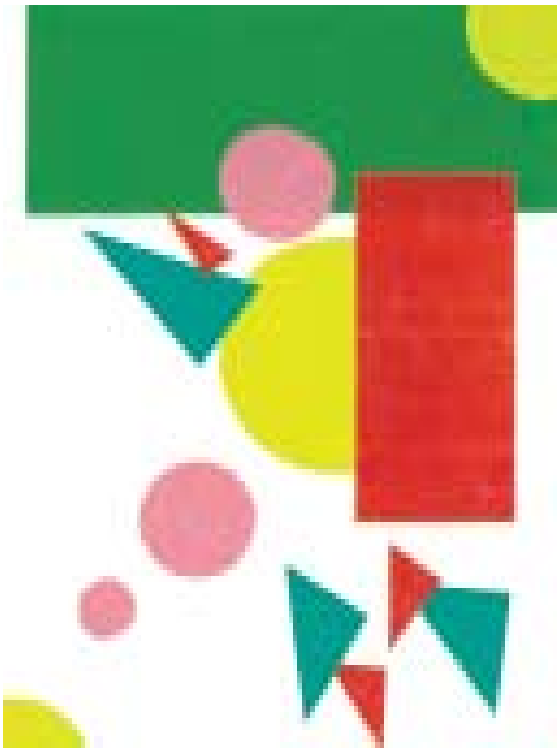

चित्र सं. 3

चित्र सं. 4

टिप्पणी

संकल्पनात्मक संयोजन (Conceptual Composition)

इस प्रकार का संयोजन विद्यार्थी की कल्पना शक्ति पर निर्भर करता है। जिंदगी के विभिन्न अनुभवों के आधार पर संकल्पनात्मक संयोजन बनाया जाता है।

संयोजन की रचना से पहले विषय-वस्तु का निर्णय भी महत्त्वपूर्ण है। परंतु यह विद्यार्थी पर निर्भर करता है कि वह किस विषय-वस्तु का चुनाव करना चाहता है। जैसे, मछली बेचने वाला, पटरी पर ढाबा, चित्र संख्या 5 देखें। मेला, वर्षा का द श्य, रेलवे स्टेशन, बस अड्डा। उदाहरण के लिए आप को जिस विषय पर चित्र बनाना है, उस विषय पर 4–5 प्राथमिक रूप अलग–अलग प्रकार से अपनी सोच या कल्पना के आधार पर बनाएं। इनमें से जो संयोजन आपको सबसे अच्छा लगे, उसे फिर बड़ा करके पेपर या कसी सतह पर बनाएं।

संयोजन कलाकार के मन के अनुसार ऊर्ध्वाधर या क्षैतिज (वर्टिकल या होरिजौंटल) होगा। यह संयोजन बनाने वाले पर पूर्ण रूप से निर्भर करता है। संयोजन में जो भी तत्व प्रयोग किए गए हैं ध्यान रहे कि वे एक दूसरे से संबंध रखते हों। अगर किसी तत्व को उस संयोजन से हटा लिया जाए तो संयोजन उस तत्व के बिना अधूरा होगा। संयोजन में एक आकर्षक केंद्रीय बिंदु (फोकल पॉइंट) होता है। संयोजन में जितने तत्व हैं उन सब पर नज़र घूमने के बाद ''फोकल पाइंट'' पर नजर रूकनी चाहिए। एक अच्छे संयोजन में संतुलन, समन्वय और लय का होना ज़रूरी है तभी संयोजन सही होता है। चित्र सं. 5 और 6 को देखें। दो पक्षियों का एक पेड़ की शाखा में समन्वय और संतुलन के साथ संयोजन किया गया है। रेखाओं के ड्राइंग के बाद संयोजन में रंग भरा गया है।

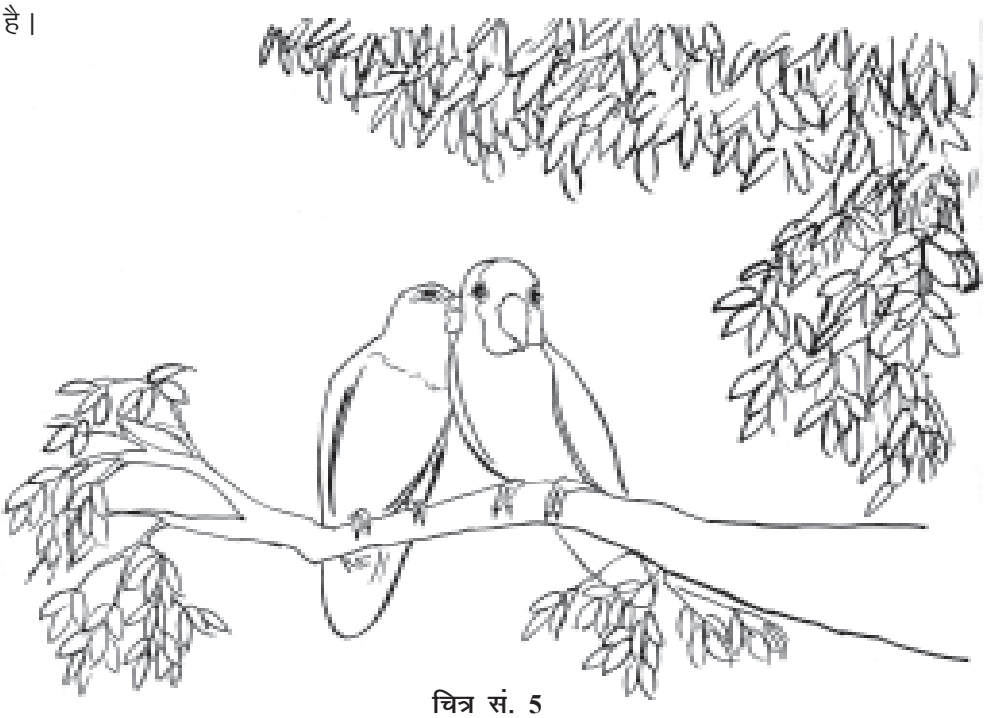

चित्र सं. 5

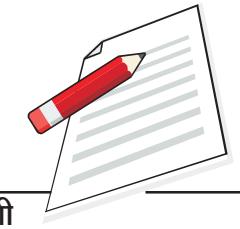

टिप्पणी

चित्र सं. 6

वस्तु-चित्र का संयोजन (Composition with Object)

संयोजन के लिए निम्नलिखित वस्तुओं का उपयोग किया जा सकता है।

उदाहरण :-

जग	फूलदान
कप–प्लेट	सब्जियाँ
ब्रेड	स्टोव
अन्डा	बाल्टी
चाकू	भगोना
फल	टोकरी
किताब	बोतल

इनमें से कुछ चीजों को छाँटकर बराबर जगह पर सजाएँ और पीछे एक परदा भी लटकाएँ। जैसा वस्तु-चित्रण करना हो, उसी प्रकार की वस्तु का चयन कीजिए। संयोजन आरंभ करने से पहले दो–चार प्राथमिक रेखाचित्र बनाएं। (चित्र सं. 7 देखें) इसके पश्चात् पेपर पर चित्र बनाना शुरू कर सकते हैं।

चित्र सं. 7

वस्तु-चित्रण से विद्यार्थी की परिद ष्टि का ज्ञान होता है। आगे–पीछे की चीज़ों को कैसे दर्शाएंगे। छाया और प्रकाश को भी समझ सकेंगे। छोटे-बड़े आकार को बनाने की समझ भी विद्यार्थी को होगी। एक दो वस्तु–चित्रण पैंसिल से बनाकर प्रकाश और छाया को समझना चाहिए (चित्र सं. 7 देखें)। फिर रंग का प्रयोग शुरू करना चाहिए। संयोजन में रंगों के प्रयोग में संतुलन, समन्वय और लय होना ज़रूरी होता है। चित्र सं. 8 देखें। आप कुछ सब्जियों को चुन सकते हैं और पार्श्व में रंगीन कपड़े के साथ मेज पर ठीक प्रकार रख सकते हैं (चित्र सं. 9 देखें)।

चित्र सं. 8

चित्र सं. 9

टिप्पणी

प्राकृतिक द श्य का संयोजन (Composition Based on Nature)

कोई भी प्राकृतिक द श्य बनाने में गाँव, शहर, पहाड़, झरना, नदी, नाले आदि द श्यों को उपयोग में ला सकते हैं। प्राकृतिक द श्य में आमतौर पर होरीजोंटल द श्य संयोजन का प्रयोग होता है।

उदाहरण के लिए आप कोई भी द श्य चुन लीजिए। उस द श्य में जो कुछ भी नजर आ रहा हो, उन सबको संयोजन में दर्शाया जा सकता है। संयोजन में आकर्षक केंद्र बिंदु (Focal Point) का होना आवश्यक होता है। (चित्र संख्या 10 देखें)।

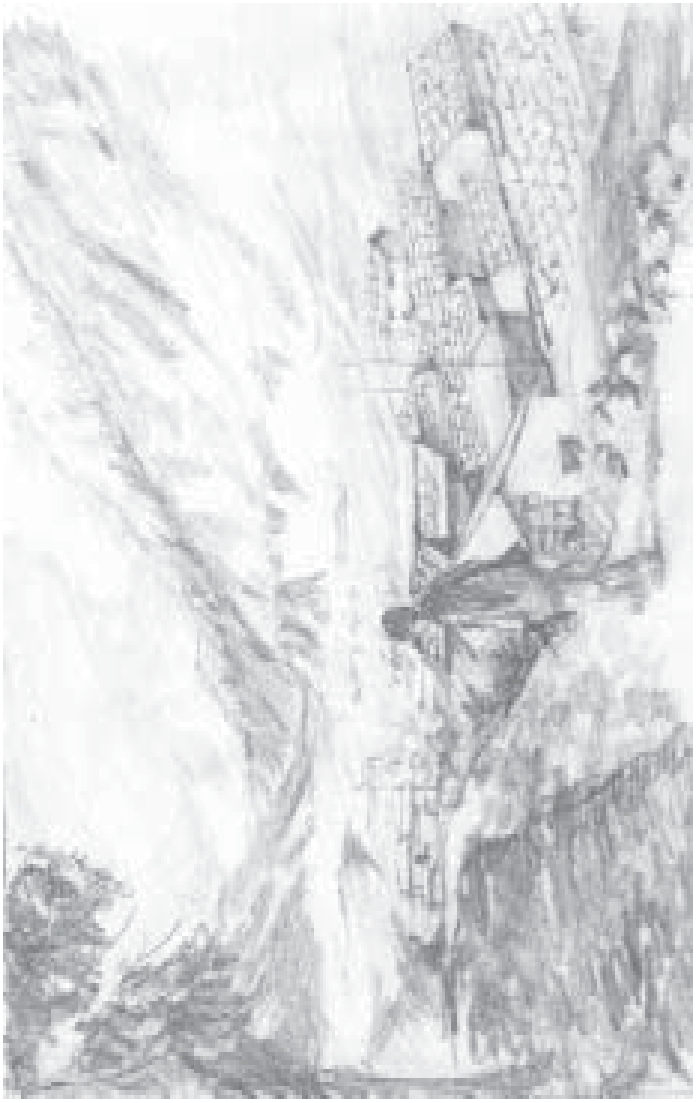

चित्र सं. 10

रंग भरने से पहले द श्य संयोजन को पैंसिल से बारीकी से बनाएं। और पैंसिल से अलग–अलग छाया का प्रयोग करें जिससे प्रकाश और छाया का आपको अच्छा ज्ञान होगा। इसके बाद द श्य संयोजन में रंगों का प्रयोग शुरू कर सकते हैं। रंग भरते समय

टिप्पणी

खास जगह को प्रकाश में और दूसरी जगहों को मध्यम और गहरे रंग के प्रयोग के द्वारा छाया में रखते हैं। इससे द श्य संयोजन में प्रकाश और छाया का प्रयोग छात्र को साफ नजर आएगा। रंगों का संतुलन भी होना जरूरी है। समन्वय और लय का होना एक अच्छे संयोजन को दर्शाता है। चित्र संख्या 11 देखें।

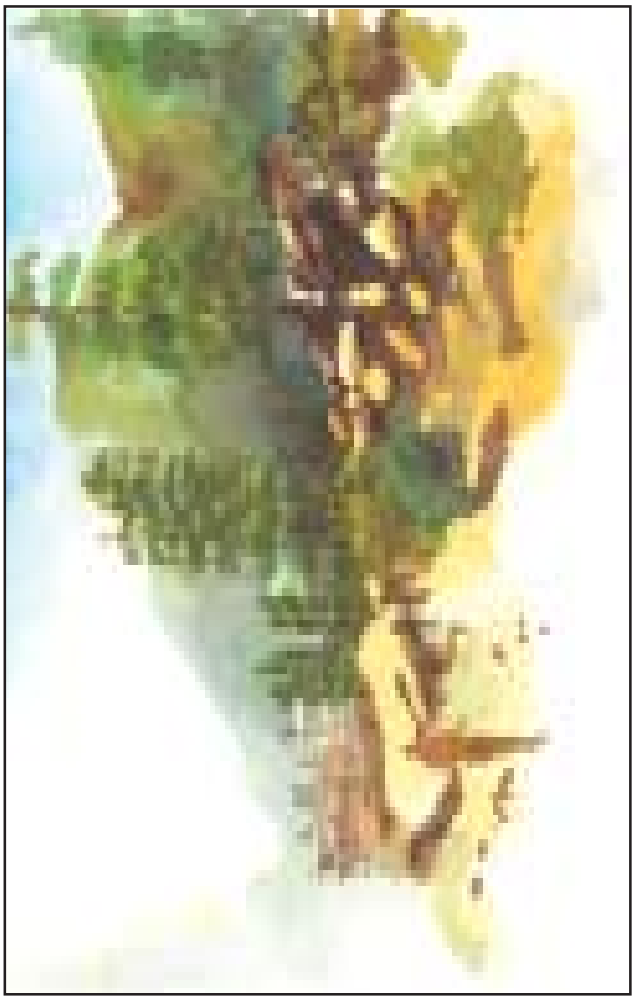

चित्र सं. 11

सजावटी आकार का संयोजन (Decorative Form of Composition)

आप प्राकृतिक वस्तुओं के आधार पर फूल, पत्ते, पेड़, लताओं, चिड़ियों, भौरों, तितलियों, गिलहरियों आदि का स्केच बनाइए। इन स्केचों को विभिन्न तरह से डिज़ाइन का रूप दीजिए तथा सजावटी आकार के द्वारा संयोजन कीजिए। इस प्रकार का संयोजन दूसरे संयोजनों से भिन्न होगा। एक अच्छे संयोजन में संतुलन, समन्वय, लय का होना जरूरी होता है। रंगों का प्रयोग भी संतुलित होना चाहिए। चित्र संख्या 12, 13, 14 एवं 15 देखें।

चित्र सं. 12

चित्र सं. 13

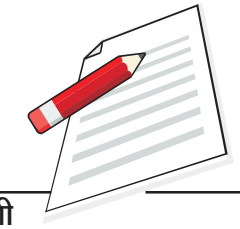

चित्र सं. 14

चित्र सं. 15

संयोजन के लिए आवश्यक सामग्री

चित्र संयोजन के लिए विद्यार्थियों के पास निम्नलिखित सामग्री का होना जरूरी है: ड्राइंग बोर्ड, मोटा गत्ता, सफेद ड्राइंग शीट, चार्ट पेपर, बोर्ड पिन, पैंसिल HB, 2B, 4B, 6B, रबड़, कटर, ब्रुश, कलर प्लेट, मग आदि।

संयोजन में रंगों का प्रयोग

संयोजन में पानी से प्रयोग होने वाले रंगों का प्रयोग हल्के से गहरे की ओर किया जाता है। एक दो लेयर हल्के रंग लगाने के बाद चित्र में हल्के, मध्यम, और गहरे रंग का प्रयोग पता चलने लगता है। इस प्रकार संयोजन में रंगों के सही प्रयोग से छाया को दिखाया जा सकता है। चित्र संख्या 16 देखें।

चित्र सं. 16

सारांश

चित्र में हर तत्वों को सही रूप में एकत्रित करने और उनके प्रयोग को संयोजन कहते हैं। वस्तु-चित्रण में यथार्थ रूप में वस्तु को देखकर सही ढंग से चित्रण करना आवश्यक होता है। वस्तुओं को इस प्रकार व्यवस्थित ढंग से एक सतह पर रखें, जिससे एक विषय-वस्तु का निर्माण हो सके।

कल्पना के आधार पर बनाए जाने वाले संयोजन में अपनी इच्छा के अनुसार संयोजन बनाए जाते हैं और रंगों का प्रयोग भी अपने मन के अनुसार करते हैं। द श्य चित्र संयोजन में प्रकृति की गोद में बैठकर हम जो कुछ देखते हैं, उसी तरह का संयोजन बनाते हैं। या कुछ द श्यों को हम संयोजन से हटा देते हैं और कुछ अपने अनुसार जोड़ भी देते

टिप्पणी

हैं। परंतु यह काम एक अनुभवी छात्र ही कर सकता है। द श्य-चित्रण में सही रंगों का प्रयोग होना चाहिए।

सजावटी संयोजन में हम प्रकृति से फूल, पत्ते, चिड़ियों, भौरों के स्केच के बाद हम अपनी मर्जी से पेपर पर ड़िजाइन बनाते हैं और अपनी कल्पना के आधार पर ही रंगों का प्रयोग करते हैं। संयोजन में रंगों के प्रयोग में संतुलन होना चाहिए तभी संयोजन का सही निर्माण होगा।

मॉडल प्रश्न

1. जग, कप, प्लेट, फूल–दान आदि का स्केच बनाइए और फिर उनका संयोजन कीजिए।
2. चौकोर, गोलाकार, त्रिकोणाकार काले और रंगीन कागज ज्यामितीय फॉर्म में संयोजन कीजिए।
3. कल्पना के आधार पर किसी विषय-वस्तु पर एक चित्र का संयोजन कीजिए।
4. प्रकृति के सौंदर्य को देखकर एक द श्य-चित्रण कीजिए।
5. फूल, पत्ते, गिलहरी, तितलियों को स्केच करके एक डिज़ाइन का रूप दीजिए।
6. नीचे दिए गए चित्र 17 में रंग भरें।

चित्र सं. 17

टिप्पणी

शब्दकोष

संतुलन	–	उचित परिमाण में किसी आकार को एक रूप देना।
लय	–	एक आकार का दूसरे आकार के साथ मिलना।
आकार	–	रूप (फॉर्म)
फोकल पाइंट	–	आकर्षक केंद्र–बिन्दु।
परिद ष्टि	–	द ष्टिसीमा।
समन्वय	–	जब फॉर्म्स आपस में एक दूसरे के साथ छन्दमय तथा संतुलित रूप में एक मनोरम आकार प्राप्त करता है।

टिप्पणी

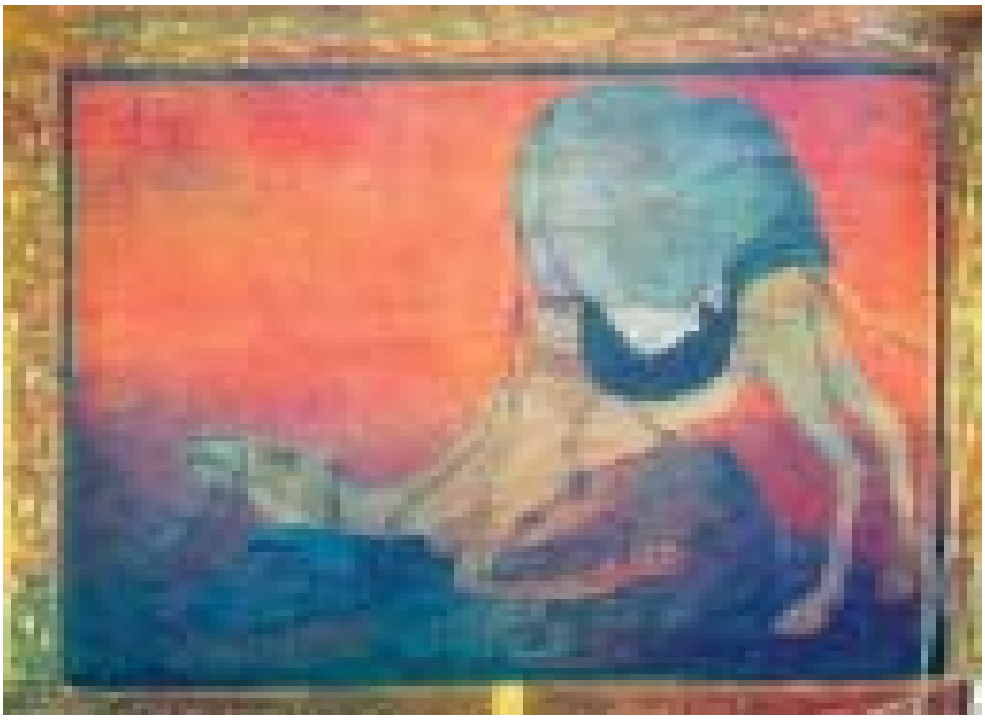

एंड ऑफ जरनी
चित्रकार–अवनीन्द्र नाथ टैगोर
(वाश पेंटिंग)

टिप्पणी

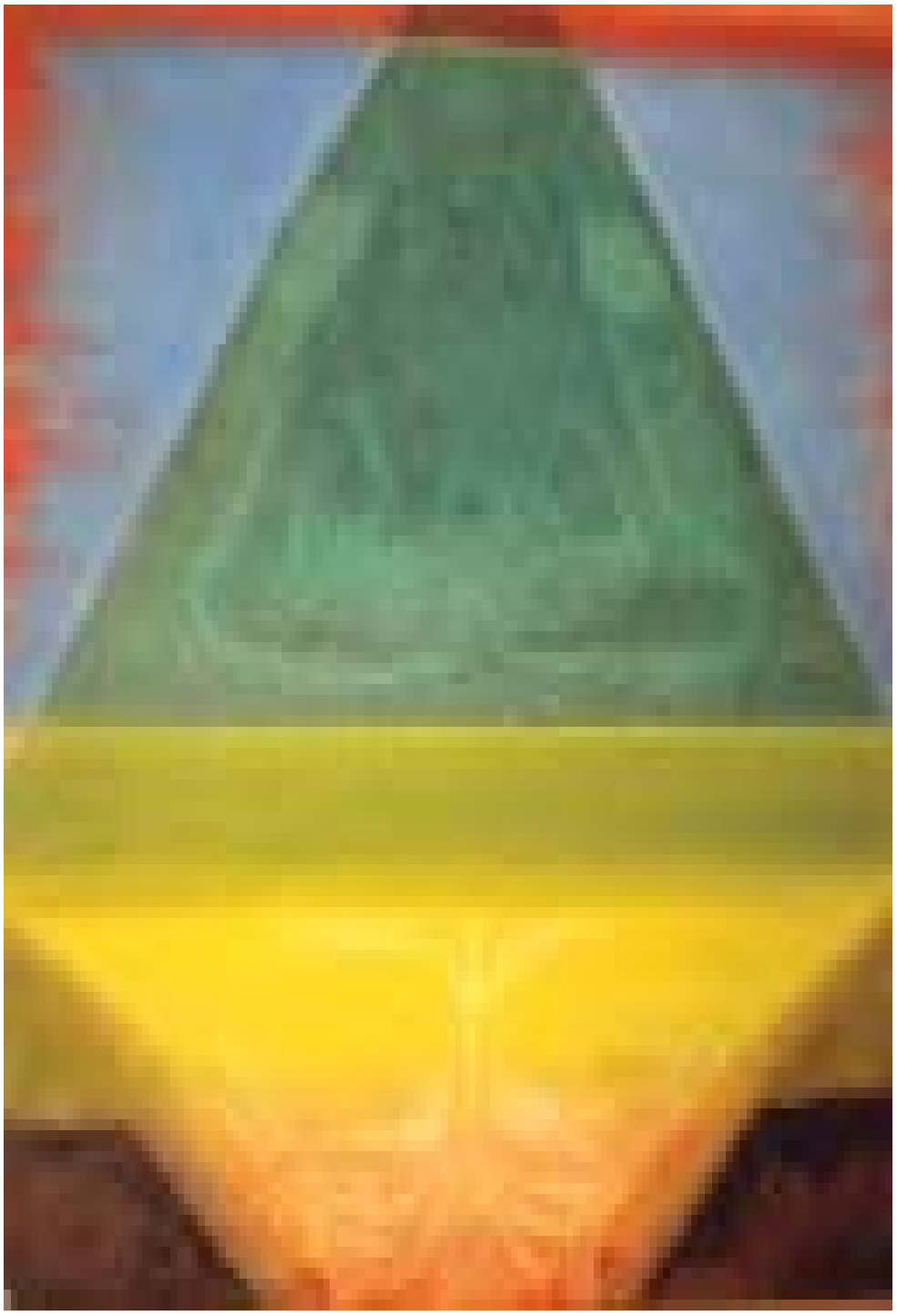

रावणानू ग्रहमूर्ति
(तेल रंग)